कल्याणीया

श्रीमती दीप्ति भट्टाचार्य

को

''''बहुत सोचा-विचारा कि क्या ले कर उपन्यास लिखूं, लेकिन किसी तरह कोई निश्चय न कर सका। फिर एक पुरानी डायरी ढूंढने लगा तो टेबिल के नीचे के ड्रायर में मुझे अपनी एक दीदी की ढेर सारी चिट्ठियां मिल गयी। उन चिट्ठियों के मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। इस लिए थोड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उन चिट्ठियों को पढ़ने लगा तो देखा कि उनको जरा ढंग से सजा कर छपवा देने से बढ़िया उपन्यास बन जायेगा।

मेरी इस दीदी का नाम है कविता चौधरी। न्यूयार्क में रहती हैं। यूनाइटेड नेशन्स मे नौकरी करती हैं। यूनाइटेड नेशन्स की स्पेशल कमेटी के काम से दीदी को विभिन्न देशों मे जाना पड़ता है। यूनाइटेड नेशन्स की कैफेटेरिया में इनसे मेरा पहली बार परिचय हुआ था। उसके बाद दोनों धीरे-धीरे एक-दूसरे के निकट आते गये। निकटता बहुत बढ़ गयी। आज दीदी मुझसे जितना प्यार करती हैं, उतना शायद किसी से नहीं करतीं। मुझ पर उनका जितना विश्वास है, उतना किसी पर नहीं है। मैं सिर्फ दीदी से प्यार नहीं करता, बल्कि उनका आदर भी करता हूं। सचमुच मेरी दीदी अतुलनीया हैं।

दीदी चाहे जहां रहें, मुझको जरूर चिट्ठी लिखेंगी। कभी-कभी वह चिट्ठी छोटी भी होती है। पिक्चर पोस्टकार्ड के पीछे ही सही, लेकिन दो-चार लाइनें जरूर लिखेंगी। लिखेंगी कि सिंगापुर के एयरपोर्ट में घंटे भर रुक कर कोलम्बो होते हुए काहिरा जा रही हूं। वहां पहुंच कर चिट्ठी लिखूंगी। दीदी कहती हैं, तुमको जब चिट्ठी लिखने लगती हूं, तब मुझे ऐसा लगता है कि तुम मेरे सामने बैठ कर अथवा मेरे पलंग पर लेट कर मेरी बात सुन रहे हो। इस कारण तुम्हें चिट्ठी लिखे बिना नहीं रह सकती।

कभी-कभी हम दोनों भाई-बहन बड़ा तमाशा करते हैं। दीदी अपनी व्यस्तता के कारण मुझे चिट्ठी नहीं लिख पातीं, तो कई दिनों की डायरी के पन्ने फाड़ कर भेज देती हैं। मैं भी तुरत अपनी डायरी के कुछ पन्ने फाड़ कर दीदी को भेज देता हूं।

कुछ भी हो, दीदी का जीवन बड़ा विचित्र है। इस संसार मे एक सामान्य मनुष्य जिन वस्तुओं की कामना करता है, वह सभी कुछ दीदी के पास है। दीदी के रूप-यौवन और विद्या-बुद्धि से कोई भी मनुष्य मुग्ध होगा। धन और प्रभाव की भी कमी नहीं है। इष्ट-मित्र भी कम नहीं हैं। इतना कुछ पा कर भी दीदी को बड़ा कष्ट है, बहुत दुख है। इस संसार के लोगों के विरुद्ध दीदी के मन में बहुत

शिकवा-शिकायत है। लेकिन दीदी को एकाएक देखने अथवा उनसे थोड़ी देर बात करने पर यह सब पता नहीं चलता। पता नहीं चलता कि मेरी दीदी एक शान्त ज्वालामुखी है।

अब इससे अधिक कुछ नहीं लिखना चाहता। दीदी के पत्रों और डायरी से फाड़े गये पन्नों को पढ़ने से सब कुछ पता चल जायेगा। दीदी के नाम-पता और अन्य पत्र-मित्रों के नाम-पते भी बदल दिये हैं। ऐसा न करता तो मेरे देश के अनेक प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति सचमुच बड़ी परेशानी में पड़ जाते।...

प्रियवरेषु भाई रिपोर्टर,

सोचा था, ये सब बातें कभी किसी से नही कहूँगी। किसी हालत में नहीं कहूँगी। कहना सम्भव भी नही है। ये सब बातें कहने लायक भी नहीं हैं। कही भी नही जा सकतीं। शायद कहना उचित भी नही है। कुछ भी हो, अब भी इस धरती पर मर्दों का ही राज्य है। हम औरतों को बहुत कुछ मिला है, हमने बहुत कुछ किया है, लेकिन राजा के आसन पर अब भी तुम मर्द लोग बैठे हुए हो। भारत, चीन, जापान, यूरोप, अमरीका, हर जगह यही बात है।

फिर मैंने कभी यह नही सोचा कि किसी पुरुष से प्यार करूँगी या उस पर विश्वास ही करूँगी। लेकिन मेरे जीवन में आ कर तुमने सब कुछ गड़बड़ा दिया। न जाने कितने पुरुषों से मेरी जान-पहचान है। कइयों से घनिष्ठता भी है। लेकिन अधिकांश पुरुष मेरे पास आते ही न जाने क्यों हिंसक पशुओं की तरह मेरी तरफ देखने लगते हैं। मैं कोई बच्ची नही हूँ। मैं उनकी लोलुप दृष्टि की भाषा समझ सकती हूँ। इसके अलावा वे सब के सब न जाने कैसी दुविधा और संकोच के साथ एकदम बच्चों की तरह घुटनों के बल चल कर मेरे पास आते हैं। लेकिन तुम? तुम ऐसी नाटकीयता के साथ अप्रत्याशित ढंग से आँधी की तरह मेरे सामने आ पहुँचे कि मैं किसी तरह तुम्हें दूर न हटा सकी। उस दिन की बात सोच कर मुझे आज भी हँसी आती है।

दीदी, मैं इस महाद्वीप में एक नवागत बंगाली पत्रकार हूँ।

मैंने आश्चर्य से तुम्हारी तरफ देखा तो तुमने पूछा, आप ही तो कविता चौधरी हैं?

हाँ।

फिर तुमने निस्संकोच एक प्याला कॉफी मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, बस! फिर तो मैंने गलती नही की। कॉफी लें।

लेकिन---

दीदी कह कर जब पुकारा है, तब फिर यह लेकिन क्यों? इसके अलावा आप बहुत खूबसूरत हो सकती हैं, लेकिन मेरे मन में कोई बुरा ख्याल नही है। आफ्टर ऑल मैं आपका छोटा भाई हूँ।

सो काइंड ऑव यू, बट—

फिर वही बट ? लीजिए, कॉफी पीजिए।

आप—

छोटे भाई को क्या कोई आप कहता है ? बहुत अधिक आदर देना चाहती हैं तो तुम कहिए। तू भी कहेंगी तो कोई एतराज नहीं है।

तुम्हारी बात सुन कर मैं हँसे बिना न रह सकी। हँसते हुए मैंने कॉफी का प्याला हाथ में लिया।

नहीं दीदी, नहीं, यह कोई हँसी की बात नहीं है। न्यूयार्क जैसे शहर में आप जैसी दीदी बहुत जरूरी है।

क्यों ?

अभी बताऊँ ?

अगर आपत्ति न हो तो—

जी हाँ, दीदी कह कर जब पुकारा है तब कुछ भी कहने में आपत्ति नहीं हो सकती।

तो बतायें।

फिर बतायें ?

मैं जरा मुस्करायी। कुछ भी हो, मेरी उम्र कोई अधिक नहीं है। फिर जेब में कई सौ डालर के ट्रैवेलर्स चेक पड़े हुए हैं। कहा नहीं जा सकता कि कब किसके दिमाग में कैसी दुर्बुद्धि आ जाय !

कॉफी पीते हुए पूछा, लेकिन मेरी भूमिका कैसी रहेगी, यह तो नहीं समझ सकी।

हे भगवान ! छोटा भाई अगर अधःपतन के रास्ते चला जाय तो दीदी की क्या भूमिका होगी, यह भी बताना पड़ेगा ?

कॉफी के प्याले की अन्तिम चुस्की लेते हुए तुमने कहा था, और भी एक विशेष कारण से मुझे आपकी जरूरत है।

वह कैसा विशेष कारण है ?

तुमने जेब से पर्स निकाल कर उसमें से एक खूबसूरत लड़की का फोटो निकाला और कहा, इस कालो-कलूटी लड़की से मैं कोई खास प्यार नहीं करता, लेकिन वह लड़की सचमुच अपने प्राणों से ज्यादा मुझसे प्यार करती है। उसका ख्याल है कि अमरीका की सभी खूबसूरत लड़कियाँ मुझसे प्यार करने लगेंगी।

इतना सीरियस हो कर तुमने ये बातें कहीं कि बहुत कोशिश करने पर भी मैं हँसी रोक न सकी।

नहीं दीदी, नहीं। हँसने की बात नहीं है। मुझको ले कर वह सचमुच बहुत परेशान है।

कैसी परेशानी?

कहीं मैं उसे भूल न जाऊँ! कहीं वह मुझे खो न दे!

तुम्हारी बातें सुन कर मुझे बड़ा मजा आया।

पूछा, क्या नाम है उसका?

दीदी, अभी सब कुछ बता दूँ?

ठीक है। बाद में सुनूँगी।

मैं तुमसे उम्र में बहुत बड़ी नहीं हूँ। शायद हम दोनों हमउम्र हैं। खैर। तुम मुझसे सचमुच छोटे भाई की तरह प्यार करते हो, मेरा आदर करते हो। मैं भी तुम्हें अपना छोटा भाई समझती हूँ और उसी तरह तुमसे प्यार करती हूँ। करने के लिए विवश हो गयी हूँ। शुरू-शुरू में जरूर थोड़ी सी दुविधा थी। ठीक से विश्वास नहीं कर पा रही थी। लेकिन मन पर से बादल छँटने में अधिक समय नहीं लगा। उस दिन कह न सकी थी, लेकिन आज स्वीकार कर रही हूँ कि पहले ही दिन तुम मुझे अच्छे लगे थे। तुम्हारी आँखों में किसी तरह की गंदगी नहीं थी। तुम्हारी बातचीत और तुम्हारे आचरण में किसी तरह के ओछेपन का आभास नहीं मिला था।

आज निस्संकोच स्वीकार कर रही हूँ कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ, स्नेह करती हूँ और तुमसे प्यार पा कर धन्य हो गयी हूँ। न्यूयार्क छोड़ कर जाते समय एयर-पोर्ट में तुमने मुझे प्रणाम किया और एक बच्चे की तरह आँसू बहाये। मैंने भी तुम्हारी ठुड्डी छू कर चूमा और तुम्हें छाती से लगा कर आँसू बहाये। मुझसे रहा नहीं गया था। मेरे मन में जो थोड़ी-बहुत दुविधा थी और जो दुराव था, वह तुम्हारे आँसुओं से धुल गया। आज मैं पूरे संसार के सामने गर्व से कह सकती हूँ कि तुम मेरे छोटे भाई हो और मैं तुम्हारी दीदी हूँ। जरूर तुम्हारी और भी बहुत सी दीदियाँ होंगी, लेकिन आज तुम्हीं मेरे एकमात्र छोटे भाई हो, मित्र हो, स्वजन हो। कभी मैं भी बहुतों की दीदी थी। इस संसार के और लोगों की तरह मेरे भी इष्ट-मित्र विभिन्न स्थानों पर फैले हुए हैं। लेकिन मैं धीरे-धीरे बहुत दूर हट आयी हूँ। मैंने स्वेच्छा से ऐसा नहीं किया, बल्कि मुझे करना पड़ा है।

यूनाइटेड नेशन्स की कैफेटेरिया में मुझसे परिचय होने के बाद जब तुम पहली बार मेरे एपार्टमेंट में आये थे, तब हमारी क्या बातचीत हुई थी, तुम्हें याद है?

इतने दिनों बाद शायद तुम्हें उस दिन की बातचीत याद नहीं है, लेकिन मुझे है। मैं कुछ भी नहीं भूली हूँ।

मेरा घरद्वार देखने के बाद तुमने कहा था, दीदी, आप मजे में हैं।

मजे में हूँ, मतलब ?

मतलब यही कि भगवान ने मानो दस हाथों से आपको सब कुछ दिया है।

हँसते हुए मैंने पूछा था, ऐसा क्या देख लिया कि यह कह रहे हो ?

भगवान ने आपको क्या नहीं दिया ? विद्या-बुद्धि, रूप-यौवन, धन, यश और प्रभाव, किस बात की कमी है ?

मैंने हँसते हुए ही पूछा था, और कुछ ?

नहीं दीदी, यह हँसने की बात नहीं है। इस संसार में मनुष्य जिस-जिस चीज की कामना करता है, वह सभी चीजें आपको मिली हैं।

फिर मैंने मानो अपने आपसे पूछा, भगवान ने मुझे सब कुछ दिया है, यही न ?

जी हाँ। एकदम दिया है।

मैंने तुम्हारी ठुड्डी पकड़ कर प्यार करते हुए कहा था, लेकिन भगवान ने इस भाई को तो पहले नहीं दिया था ?

भगवान तो वैसा डिपार्टमेंटल स्टोर खोले नहीं बैठे हैं, जैसा आपके अमरीका में मिल जाता है कि झउआ भर सब कुछ खरीद लेंगी ?

फिर मैंने बहस किये बिना सिर्फ कहा था, भाई ! भगवान की दुकान में कुछ दिये बिना वहाँ से कुछ पाना सम्भव नहीं है। मुझको सम्भवतः कुछ अधिक देना पड़ा है।

उस दिन तुमने और कुछ नहीं पूछा था। मैंने भी कुछ नहीं कहा था। शायद तुम मेरी बात का मतलब नहीं समझ सके थे। अगर समझ भी जाते तो उस दिन मैं तुमसे कुछ भी न कहती। उस दिन तुम मुझे जरूर अच्छे लगे थे, लेकिन मैं तुम पर पूरी तरह विश्वास न कर सकी थी। अब तुमसे सब कुछ कह सकती हूँ। कहूँगी भी। मैं जानती हूँ कि तुम कभी मेरा कोई नुकसान नहीं करोगे। मन ही मन मैं विश्वास करती हूँ कि तुम अपनी दीदी के दुख को समझ सकोगे।

आज यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि मैं मध्यवित्त परिवार की लड़की हूँ। न्यूयार्क तक पहुँचने में मुझे अनेक तंग-बंद गलियाँ और छोटी-बड़ी सड़कें तय करनी पड़ी हैं। तरह-तरह के लोग और तरह-तरह के देश देखने पड़े हैं। लेकिन यह विश्वास करो मेरे भाई, जीवन का यह थोड़ा सा रास्ता पार करने में ही

से कुछ दौलत छीने विना क्या उनके मन को शांति नहीं मिल रही थी ?

तुम दोनों मेरा हार्दिक स्नेहाशीर्वाद लेना।

२

तुम्हारी चिट्ठी मिली। तुम जो इतनी जल्दी मेरी चिट्ठी का जवाब दोगे, मैं सोच भी न सकी थी। लगता है, तुम मेरी चिट्ठी पढ़ कर बहुत ज्यादा चिन्तित हो गये थे, जिससे चिट्ठी मिलने के दूसरे ही दिन तुमने उसका जवाब दिया। तुम्हारी चिट्ठी पढ़ते हुए बार-बार यह महसूस किया है कि तुम मुझसे कितना प्यार करते हो। मैं और एक बार समझ सकी कि तुमसे प्यार करके मैंने गलती नहीं की है।

मैंने तुम्हारी चिट्ठी को अनेक बार पढ़ा है। पढ़ते-पढ़ते मानो उसको रट लिया है। उसके बाद बहुत सोचा है। दो-तीन दिन सिर्फ तुम्हारे बारे में सोचा है। तुमने जो सलाह दी है, मन ही मन उस पर सोचा-विचारा है। हो सकता है कि बीते दिनों के दुख की याद को मन में संजोये रखने से कोई लाभ नहीं है, लेकिन मेरे भाई, अतीत को तो एकदम मिटाया नहीं जा सकता। इसके अलावा अतीत पर ही तो हमारा वर्तमान बना है। फिर आज के इस वर्तमान की नींव पर ही भविष्य का महल बनेगा। इस लिए अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

हम अपने काम-काज और आचार-व्यवहार से प्रायः अतीत, वर्तमान और भविष्य के इस अविरल क्रम को स्वीकार नहीं करते। करना नहीं चाहते, या हो सकता है, कर नहीं सकते। लेकिन मन ? उसको तो धोखा नहीं दिया जा सकता। मैं तुमसे उसी मन के बारे में कहूँगी। आज अनेक वर्षों से मैं अपने मन से ही लुकाछिपी खेल रही हूँ। खेलते-खेलते बहुत दिन पहले ही थक चुकी थी, लेकिन कोई ऐसा विश्वसनीय आदमी नहीं मिला, जिसकी पकड़ में आती। लेकिन मैं तुम्हारी पकड़ में आऊँगी। आना ही पड़ेगा। आये बिना मानो मेरा दम घुटने लगा है। अगर मैं तुम्हारी पकड़ में नहीं आऊँगी, तो शायद जिन्दा भी नहीं रह पाऊँगी।

दूसरा कोई नहीं जानता, लेकिन आज मैं तुम्हारे पास स्वीकार कर रही हूँ कि मानसिक द्वन्द्व का असहनीय कष्ट सहन न कर पाने पर दो-दो बार आत्म-हत्या करने चली थी। लेकिन दोनों ही बार बड़े विचित्र ढंग से बच गयी। उस

बार लंदन से न्यूयार्क आते समय जहर ले कर प्लेन के टायलेट में घुसी थी। लेकिन जहर खाने से पहले न जाने क्या सोचने लगी थी। सोचते-सोचते टायलेट का दरवाजा सांक करना भूल गयी थी। थोड़ी देर बाद अचानक एक महिला यात्री दरवाजा खोल कर टायलेट में आयी तो मैं चौंक पड़ी। फिर किसी तरह अपने को संभाल कर जल्दी-जल्दी बाहर निकल आयी थी।

इस संसार में अकेले रहने में बड़ा आनन्द मिलता है, बड़ी सुविधा रहती है, लेकिन दुख भी कम नहीं भोगना पड़ता। अकेला आदमी किसी भी चीज का आनन्द पूरी तरह नही उठा सकता। यह तो सही है। फिर अकेले दुख भोगने की क्षमता भी सबकी सीमित रहती है। किसी आदर्श या किसी प्रिय जन के लिए बहुत दुख उठाया जा सकता है, लेकिन अपने लिए कोई उसका सौवां हिस्सा भी बरदाश्त नही कर सकता। इस संसार में जिन्दा रहना भी कम मुसीबत का काम नहीं है। इसी लिए तो कभी-कभी मेरे मन में आता है कि अकेले के लिए क्यों इतना झमेला उठाऊं? इस संसार से जिसके सदा के लिए विदा होने पर भी कोई आँसू नही बहायेगा, उसके जिन्दा रहने से क्या लाभ है?

हजार तरह की यही सब ऊलजलूल बातें सोचते हुए फिर एक दिन निश्चय किया कि नही, अब ज्यादा दिन नहीं रहना है। इस संसार से विदा हो जाना ही अच्छा है।

अच्छी हो या बुरी, किसी बात में उत्साह देने या बाधा डालने के लिए मेरा कोई घनिष्ठ जन नही है। इस लिए मन ही मन निश्चय करने के बाद किसी तरह की देर नही की। लेकिन उस बार भी मैं विफल रही। एकदम ऐन मौके पर वाशिंगटन से सुदीप्त और महुआ तुतुल को साथ लिये आ पहुँचे। क्या वाशिंगटन में उन लोगों से तुम्हारा परिचय हुआ है? शायद अभी तक नहीं हुआ है। लगता है कि उन लोगों से परिचय होता तो तुम मुझे जरूर लिखते।

मैं जिस वर्ष न्यूयार्क आयी, उसके दो वर्ष पहले सुदीप्त इस देश में आया। लेकिन पाँच वर्ष पहले एक मित्र के यहाँ दावत पर उससे मेरा परिचय हुआ।

कमरे में जाते ही देखा कि सुदीप्त बड़ा उत्तेजित हो कर मेरी सहेली माया से कह रहा है, देखो छोटी दीदी, इस संसार में स्नेह और प्रेम के जितने भी रिश्ते हैं, उनके साथ कहीं न कहीं स्वार्थ जुड़ा हुआ है। स्वार्थहीन स्नेह या प्रेम इस संसार में दुर्लभ है।

माया ने सुदीप्त को डाँटते हुए कहा, देख खोकन, तू दिन-दिन बड़ा सिनिक होता जा रहा है। स्नेह-प्रेम आदि न हों तो संसार कैसे चल रहा है ?

सुदीप्त ने हँस कर कहा, क्यों नहीं चलेगा ? परस्पर के स्वार्थों से हम इस तरह बँध गये हैं कि चलती गाड़ी की तरह समाज धड़ाधड़ चलता चला जा रहा है।

माया के पति डॉ० सरकार ने तब हँसते हुए अपनी पत्नी से कहा, अब तुम लोग चुप भी होगे या मैं अपनी बांधवी को ले कर दो-एक घंटे के लिए बैटरी पार्क से घूम आऊँ ?

इस पर मैंने हँसते हुए कहा, आप जैसे स्त्रैण पुरुष के साथ बैटरी पार्क क्या, मैं तो हवाई आईलैंड जाने में भी इंटरेस्टेड नहीं हूँ।

माया ने जरा गम्भीर हो कर मेरी तरफ देखा और कहा, ठीक कहा है ! शादी के पहले अगर पता होता तो मैं स्वयं इस शादी का विरोध करती।

डॉ० सरकार स्वल्पभाषी और अपने में ही केन्द्रित रहने वाले व्यक्ति हैं। आफिस से घर लौटने के बाद कोई किताब लेकर पूरी शाम बिता देते हैं। लेकिन वह बड़े रसिक भी हैं। बोले, देखिए मिस चौधरी, आर्टिफिसियल ज्वेलरी इस्तेमाल करते-करते अब लोगों को असली सोने के गहने अच्छे नहीं लगते।

हम कुछ कहतीं, लेकिन उसके पहले ही सुदीप्त बोला, आपने सही कहा है कमल दा !

माया कृष्णनगर की लड़की है। सुदीप्त का भी घर वहीं है। सुदीप्त की छोटी दीदी और माया एक साथ स्कूल में पढ़ती थीं। उसी सूत्र से इस घर में सुदीप्त का आना-जाना शुरू हुआ था।

प्रथम दिन से ही सुदीप्त मुझे बड़ा अच्छा लगता है। आस-पास जैसे लोगों को देखती हूँ, सुदीप्त उनसे थोड़ा अलग है। एकाएक उसकी बातचीत सुनने से लगेगा कि वह मानो इस संसार से लड़ने के लिए ही इस संसार में पैदा हुआ है। संसार के सभी लोगों के विरुद्ध उसकी शिकायत है। माँ-बाप और भाई-बहन किसी से वह प्यार नहीं करता, लेकिन उनके प्रति अपना कर्त्तव्य निभाने में कोई कमी नहीं होने देता। हर महीने फार्स्ट नेशनल सिटी बैंक के मार्फत अपने घर में रुपया भेजता है।

इस संसार के विरुद्ध सुदीप्त की शिकायत के कारण हैं। रेलवे के स्टेशन मास्टर के घर वह पैदा हुआ है। शैशव और कैशोर में उसे गरीबी से परिचित होने का कोई अवसर नहीं मिला, लेकिन यौवन के सिंहद्वार में प्रवेश करते न करते उसके पिता का रिटायरमेंट हो गया। देखते-देखते सुख की घड़ियाँ बीत

गयीं और दुख का समय शुरू हुआ। यह दुख था दरिद्रता का। चारों तरफ से यह दरिद्रता मानो हाहाकार कर उठी। सुदीप्त समझ गया कि पिता की काली कमाई से ही उसके बचपन के दिन उतने सुखमय थे। फिर तो उसके जीवन का स्वाद ही मानो बदल गया और इस संसार के प्रति उसका मन घृणा से भर उठा।

मेरे एपार्टमेंट में एक-दो बार आने के बाद एक दिन सुदीप्त ने बातों ही बातों में कहा, देखिए कविता दी, मैंने अपने हृदय से एक परम सत्य का अनुभव किया है।

वह परम सत्य क्या है ?

इस संसार में रुपया खर्च करने पर सबका प्यार मिल जाता है और पैसा न करने पर माँ-बाप का प्यार भी नहीं मिलता।

फिर मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। मुस्करा दिया।

नहीं कविता दी, हँसने की बात नहीं है। अपने माँ-बाप और भाई-बहनों में यह बात देखी है, इसलिए कह रहा हूँ। नजदीक के और दूर के रिश्तेदारों में तो यह बात है ही।

मैं कुछ बोली नहीं, सिर्फ सुनती रही।

सुदीप्त ने जरा उत्तेजित हो कर कहा, बाप की काली कमाई का पैसा खर्च करने में तो माँ को बड़ा मजा आता था, लेकिन जब दुख की घड़ियाँ आयी तब माँ का आचरण देख कर मुझे आश्चर्य होता था। मेरे बड़े भाई और दो दीदियों की बात सुनेंगी तो आपको बड़ा आश्चर्य होगा।

यह सुदीप्त बड़ा विचित्र लड़का है। माँ-बाप और भाई-बहनों से नाराज हो कर वह इस देश में आया था। यहीं चार साल बाद उसने कोलम्बिया से डाक्टरेट किया। फिर दो साल कनाडा में नौकरी करने के बाद एक दिन वह अचानक माया के पास पहुँचा और बोला, छोटी दीदी, अब यहाँ अकेला नहीं रह पा रहा हूँ। आप मेरी शादी करा दीजिए।

माया ने पूछा, शादी करा दीजिए, मतलब ? क्या कोई लड़की पसंद की है ?

अगर लड़की पसंद कर लेता तो तुम्हारे पास क्यों आता ?

माया ने उससे वादा किया, अगले जून में भारत लौट कर तेरी शादी का इंतजाम करूँगी।

सुदीप्त महुआ को लेकर पहले पहल मेरे पास ठहरा था, क्योंकि उस समय माया नहीं थी। सुदीप्त और महुआ दोनों मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मौका मिलते ही वाशिंगटन से चले आते हैं। मुझको भी जाना पड़ता है। पहले ज्यादा नहीं जाती थी, लेकिन तुतुल पैदा हुआ तो मौका मिलते ही जाने लगी। उसे अधिक दिन बिना देखे रह नहीं पाती। तुम तो जानते हो कि यहाँ बहुत कुछ मिलता है, लेकिन एक छोटे से सुखी परिवार की शान्ति यहाँ सपने की तरह है। उनके तीन प्राणियों के उस छोटे से परिवार में जाने पर मैं मानो सारा दुख-दर्द भूल जाती हूँ।

उस दिन मैं जरूर कुछ अस्वाभाविक थी। महुआ ने शक किया था कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है। लेकिन सुदीप्त ने मेरे मन की अस्वाभाविक स्थिति को भांप लिया था। महुआ को कुछ समझने का मौका न दे कर सुदीप्त ने मुझसे कहा था, कविता दी, महुआ और तुतुल हफ्ते भर तुम्हारे पास रहेंगे।

वे मेरे पास रहेंगे तो तुझे दिक्कत नहीं होगी ?

मुझे क्या दिक्कत होगी ? आफिस से लौटने के बाद एक-दो दोस्तों के साथ एक-दो राउंड ड्रिंक करते न करते शाम बीत जायेगी।

सुदीप्त की बात सुन कर महुआ और तुतुल खुशी के मारे मुझसे लिपट गये।

उसके बाद तुतुल ने दोनों हाथों से मेरा चेहरा पकड़ कर कहा, आज आप इस तरह चुपचाप क्यों हैं बुआ ? आप मुझसे नाराज हैं ?

मैंने तुतुल को अपनी छाती में भींच कर कहा, भला, मैं कैसे तुमसे नाराज हो सकती हूँ ?

नाराज न होने पर क्या कोई इस तरह चुपचाप रहता है ?

मैंने तुतुल के चेहरे पर अपना चेहरा रख कर कहा, नहीं बेटा, अब मैं चुप-चाप नहीं रहूँगी।

जानते हो मेरे भाई, फिर क्या हुआ ? उसी दिन उसी वक्त मैंने तय कर लिया कि अब आत्महत्या कर इस संसार से नहीं भागूंगी। किसी और के लिए न सही, लेकिन इस छोटे से अबोध बच्चे के प्यार के लिये मुझे जिन्दा रहना पड़ेगा।

अब तो वह सब बातें बहुत दूर हो गयी हैं। अब मेरी जिन्दगी की अच्छाई और बुराई के साथ तुम इस तरह जुड़ गये हो कि तुम्हें दुखी करके मुझे मरने के बाद भी शान्ति नहीं मिलेगी। इसके अलावा तुम भी तो अकेले नहीं हो। तुम्हारे जीवन के सुख-दुख के साथ और एक लड़की के स्वप्न और साधना जुड़े हुए हैं।

उसके उन स्वप्नों को तोड़ने का अधिकार मुझे नहीं है। मुझमें उतना साहस भी नहीं है।

मेरे मन में अनेक कटुताओं, दुखों और व्यथाओं का इतिहास छिपा हुआ है। अनेक विफलताओं का दर्द भी वहीं छिपा हुआ है। फिर भी नये सिरे से यह संसार मुझे अच्छा लग रहा है। समझ रही हूँ कि इस संसार के सभी लोगों का मन अभी तक विषैला नहीं हुआ है। औदार्य और प्रेम की अमृतधारा क्षीण होने पर भी पूरी तरह लुप्त नहीं हो सकी है।

भाई रिपोर्टर, जिस संसार से विदा होने के लिये कभी मैं पागल हो उठी थी, आज तुम्हारे कारण वही मुझे फिर से अच्छा लगने लगा है। मैं जिन्दा रहना चाहती हूँ। प्यार पाना और देना चाहती हूँ। इसी लिए पुराने दिनों का सारा इतिहास तुम्हें सुना कर मैं पश्चात्ताप से मुक्त होना चाहती हूँ। कभी इस संसार की रक्षा के लिए समुद्र-मंथन से निकले समस्त हलाहल को अपने कंठ में धारण कर महादेव नीलकंठ हुए थे और आज क्या तुम अपनी दीदी के लिये इतना सा बोझ नहीं ढो सकोगे?

तुम्हारे सुख और तुम्हारी सफलता के लिए जिस साँवली लड़की ने अपने जीवन का सब कुछ दाँव पर लगाया है, उसका एक फोटो मुझे भेजोगे।

तुम दोनों को मेरा हार्दिक प्यार!

३

अपनी बात कहने के पहले अपने परिवार के बारे में तुमको कुछ बता देना जरूरी है।

हमारा आदि निवास हुगली में है। चन्दननगर के एकदम पास वह जगह है। तुमको तो पता होगा कि १७५७ में लार्ड क्लाइव और वाटसन ने चन्दननगर से फ्रेंचों के किले पर आक्रमण किया था। उस समय हमारे एक पूर्वज फ्रान्सीसी सेनापति की देखभाल कर फ्रान्सीसियों के बड़े विश्वासपात्र बने थे। सम्भवतः है, बाद में उन्होंने फ्रान्सीसियों के अधीन कोई नौकरी या व्यवसाय किया था। इस संबंध में हमें इससे अधिक जानकारी नहीं है।

इस युद्ध के लगभग साठ वर्ष बाद अंग्रेजों ने चन्दननगर पर फ्रान्सीसियों का पूरा अधिकार स्वीकार कर लिया था और उन्हीं के साथ हमारे पूर्वजों का भाग्योदय शुरू हुआ था। सुना है कि ईश्वरीप्रसाद चौधरी [illegible]

उस समय उस क्षेत्र के बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति भी थे। उन दिनों आज की तरह स्कूल-कालेज नहीं थे, फिर भी वह बड़े शिक्षित थे। वह कहाँ तक अंग्रेजी जानते थे, यह तो नहीं बता पाऊँगी। लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि वह फ्रान्सीसी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने फ्रान्सीसी भाषा में कई पुस्तकों की रचना भी की थी। उनमें गंगा नदी की पौराणिक कथा पर लिखी गयी पुस्तक पैरिस से प्रकाशित हुई थी और विद्वानों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी।

बचपन में मैंने अपने दादा से उनके बारे में अनेक कहानियाँ सुनी थीं। दादा जी कहते थे, विश्वास करो दीदी, मेरे दादा जी के समान सुपुरुष और सुपंडित बहुत कम होते हैं। दादा जी जब पैरिस गये थे, तब एक प्रसिद्ध चित्रकार ने उनका फुल साइज आयल पेंटिंग बना दिया था। उस आयल पेंटिंग के सामने खड़े होकर हम मुग्ध हो जाते थे।

मेरे दादा जी जब अपने दादा जी के बारे में कहना शुरू करते थे, तब मानो रुकना नहीं चाहते थे। वह एक के बाद एक कहानी सुनाते जाते थे। फिर अचानक वह चुप हो जाते थे। साथ ही साथ उनका खिला हुआ चेहरा एकदम मुरझा जाता था। उसके बाद लम्बी साँस छोड़कर कहते थे, मेरे पिताजी ने वैसे महापुरुष की सन्तान होकर भी न जाने क्यों वैसा छिछोरापन किया था!

मैं उन दिनों स्कूल में भरती ही हुआ था। उम्र अधिक नहीं थी। इसलिए मैं दादा जी के दुखी रहने का सही कारण समझ नहीं पाता था। लेकिन इतना तो समझ जाता था कि मेरे दादा जी के बाप ने कुछ ऐसा काम किया था, जिससे उनको लम्बी साँस भरनी पड़ती थी।

धीरे-धीरे मैं बड़ा हुआ। सब कुछ समझने लगा।

मात्र पैंतालिस वर्ष की उम्र में ईश्वरीप्रसाद का स्वर्गवास हुआ था। उनकी मौत अचानक आयी थी।

ईश्वरीप्रसाद के एकमात्र पुत्र गंगाप्रसाद चौधरी उस समय सिर्फ इक्कीस वर्ष के थे। साल भर पहले गंगाप्रसाद का विवाह हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद जमीन-जायदाद और रुपये-पैसे का हिसाब समझने में ही उनके साल-दो साल लग गये। तब तक मेरे दादा जी पैदा हुए थे।

प्रचुर धन-सम्पत्ति के एकमात्र उत्तराधिकारी होने के बाद गंगाप्रसाद में परिवर्तन शुरू हुआ। पहले यह परिवर्तन चोरी-छिपे आया और बाद में खुल कर। अन्त तक एक दिन वह एक फ्रांसीसी सुन्दरी को साथ लिये घर आये और अपनी विवाहिता पत्नी के सामने उसे चूम कर बड़े गर्व से कहा, माइ बिलवेड न्यू वाइफ! उस घटना के बाद उसी दिन उसी समय गंगाप्रसाद की पत्नी बेटे का हाथ पकड़

कर उस महल से निकल आयी। उस समय मेरे दादा मात्र बारह-तेरह वर्ष के थे।

कई वर्ष यहाँ-वहाँ रहने के बाद दादा स्टीमर कम्पनी में बुकिंग क्लर्क की नौकरी ले कर पहले चाँदपुर और बाद में ग्वालंद आये।

हुगली जिले के होते हुए भी हम ढाका के निवासी हो गये।

और गंगाप्रसाद ? वह हुगली और चंदननगर की सारी सम्पत्ति बेच कर उस फ्रांसीसी सुन्दरी को साथ लिये पेरिस चले गये और दस वर्ष बाद वहीं उनकी मृत्यु हो गयी।

ढाका में ही मेरा जन्म हुआ। होश संभालने के बाद मैंने दादा को स्टीमर कम्पनी में नौकरी करते नहीं देखा। सुना है कि जिस दिन मेरा जन्म हुआ, उसी दिन दादा ने एक 'लांच' खरीदी और उस 'लांच' का नाम रखा 'दीदी'।

बचपन के उन कई वर्षों की याद को मैं कभी भूल नहीं सकती। माँ-बाप या दादी से अधिक प्रिय मेरे लिए दादा ही थे। उन्हीं से मेरी सबसे ज्यादा दोस्ती थी। खाना-पीना और उठना-बैठना सब कुछ दादा के साथ था। यहाँ तक कि मैं दादा के पास सोती थी। बहुत पहले की बात है। फिर भी मुझे अच्छी तरह याद है कि रोज शाम को मैं सदर घाट पर जाती थी। यात्रियों से लदी हमारी 'लांच' को दूर से देखते ही दादा कहते थे, देखो दीदी, तुम्हारी 'लांच' आ रही है।

दादा की बात सुन कर मैं खुशी के मारे नाचने लगती थी।

थोड़ी ही देर मे 'लांच' सदर घाट पर आती थी। यात्रियों के उतर जाने के बाद दादा मुझे साथ ले कर ज्योंही 'लांच' पर जाते थे, गयासुद्दीन चाचा मुझे कंधे पर उठा लेते थे। मुझे अब भी अच्छी तरह याद है कि चाचा मेरे लिये रोज कुछ न कुछ जरूर लाते थे। किसी दिन मिठाई, किसी दिन फल तो किसी दिन सार्जेस। उस समय मैं नहीं समझती थी कि चाचा मुझसे क्यों इतना प्यार करते हैं। लेकिन बाद में समझ गयी थी।

उन दिनों मैं कुछ बड़ी हो गयी थी। क्लास फाइव या सिक्स मे पढ़ती थी। किसी दिन किसी कारण से दादा के साथ सदर घाट नहीं जा पाती थी तो गया-सुद्दीन चाचा हमारे घर आकर मुझसे दस-बीस मिनट बात करते थे।

चाचा कहते थे, दीदी, तुम्हारी 'लांच' चला कर पेट पालता हूँ। इसीलिए किनारे आ कर तुम्हरा मुखड़ा देखे बिना घर नहीं लौट पाता।

मैं हँसती थी ।

लेकिन गयासुद्दीन चाचा नहीं हँसते थे। वह गम्भीर हो कर कहते थे, नहीं दीदी । यह हँसने की बात नहीं है । तुम्हें देखने पर मेरी जली हुई छाती जुड़ा जाती है दीदी ।

मैं कुछ पूछती न थी, लेकिन खूब समझती थी कि गयासुद्दीन चाचा के मन में बहुत दुख है। इसके अलावा मैं यह समझती थी कि चाचा सचमुच मुझसे प्यार करते हैं ।

तुम कलकत्ते में पैदा हुए हो । कभी पूर्वी बंगाल नहीं गये । वर्षाकाल में पूर्वी बंगाल का रूप न देखने पर विश्वास करना कठिन है । लेकिन गयासुद्दीन चाचा बारिश के दिनों में भी मुझे देखने आते थे ।

कभी-कभी मैं कहती थी, चाचा, इस बारिश में भी कोई आता है ?

गयासुद्दीन चाचा खूब हँस कर कहते थे, अब अगहन के पहले तो बारिश नहीं थमेगी । फिर ये कई महीने तुम्हें नहीं देख पाऊँगा ?

दादा ने मुझसे कहा था, कालरा हो जाने से गयासुद्दीन चाचा की इकलौती बेटी मर गयी थी । फिर दूसरे साल उसी के जन्मदिन पर तुम पैदा हुई थी ।

उन्हीं दिनों मेरे स्कूल में कविता-पाठ की प्रतियोगिता हुई थी और पुरस्कार में मुझे एक पुस्तक मिली थी । मेरे दादा से यह खबर सुनकर गयासुद्दीन चाचा बहुत खुश हुए थे । फिर जब भी चाचा को थोड़ा वक्त मिलता था, वह मुझसे कहते थे, दीदी, एक बार वह कविता 'कजला दीदी' सुनाओ न, जिसके लिए तुमको पदक मिला है ।

गयासुद्दीन चाचा मेरे कविता-पाठ की इतनी प्रशंसा करते थे कि मैं बहुत खुश हो जाती थी और जब भी मुझे मौका मिलता था, मैं उनको 'कजला दीदी' कविता पढ़कर सुनाती थी । वही एक कविता पचासों बार सुनते-सुनते मेरे घर के लोग ऊब जाते थे, मेरी माँ और दीदी हँसने लगती थीं, लेकिन गयासुद्दीन चाचा की बात याद कर मैं किसी के ऊबने या हँसने की भी परवाह नहीं करती थी ।

उसके बाद एक दिन मैं सदर घाट पर घंटों खड़ी रही, लेकिन हमारी 'लांच' नहीं आयी । धीरे-धीरे रात हो गयी । हलका अंधेरा गहरा होता गया, लेकिन गयासुद्दीन चाचा 'लांच' ले कर नहीं लौटे । फिर काफी रात को सर्वनाश की खबर आयी । फिर मुझे किसी को 'कजला दीदी' कविता सुनाने का मौका नहीं मिला ।

उसके बाद दादा महीने भर बिस्तर पर पड़े-पड़े जिन्दा रहे । फिर वह भी एक दिन चले गये । साल भर बीतते न बीतने दादी भी दादा के पास चली गयीं ।

मेरी छोटी सी दुनिया अचानक अंधेरे में डूब गयी।

मेरे दादा स्वयं काफी पढ़-लिख नहीं सके थे, इस लिए उन्होंने मेरे पिताजी को एम० ए०, बी० एल० तक पढ़ाया था। पिता जी ढाका कोर्ट में वकालत करने लगे थे। लेकिन उसकी वकालत कोई खास नहीं चलती थी। इस लिए मेरे दादा-दादी के मरने के बाद पिता जी कलकत्ते चले आये। कलकत्ते आने के बाद मुझे पता चला कि मेरी माँ को कैंसर हो गया है और उन्हीं की चिकित्सा की सुविधा के लिए पिता जी ढाका से कलकत्ते चले आए थे।

कलकत्ते आने के बाद मेरी माँ लगभग दो साल ठीक थीं। खुद ही घर का काम-काज करती थीं। मैं स्कूल से लौटती थी तो मुझसे घंटे भर इधर-उधर की बातें करती थीं। उसके बाद पिता जी कचहरी से लौटते थे और माँ के पास आ कर माँ को देखने लगते थे। पिता जी को उस तरह देखते देख कर माँ कहती थीं, क्यों इस तरह देख रहे हैं ? अभी कोई ऐसी बात नहीं हुई है और मैं अच्छी हूँ।

पिता जी अपनी सारी उत्कंठा को छिपा कर हंसते हुए कहते थे, क्यों नहीं अच्छी रहोगी ? जरूर अच्छी रहोगी।

मेरे पिता जी बड़े सज्जन और शान्तिप्रिय थे। वह अपने काम-काज और पढ़ने-लिखने में ही डूबे रहते थे। इसी लिए दादा ने उनको व्यापार में न घसीट कर स्वतंत्र व्यवसाय में जाने दिया। लेकिन वैसे सीधे-सादे और चुपचाप रहने वाले आदमी के लिए वकालत जैसे पेशे में जमना भी आसान नहीं था। मैंने कभी पिता जी को ताश-शतरंज खेलने या किसी के साथ गप-शप करते नहीं देखा था। जितनी देर वह कचहरी में रहते थे, उसके बाद सारा समय अपने कमरे में बैठ कर पढ़ते-लिखते थे। जब तक दादा थे, मैं पिता जी के पास नहीं जाती थी। लेकिन कलकत्ते आने के बाद हमारा सब कुछ बदल गया। पिताजी का काम-काज बढ़ गया था, लेकिन वह मेरे नजदीक आ गये थे।

गयासुद्दीन चाचा और दादा को खोने के बाद मुझे अपने आसपास मरुस्थल का सा सूनापन महसूस होने लगा था। सोचा था कि क्या उस थोड़े समय के सुख की याद को ले कर मुझे शेष जीवन बिता देना पड़ेगा, लेकिन नहीं। कलकत्ते आने के बाद बीमार माँ और हमेशा कामकाज में डूबे रहने वाले पिता जी ने स्नेह और प्यार से मुझे भर दिया। मेरा संसार फिर हरा-भरा और सुन्दर हो गया।

हार्दिक प्यार लेना।

४

कलकत्ते आने के छः महीने बाद की बात है।

उस दिन पिता जी की कचहरी बंद रहने पर भी मेरा स्कूल खुला था। स्कूल से घर लौटने के बाद देखा कि पिता जी एक सज्जन से बात कर रहे हैं। मैंने माँ से पूछा, माँ, पिता जी किससे उतनी बात कर रहे हैं?

माँ ने हँस कर कहा, उनके मित्र हैं।

पिता जी के मित्र! मैंने बड़े आश्चर्य से कहा।

हाँ। वे दोनों एक साथ यूनिवर्सिटी में लॉ पढ़ते थे।

इसके पहले क्या वह कभी हमारे यहाँ आये हैं?

नहीं। आज डॉ० राय के यहाँ अचानक दोनों मित्रों की मुलाकात हो गयी।

पिता जी के मित्र का क्या नाम है?

हेमन्त मजूमदार।

क्या वह भी प्रैक्टिस करते हैं?

नहीं। वह एक अंग्रेज कम्पनी में अच्छी नौकरी करते हैं।

क्या आप पहले से उनको जानती हैं?

मेरी शादी के बाद एक बार स्यालदा स्टेशन पर मुलाकात हुई थी।

मैं स्कूल के कपड़े बदल कर खाना खाने बैठी तो माँ ने कहा, तेरे पिता जी से सुना है कि हेमन्त बाबू बड़े हँसोड़ आदमी हैं। यूनिवर्सिटी में पढ़ते समय क्लास भर के लड़कों को हँसाते रहते थे। आज देख कर लगा कि वह उसी तरह हैं।

वह कहाँ रहते हैं? मैंने पूछा।

शायद एलगिन रोड के पास कहीं।

फिर माँ अपनी धुन में ही मानो कहती गयीं, शादी नहीं की और मजे में जिन्दगी बिता दी।

खाना खाने के बाद मैं अपने कमरे में गयी नहीं कि पिता जी ने मुझे बुला भेजा।

मैं पिता जी के पास गयी।

पिता जी ने कहा, आओ। अपने मित्र से तुम्हारा परिचय करा दूं। इनका नाम···

हेमन्त बाबू ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने पास खींच लिया और कहा, तुम्हारा यह बैचेलर चाचा तुम्हारा भी मित्र है।

मैंने जरा झुक कर उनको प्रणाम करना चाहा तो उन्होंने झटपट दोनों हाथों से मुझे रोक कर कहा, बस-बस। अब यह सब फॉर्मालिटी करने की जरूरत नहीं है।

उस दिन थोड़ी देर गपशप करने के बाद हेमन्त बाबू चले गये। लेकिन उसके बाद से वह बीच-बीच में हमारे यहाँ आने लगे। कभी-कभी वह मुझे ले कर इधर-उधर घूमने भी चले जाते थे। सचमुच हेमन्त चाचा मुझे बहुत अच्छे लगते थे। उनके पास छोटी-सी मॉरिस-एट कार थी। स्कूल की पढ़ाई खत्म करने से पहले ही मैंने उनके उत्साह के कारण कार चलाना सीख लिया। सचमुच उन दिनों की उत्तेजना की बात मैं कभी न भूल पाऊँगी। मुझे ऐसा लगा था कि हेमन्त चाचा ने मानो आसमान का चाँद ला कर मेरे हाथ पर रख दिया हो।

दूसरे वर्ष में कालेज में भरती हुई तो एक दिन हेमन्त चाचा ने मेरे माँ-बाप के सामने ही पूछा, बोलो कविता, तुम्हें क्या चाहिए ?

भला, मुझे क्या चाहिए ?

नहीं-नहीं, कुछ तो जरूर चाहिए।

कई बार ऐसा कहने के बाद भी मैं कुछ न बोली तो हेमन्त चाचा बोले, चलो, तुम्हें पुरी घुमा लाऊँ।

मैं कुछ कहती कि उसके पहले ही पिता जी बोले, मैं भी सोच रहा था कि सबको ले कर कहीं घूम आऊँ, लेकिन डाक्टर ने मना किया है। इस लिए कहीं नहीं जा पा रहा हूँ।

साथ ही साथ माँ बोली, हमारा जाना सम्भव नहीं है तो बच्ची अपने चाचा के साथ घूम आये।

पिता जी बोले, इसमें क्या आपत्ति हो सकती है ?

हेमन्त चाचा ने हँसते हुए मुझसे पूछा, कार से जाओगी या ट्रेन से ?

माँ बोली, नहीं-नहीं। कार से उतनी दूर जाने की जरूरत नहीं है।

उसके कई दिन बाद मैं हेमन्त चाचा के साथ पुरी के लिए रवाना हो गयी।

हावड़ा स्टेशन पहुँच कर देखा कि फर्स्ट क्लास का कूपे रिजर्व किया गया है। लगेज रखने के बाद हेमन्त चाचा ने मुझसे पूछा, कहो कविता, ठीक है न ?

मैंने हँसते हुए कहा, मेरे चाचा जी के प्लानिंग में कैसे कोई कमी हो सकती है ?

हेमन्त बाबू ने भी हँसते हुए कहा, मैं सिर्फ तुम्हारा चाचा नहीं, बट ऑलसो योर फ्रेंड।

मैंने तुरंत उनकी बात का समर्थन किया, दैट्स राइट !

ट्रेन छूटने में उस समय देर थी।

हेमन्त चाचा बोले, तुम बैठो। मैं आ रहा हूँ।

पन्द्रह-बीस मिनट बाद हेमन्त चाचा दो बोतल सोडा ले कर लौटे तो मैंने पूछा, यह क्या ? दो बोतल सोडा ले कर क्या करेंगे ?

दबी मुस्कान के साथ हेमन्त चाचा बोले, क्यों ? दोनों पियेंगे।

मैंने हँसते हुए कहा, क्या मुझे खट्टी डकार आने लगी है कि सोडा पिऊँगी ?

हेमन्त चाचा ने आगे कुछ कहे बिना बाथरूम में जा कर कपड़े बदल लिये और वहाँ से लौटने के बाद नीचे की बर्थ में मेरा बिस्तर बिछा दिया। उसके बाद मुझसे पूछा, क्या तुम साड़ी बदलोगी ?

जी हाँ।

तो जाओ। बाथरूम से हो आओ।

बाथरूम से निकलने के पहले ही ट्रेन छूट चुकी थी।

हेमन्त चाचा ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने पास बैठाते हुए कहा, अब बैठो। गपशप की जाय।

मैं बैठी।

अब हेमन्त चाचा ने मुझसे पूछा, क्या तुम पहली बार पुरी जा रही हो ?

जी हाँ।

तुम्हें समुद्र अच्छा लगता है या पहाड़ ?

दोनों ही। लेकिन इनमें से कोई भी नहीं देखा।

ठीक है। इसके बाद तुम्हें दार्जिलिंग या शिमला ले जाऊँगा।

क्या आप बहुत घूमते रहते हैं चाचा जी ?

उन्होंने मुस्करा कर मेरे कन्धे पर हाथ रखा और कहा, आखिर एक बैचेलर ठहरा न ! घर-गृहस्थी का झमेला नहीं है। इस लिए मौका पाते ही कहीं न कहीं चल देता हूँ।

घर-गृहस्थी का झमेला न होना बहुत अच्छा है।

क्या कहती हो ! तुम शादी नहीं करोगी ?

मैंने हँसते हुए कहा, वह सब मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता।

फिर क्या करोगी ?

क्या करूँगी ! पढ़-लिख कर नौकरी करूँगी।

अकेली रहोगी ?

क्यों अकेली रहूँगी ? माँ-बाप के साथ रहूँगी।

लेकिन माँ-बाप तो हमेशा नहीं रहेंगे ?

फिर क्या करूँगी ! अकेली रहूँगी।

शादी किये बिना रह पाओगी ?

एकदम रह पाऊँगी।

हेमन्त चाचा ने मुड़ कर एक बार मुझे देख लिया और फिर कहा, लगता नहीं कि शादी किये बिना तुम रह पाओगी।

मैंने जरा आश्चर्य से हेमन्त चाचा की तरफ देख कर पूछा, क्यों नहीं रह पाऊँगी ?

हेमन्त चाचा ने हँसते हुए मुझे और एक बार अच्छी तरह देख लिया और कहा, तुम्हारी तरह खूबसूरत लड़की के लिए शादी किये बिना रहना बहुत मुश्किल है।

मैं खूबसूरत हूँ ?

हेमन्त चाचा ने दोनो आँखें बड़ी-बड़ी करके मेरी तरफ देख कर कहा, क्या तुम खूबसूरत नही हो ?

कभी नही।

नही। तुम सचमुच बहुत खूबसूरत हो।

आपसे बहस करने से कोई फायदा नही है।

हाँ। इस संबंध मे बहस न करना ही ठीक है।

लेकिन खूबसूरत होने पर ही शादी करनी पड़ेगी, ऐसा कोई कारण नही है।

हेमन्त चाचा ने दबी मुस्कान के साथ कहा, कारण है।

क्या कारण है ?

लड़के तंग करेंगे तो परेशान हो जाओगी !

शर्म के मारे चेहरा दूसरी तरफ कर लिया और कहा, मुझे कोई परेशान नहीं करेगा।

ठीक है। देखा जायेगा कि तुम सही हो या मैं हूँ।

देखियेगा।

हेमन्त चाचा ने अचानक खड़े हो कर कहा, क्या कहती हो, अब शुरू किया जाय ?

क्या शुरू किया जाय ?

थोड़ा दिल बहलाव।

दिल बहलाव ? मैंने आश्चर्य से हेमन्त चाचा की तरफ देखा।

हेमन्त चाचा ने अत्यन्त सहज ढंग से कहा, दोनो एक साथ घूमने निकले हैं, थोड़ी सी ह्विस्की नहीं पियेंगे ?

शराब ! मैं तो चौंक पड़ी।

हेमन्त चाचा ने दोनों हाथों से मेरे चेहरे को ऊपर उठा कर कहा, सारा संसार ह्विस्की पीता है। ह्विस्की पीना कोई बुरा नहीं है, होश-हवास खो देना बुरा है।

लेकिन शराव पीने पर तो लोग होश-हवास खो देते हैं।

डोंट से शराव, से ह्विस्की।

ह्विस्की पीने पर भी तो वही हाल होता है।

कोई भी चीज अधिक खाना या पीना ठीक नहीं है। कोई भी चीज अधिक खा लेने पर तवीयत खराव हो जाती है, है न ?

जी हाँ।

इसलिए अधिक ह्विस्की पीना भी बुरा है। इससे एक तो आदमी मतवाला हो जाता है, फिर सेहत खराव होती है।

लेकिन नशा क्या कोई हिसाव से कर सकता है ?

सभी शिक्षित और भद्र लोग कर सकते हैं।

मैं निगाह नीची करके हेमन्त चाचा ने जो कुछ कहा, उस पर विचार करती रही। एक-दो मिनट मैंने मन ही मन वहस की, लेकिन चाचा जी का तर्क मुझे प्रभावित न कर सका।

फिर हेमन्त चाचा ने मेरे सिर पर हाथ रख कर पूछा, क्या सोच रही हो कविता ?

कुछ नहीं।

मेरे ह्विस्की पीने के बारे में सोच रही हो ?

अब मैंने चाचा जी की तरफ देख कर पूछा, चाचा जी, आप ह्विस्की पीते हैं ?

हेमन्त चाचा ने सिर हिला कर कहा, रात को खाना खाने के पहले थोड़ी सी लेता हूँ।

रोज लेते हैं ?

हाँ।

खाना खाने के पहले क्यों ?

उससे तवीयत ठीक रहती है।

चाचा जी की वात सुन कर मैं फिर सोचने लगी। लेकिन मैंने उनसे कुछ नहीं पूछा।

लेकिन चाचा जी ने दूसरे ही क्षण मुझसे पूछा, मुझे कभी मतवाला होते देखा है ?

मैंने सिर हिला कर कहा, नहीं।

हेमन्त चाचा ने हँसते हुए कहा, आज तुम भी तो थोड़ी सी ह्विस्की पियोगी ?

मैंने उसी दम चीख कर कहा, नहीं-नहीं चाचा, मैं वह सब नहीं पी सकती।

हेमन्त चाचा ने फिर दोनो हाथों से मेरे चेहरे को पकड़ कर कहा, बड़ी पगली लड़की है ! ह्विस्की पीने का नाम सुनते ही बेहोश होने लगी।

मैंने मुस्करा कर कहा, शराब पीने पर तो मैं मर जाऊँगी।

अगर न मरो तो ?

तो बदहवास हो जाऊँगी।

यदि बदहवास भी न हो तो ?

तो बेहोश हो जाऊँगी।

यदि बेहोश भी न हो तो ?

तो खतरनाक कुछ होगा।

कुछ भी नहीं होगा।

फिर क्या शराब पीने के बाद भी मैं स्वाभाविक रहूँगी ?

एकदम स्वाभाविक रहोगी।

फिर शराब पीने से फायदा ?

मन खुशी से भर जाता है।

इसके बाद हेमन्त चाचा कुछ नहीं बोले और ह्विस्की की बोतल, फ्लास्क, गिलास और सोडे की बोतल ले कर बैठ गये।

कहा, अब मैं पिऊं ?

मैंने सिर हिला कर सहमति दी।

अगर तुम्हे एतराज हो तो मैं बाहर के पैसेज में जा कर पी लूँ ?

नहीं, आप बाहर क्यों जायेंगे ? अगर आपको असुविधा हो तो मैं ही बाहर जाती हूँ।

क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ? तुमको बाहर भेज कर मैं यहाँ बैठा ड्रिंक करूँगा ?

मैं कहाँ कह रही हूँ कि बाहर जाऊँगी ?

फिर हेमन्त चाचा ने एक गिलास मे ह्विस्की और सोडा मिला कर मेरे मुँह के पास पकड़ा और कहा, चीयर्स ! फॉर आवर फ्रेंडशिप !

उसके बाद हेमन्त चाचा ने गिलास को होठों से लगाया और मैं आश्चर्य से उनकी तरफ देखती रही।

५

इसके पहले वाला पत्र पढ़ कर तुमने जरूर सोचा होगा कि उस रात ट्रेन में कोई शर्मनाक बात हुई थी। लेकिन वैसी कोई बात नहीं हुई थी। हाँ, दो पेग पीने के बाद हेमन्त चाचा ने मुझसे पूछा था, बोलो कविता, मैं मतवाला हुआ हूँ ?

मैंने बड़ी-बूढ़ी की तरह गम्भीरता से कहा, कोई भद्र और सुशिक्षित व्यक्ति मतवाला नहीं होता।

मेरी बात सुन कर हेमन्त चाचा ने खूब हँसते हुए मुझे बांहों में जकड़ लिया। उसके बाद ह्विस्की का गिलास मेरे होंठों के पास लाते हुए उन्होंने कहा, तुम जरा नहीं पियोगी ?

नहीं चाचा जी, प्लीज।

क्यों ? डर लग रहा है ?

डर क्यों लगेगा ? मन नहीं कर रहा है।

ऐसा न कहो कि मन नहीं कर रहा है। या तो डर लग रहा है, नहीं तो संकोच वश तुम नहीं पी रही हो।

मैं कभी किसी बात से नहीं डरती और न संकोच करती।

हेमन्त चाचा मेरी तरफ देखते हुए मुस्कराते रहे। फिर बोले, मैं नहीं मानता।

मैंने भी मुस्कराते हुए कहा, समय आने पर आपको इसका प्रमाण मिल जायेगा।

हेमन्त चाचा ने गिलास में बची ह्विस्की सीधे गले में उड़ेल ली। फिर लम्बी साँस छोड़ कर कहा, तुम मुझसे जरा भी प्यार नहीं करती।

जी नहीं। मैं आपसे खूब प्यार करती हूँ।

लेकिन इसका तो कोई सबूत नहीं मिल रहा है।

सिर्फ ह्विस्की पीते रहने से क्या आपको उसका सबूत मिल जायेगा ?

मैं यह नहीं कहता। लेकिन तुम मुझसे प्यार करती तो मेरे कहने पर एक पेग जरूर पीती।

ह्विस्की पी कर अगर लड़खड़ाने लगूं तो ?

इस तरह पियोगी कि नशा नहीं होगा, लेकिन मजा आ जायेगा।

ठीक है। एक नयी जानकारी हो गयी।

अधिक नहीं, सिर्फ तीन दिन हम पुरी में थे। सच बता रही हूँ भाई, इसके पहले इतना आनन्द मुझे कभी नहीं मिला था। हेमन्त चाचा उम्र में बहुत बड़े थे, फिर भी वह सचमुच मेरे घनिष्ठ मित्र हो गये।

कलकत्ता लौटने के बाद मुझे खूब हंसती-चहकती देख कर माँ ने पूछा, खूब खुशियाँ मनाती रही न ?

मैंने माँ से लिपट कर कहा, हाँ माँ, सचमुच बड़ी खुशियाँ रही।

खूब घूमती रही ?

खूब घूमती रही, खूब खाती रही, खूब तैरती रही, खूब सोती रही और खूब मौज करती रही।

कुछ रख नहीं छोड़ा ?

हेमन्त चाचा ने पिता जी से कहा, तुमसे ज्यादा तेरी बेटी से मेरी दोस्ती हो गयी है।

पिता जी ने हँसते हुए कहा, जब शादी-ब्याह नहीं किया, तब मेरी बेटी से ही दोस्ती करके बाकी जिन्दगी बिता दे।

माँ की तबीयत खराब रहने के कारण पिता जी कचहरी के अलावा और कहीं नहीं जाते थे। पिता जी बाकी समय घर ही पर रहते थे। इस लिए मैं कभी-कभी हेमन्त चाचा के साथ कलकत्ते में ही इधर-उधर सिनेमा-थियेटर देखने जाती थी। कभी-कभी छुट्टी के दिन पूरा समय चाचा जी के फ्लैट में बिताती थी। प्रायः मेरी एक-दो सहेलियाँ भी चाचा जी के यहाँ आती थीं। उसके बाद हम सब मिल कर कहीं घूमते या सिनेमा देखने चले जाते थे।

उसके बाद माँ की तबीयत ज्यादा खराब होने लगी। प्राय: कालेज से लौट कर देखती थी कि पिता जी कचहरी नहीं गये हैं। माँ के बिस्तर के पास बैठे हुए हैं। मैं भी माँ के पास बैठती थी। उनके माथे पर, छाती पर हाथ फेरती थी। माँ कहती थी, जा। अब तू नहा कर खाना खा ले।

मैं कहती थी, अभी जाती हूँ।

माँ मेरे हाथ अपने कमजोर हाथों में लेकर कहती थी, नहीं बेटा, देर मत कर। इस तरह लापरवाही करने से सेहत बिगड़ जायेगी।

उन दिनों माँ एक साथ अधिक बातें नहीं कर पाती थी, इस लिए जरा रुक कर कहती थी, मैं बीमार हूँ तो तू क्यों लापरवाही करेगी ?

फिर मैं कुछ बोले बिना वहाँ से उठ जाती थी।

५

इसके पहले वाला पत्र पढ़ कर तुमने जरूर सोचा होगा कि उस रात ट्रेन में कोई शर्मनाक बात हुई थी। लेकिन वैसी कोई बात नहीं हुई थी। हाँ, दो पेग पीने के बाद हेमन्त चाचा ने मुझसे पूछा था, बोलो कविता, मैं मतवाला हुआ हूँ ?

मैंने बड़ी-बूढ़ी की तरह गम्भीरता से कहा, कोई भद्र और सुशिक्षित व्यक्ति मतवाला नहीं होता।

मेरी बात सुन कर हेमन्त चाचा ने खूब हँसते हुए मुझे बाँहों में जकड़ लिया। उसके बाद ह्विस्की का गिलास मेरे होंठों के पास लाते हुए उन्होंने कहा, तुम जरा नहीं पियोगी ?

नहीं चाचा जी, प्लीज।

क्यों ? डर लग रहा है ?

डर क्यों लगेगा ? मन नहीं कर रहा है।

ऐसा न कहो कि मन नहीं कर रहा है। या तो डर लग रहा है, नहीं तो संकोच वश तुम नहीं पी रही हो।

मैं कभी किसी बात से नहीं डरती और न संकोच करती।

हेमन्त चाचा मेरी तरफ देखते हुए मुस्कराते रहे। फिर बोले, मैं नहीं मानता।

मैंने भी मुस्कराते हुए कहा, समय आने पर आपको इसका प्रमाण मिल जायेगा।

हेमन्त चाचा ने गिलास में बची ह्विस्की सीधे गले में उड़ेल ली। फिर लम्बी साँस छोड़ कर कहा, तुम मुझसे जरा भी प्यार नहीं करती।

जी नहीं। मैं आपसे खूब प्यार करती हूँ।

लेकिन इसका तो कोई सबूत नहीं मिल रहा है।

सिर्फ ह्विस्की पीते रहने से क्या आपको उसका सबूत मिल जायेगा ?

मैं यह नहीं कहता। लेकिन तुम मुझसे प्यार करती तो मेरे कहने पर एक पेग जरूर पीती।

ह्विस्की पी कर अगर लड़खड़ाने लगूं तो ?

इस तरह पियोगी कि नशा नहीं होगा, लेकिन मजा आ जायेगा।

ठीक है। एक नयी जानकारी हो गयी।

अधिक नही, सिर्फ तीन दिन हम पुरी में थे। सच बता रही हूँ भाई, इसके पहले इतना आनन्द मुझे कभी नही मिला था। हेमन्त चाचा उम्र में बहुत बड़े थे, फिर भी वह सचमुच मेरे घनिष्ठ मित्र हो गये।

कलकत्ता लौटने के बाद मुझे खूब हँसती-चहकती देख कर माँ ने पूछा, खूब खुशियाँ मनाती रही न ?

मैंने माँ से लिपट कर कहा, हाँ माँ, सचमुच बड़ी खुशियाँ रहीं।

खूब घूमती रही ?

खूब घूमती रही, खूब खाती रही, खूब तैरती रही, खूब सोती रही और खूब मौज करती रही।

कुछ रख नही छोड़ा ?

हेमन्त चाचा ने पिता जी से कहा, तुमसे ज्यादा तेरी बेटी से मेरी दोस्ती हो गयी है।

पिता जी ने हँसते हुए कहा, जब शादी-ब्याह नही किया, तब मेरी बेटी से ही दोस्ती करके बाकी जिन्दगी बिता दे।

माँ की तबीयत खराब रहने के कारण पिता जी कचहरी के अलावा और कहीं नही जाते थे। पिता जी बाकी समय घर ही पर रहते थे। इस लिए मैं कभी-कभी हेमन्त चाचा के साथ कलकत्ते में ही इधर-उधर सिनेमा-थियेटर देखने जाती थी। कभी-कभी छुट्टी के दिन पूरा समय चाचा जी के फ्लैट में बिताती थी। प्रायः मेरी एक-दो सहेलियाँ भी चाचा जी के यहाँ आती थी। उसके बाद हम सब मिल कर कहीं घूमते या सिनेमा देखने चले जाते थे।

उसके बाद माँ की तबीयत ज्यादा खराब होने लगी। प्रायः कालेज से लौट कर देखती थी कि पिता जी कचहरी नही गये हैं। माँ के बिस्तर के पास बैठे हुए हैं। मै भी माँ के पास बैठती थी। उनके माथे पर, छाती पर हाथ फेरती थी। माँ कहती थी, जा। अब तू नहा कर खाना खा ले।

मैं कहती थी, अभी जाती हूँ।

माँ मेरे हाथ अपने कमजोर हाथों में लेकर कहती थी, नही बेटा, देर मत कर। इस तरह लापरवाही करने से सेहत बिगड़ जायेगी।

उन दिनों माँ एक साथ अधिक बातें नही कर पाती थी, इस लिए जरा रुक कर कहती थी, मैं बीमार हूँ तो तू क्यों लापरवाही करेगी ?

फिर मैं कुछ बोले बिना वहाँ से उठ जाती थी।

एक दिन कालेज से लौट कर देखा कि पिता जी चुपचाप अपने कमरे में बैठे हुए हैं। मेरी आहट पाते ही उन्होंने मेरी तरफ देखा। मैंने भी देखा कि जल-भरे भदौंहे बादल की तरह उनकी आँखें छलछला रही हैं। मुझसे वह दृश्य मानो सहन न हो सका। मैं उस कमरे से निकलने लगी तो पिता जी ने मुझे आवाज दी, सुन मुन्नी बेटा, सुन।

मैं पिता जी के पास गयी तो मुझसे लिपट कर उन्होंने अपना सिर मेरी छाती पर रख दिया और अनाथ बच्चे की तरह रोते हुए कहा, तेरी माँ चली जायेगी तो हम कैसे जिन्दा रहेंगे मुन्नी ? इस संसार में मेरा कोई दोस्त नहीं है।

भाई रिपोर्टर, दुख की उन घड़ियों की बातें इतने बरसों बाद लिखते समय मेरी आँखें भर गयी हैं। पिता जी की बाल्यावस्था या किशोरावस्था मैंने नहीं देखी थी। उनके प्रथम यौवन के दिनों के बारे में भी नहीं जानती। लेकिन जब से होश सँभाला, मैंने देखा कि पिता जी मेरी माँ के अलावा इस संसार में और किसी को न जानते थे और न पहचानते थे। पिता जी मेरी माँ से सिर्फ प्यार ही नहीं, उनका बड़ा आदर भी करते थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि कलकत्ते आने के बाद एक दिन पिता जी ने मुझसे कहा था, जन्म-जन्मान्तर की तपस्या के फल से ही तेरी माँ को पत्नी के रूप में पाया है। लोग तेरी माँ का रूप देख कर ही आश्चर्य करने लगते हैं, लेकिन उसके गुण के आगे उसका रूप कुछ भी नहीं है।

माँ को ऐसा असाध्य रोग हो गया था कि पिता जी अपना सब कुछ न्यौछावर करके भी उनको बचा नहीं सके। माँ चली गयीं। मैं उसी समय समझ गयी थी कि पिता जी इस आघात को नहीं झेल सकेंगे। मेरी बी० ए० की परीक्षा समाप्त होने के तीन दिन बाद पिताजी को हार्ट अटैक हुआ। बहत्तर घंटे बीतने के बाद हेमन्त चाचा ने कहा, अब कोई डर नहीं है। संकट टल गया है।

मेरे भाग्याकाश में थोड़ी देर के लिए चमक कर सूरज फिर बादल की ओट में छिप गया। पिता जी भी चले गये।

उन दिनों की बातें अधिक लिख कर तुम्हारे मन को दुखी नहीं करूँगी। तुम तो आसानी से समझ गये होगे कि उस समय मेरी क्या हालत थी। मैं सोच न सकी थी कि इस तरह अचानक मेरे जीवन की सारी रोशनियाँ बुझ जायेंगी। हेमन्त चाचा के विरुद्ध मेरी तमाम शिकायतें हैं, फिर भी खुले दिल से यह स्वीकार करूँगी कि अमावस की उस अँधेरी रात में मेरा कोई सम्बन्धी नहीं, कोई मित्र नहीं, सिर्फ वही सहायक बन कर मेरे पास आये थे।

हेमन्त चाचा ने मुझसे कहा, डोंट फॉरगेट कविता, मैं अब भी जिन्दा हूँ।

तुम जरा भी मत सोचो। पहले एम० ए० पास करो, डॉक्टरेट बनो, उसके बाद सोचा जायेगा।

सचमुच मुझे कुछ भी नही सोचना पड़ा। हेमन्त चाचा ने पचहत्तर हजार रुपये में हमारा कालीघाट वाला मकान बेच दिया। फर्नीचर तथा पिता जी की कानून की किताबें पिता जी के जूनियर को दे दी गयी। मैं हेमन्त चाचा के दो कमरों वाले फ्लैट में चली गयी।

हेमन्त चाचा के फ्लैट मे एक ड्राइंग रूम, एक बेडरूम, बेडरूम के साथ लगा बाथरूम और एक छोटी सी स्टडी थी। इनके अलावा एक किचन भी था। हेमन्त चाचा की गृहस्थी का जिम्मा सलाउद्दीन नाम के एक खानसामां-कम-बवर्ची पर था। आजादी से पहले सन् छियालिस के दंगे के समय हेमन्त चाचा ने सलाउद्दीन को निश्चित मौत के हाथ से बचाया था। उसके बाद से सलाउद्दीन ने स्वेच्छा से हेमन्त चाचा की गृहस्थी का भार सँभाला था। डुप्लीकेट चाभी से दरवाजा खोल कर सलाउद्दीन जब आता था, उस समय हेमन्त चाचा सोये रहते थे। सलाउद्दीन के हाथ की चाय पीने के बाद ही हेमन्त चाचा बिस्तर छोड़ते थे।

ब्रेकफास्ट खा कर हेमन्त चाचा आफिस जाते थे। फिर लंच के समय वह आते थे। रात का खाना फ्रिज में रखकर सलाउद्दीन ढाई-तीन बजे तक चला जाता था। सिर्फ खाना पकाना नही, हेमन्त चाचा की गृहस्थी की हर चीज सलाउद्दीन को देखनी पड़ती थी। वही बाजार से सामान लाता था, कपड़े धुलवाता था, घर की साफ-सफाई करता था, बिस्तर बदलता था और मोटरकार की देखभाल भी। इसके अलावा हेमन्त चाचा के लिए ह्विस्की और सोडा ला कर रख देने का जिम्मा भी उसी पर था।

हेमन्त चाचा का बेडरूम काफी बड़ा था। इसलिए उस कमरे में एक किनारे मेरा पलंग और एक आलमारी रख देने से किसी को कोई असुविधा नही हुई। हेमन्त चाचा के ही कमरे में मेरे सोने की व्यवस्था हुई तो मेरे मन में खटका नही लगा था, ऐसी बात नहीं है। लेकिन एक तो सोने का दूसरा कमरा नही था, फिर जिनके स्नेह का सहारा लेकर मैं उस घर मे गयी थी, उन्हीं पर अविश्वास करना अनुचित था। बगल की स्टडी मेरे कब्जे मे हो गयी। वहीं मेरे पढ़ने-लिखने की व्यवस्था हुई।

उसके बाद एक दिन हेमन्त चाचा मुझे यूनिवर्सिटी ले गये और एम० ए० मे भरती कर आये। वहाँ से लौट कर उन्होंने मुझसे कहा, इतने दिनो मे तम मझे

जरूर पहचान गयी होगी। ट्रीट मी ऐज ए रीयल फ्रेंड। किसी बात के लिए संकोच मत करना।

मैंने भी उसी वक्त कहा, मैं आपके फ्लैट में रह रही हूँ, इस लिए आप भी किसी बात में संकोच मत करें।

हेमन्त चाचा ने कहा, शाम के बाद एक-दो पेग ह्विस्की पीता हूँ, यह तो तुम्हें पता है। इसके अलावा और किसी बात में संकोच का कोई कारण नहीं है।

मैं ह्विस्की पीने की बात नहीं कर रही हूँ। आप जिस तरह रहते आये हैं, उसी तरह रहें। मेरे कारण किसी बात में संकोच न करें।

नहीं-नहीं, संकोच करने की कोई बात नहीं है।

मेरी नयी जिन्दगी की शुरुआत बड़ी अच्छी रही। सलाउद्दीन के आने से पहले ही मैं उठ जाती थी। मैं नहा कर बाथरूम से निकलती थी तो सलाउद्दीन आता था। उसके बाद चाय पीती थी। हेमन्त चाचा से बात करती थी। अखबार पढ़ती थी। उसके बाद थोड़ी देर अपनी पढ़ाई करती थी। पढ़ते-पढ़ते थोड़ा नाश्ता भी कर लेती थी। उसके बाद हेमन्त चाचा आफिस चले जाते थे तो मैं खाना खाने बैठती थी। खाने के बाद यूनिवर्सिटी जाती थी। जाते समय सलाउद्दीन से पूछती थी; चाचा, कुछ लाना है?

यों तो कुछ लाना नहीं है। अगर साहब के लिए बनियाइन ला सको तो लाना।

यूनिवर्सिटी से निकलने के बाद कालेज स्ट्रीट मार्केट से हेमन्त चाचा के लिए दो-चार बनियाइनें खरीद कर घर लौटती थी। यूनिवर्सिटी से लौटने पर किसी दिन सलाउद्दीन से मुलाकात होती थी तो किसी दिन नहीं। फिर उस समय थोड़ी देर आराम करती थी या किसी पत्र-पत्रिका को पलट कर देखती थी। किसी-किसी दिन मेरी एक-दो सहेलियाँ भी आ जाती थीं। फिर सब मिल कर खूब गपशप होती थी और चाय का दौर चलता था।

तभी टेलीफोन की घंटी बज उठती थी।

हलो! कौन? चाचा जी?

क्या कर रही हो?

सुपर्णा और आरती आयी हुई हैं। उन्हीं से गप हो रही है।

नो बॉय फ्रेंड?

मैं हँसते हुए जवाब देती थी, नो। देयर इज नो बॉय फ्रेंड।

हेमन्त चाचा से मेरी सभी सहेलियों की अच्छी दोस्ती थी। मेरी बातों से

समझ जाती थी कि चाचा जी का फोन है। आरती झटपट उठ कर रिसीवर के पास मुँह ले जा कर कहती थी, चाचा जी, पिक्चर नहीं दिखायेंगे ?

इस पर हेमन्त चाचा मुझसे पूछते थे, पिक्चर दिखाने की बात किसने की ?

मैं कहती थी, आरती ने।

और भी कोई है ?

सुपर्णा भी है।

उनसे कह दो कि रविवार को दोपहर में हमारे साथ खाना खायेंगी और पिक्चर देखने चलेंगी।

इसी तरह हँसी-खुशी में हमारा समय बीतता था। कभी-कभी छुट्टी के दिन मैं हेमन्त चाचा के साथ कलकत्ते के बाहर भी घूमने जाती थी।

लेकिन यूनिवर्सिटी से लौटने के बाद मैं कहीं नहीं निकलती थी। थोड़ी देर आराम करने के बाद एक-दो घंटे पढ़ती थी। हेमन्त चाचा आफिस से निकल कर आफिस के ही काम से सालिसिटर और एडवोकेट के चेम्बर में जाते थे। उसके बाद उनके घर लौटते-लौटते साढ़े सात-आठ बज जाते थे। उनके लौटने पर मैं उन्हें चाय-नाश्ता देती थी। थोड़ी देर उनसे गपशप करती थी। उसके बाद वह नहाने चले जाते थे तो किसी-किसी दिन मैं किचन में जा कर एक-दो चीजें बना लेती थी।

उसके बाद हेमन्त चाचा के ड्रिंक करने का समय होता था। उस समय चाचा जी आराम से बैठ जाते थे। मेरी भी आदत पड़ गयी थी। मैं ही बोतल से ह्विस्की गिलास में उड़ेलती थी और उसमें सोडा मिला कर चाचा जी को देती थी। साथ देने के लिए मैं भी उनके साथ बैठ कर एक गिलास आरेंज स्क्वाश या कोई और सॉफ्ट ड्रिंक लेती थी। उसके बाद चाचा जी ह्विस्की का गिलास उठा कर कहते थे, चीयर्स फॉर आवर लास्टिंग फ्रेंडशिप !

मैं सिर झुका कर हँसते हुए चाचा जी की शुभ कामना ग्रहण करती थी।

इस तरह एक-दो घंटे का समय बीतता था।

उसके बाद हम खाना खा कर सो जाते थे।

इसी तरह दिन बीत रहे थे। मजे में बीत रहे थे। देखते-देखते कई महीने बीत गये।

उस दिन हेमन्त चाचा का जन्मदिन था।

आफिस से लौटते ही चाचा जी ने मेरे हाथ में एक पैकेट देकर कहा आज

तुम यह साड़ी पहनोगी तो मुझे बड़ी खुशी होगी ।

जरूर पहनूँगी ।

तो अभी पहन कर आओ ।

स्टडी में गयी । पैकेट खोल कर देखा कि मैसूर सिल्क की बड़ी कीमती साड़ी है । फिर मैंने वह साड़ी पहनी । उसके बाद चाचा जी के लिए मैं जो उपहार खरीद लायी थी, चाचा जी को दे कर प्रणाम किया । मेरा उपहार देखते ही चाचा जी खुशी के मारे उछल पड़े और चिल्लाये, ए बॉटल ऑफ स्कॉच ! लवली !

चाचा जी के पांव छू कर प्रणाम करने के बाद मैं खड़ी हुई तो उन्होंने दोनों हाथों से मेरा चेहरा पकड़ कर बड़े प्यार से मेरा माथा चूमा और कहा, गॉड ब्लेस यू ।

उसके बाद चाचा जी नहा कर आये तो मैंने स्कॉच की नयी बोतल से उनके गिलास में ह्विस्की उड़ेली । यह देख कर चाचा जी ने मेरे दोनों हाथ पकड़ कर कहा, कविता, आज मेरा एक अनुरोध है ।

बतायें, क्या अनुरोध है ?

आज मेरे साथ तुम्हें भी जरा सा ड्रिंक करना पड़ेगा ।

इस संसार में अपने सभी प्रियजनों को खोने के बाद मुझे जिनके स्नेह का सहारा मिला था, उनके जन्मदिन पर उन्हें मैं किसी तरह दुखी न कर सकी । मेरे लिए हेमन्त चाचा का अनुरोध ठुकराना असम्भव था । मैंने कहा, जी हाँ ! करूँगी ।

फिर हेमन्त चाचा ने स्वयं दोनों गिलासों में ह्विस्की उड़ेल कर उसमें सोडा मिलाया और एक गिलास मेरे हाथ में दिया तो मैंने कहा, चीयर्स !

चीयर्स !

फिर गिलास को होंठों से लगाते हुए मैंने कहा, यह कौन सा अमृत है कि आप रोज-रोज पीते हैं ?

धीरे-धीरे पियो । देखोगी, कितना अच्छा लग रहा है ।

घंटे भर की कोशिश के बाद मैंने एक पेग खत्म किया । उसके बाद मैंने दोनों का खाना परोसा । हेमन्त चाचा फिर दो गिलास भर कर डाइनिंग टेबिल के पास आये तो मैंने कहा, फिर क्यों ले आये ?

आज मेरा अनुरोध न ठुकराओ कविता !

कहा जाता है कि लोग मुरौवत के मारे क्या नहीं करते ! मैंने भी किया । हेमन्त चाचा के अनुरोध पर मैंने उस दिन दो पेग ह्विस्की पी ली । खाने-पीने के बाद मैसूर सिल्क की वही नयी साड़ी पहन कर मैं सो गयी ।

कह नहीं सकती कि उस समय रात के कितने बजे थे। अचानक नींद खुली तो मैंने देखा कि हेमन्त चाचा का एक हाथ मेरे छाती पर है और वह एक नटखट बालक की तरह बेखबर सो रहे हैं। एक क्षण के लिए मैं चौंकी। लेकिन नींद की और नशे की खुमारी के मारे मैं उनसे कुछ कह न सकी। थोड़ी देर बाद मुझे नींद आ गयी।

६

दूसरे दिन तड़के नींद खुली तो देखा कि हेमन्त चाचा मेरी बगल में नहीं हैं। देखा कि वह अपने पलंग पर सो रहे हैं। मैंने अपने मन में सोचा, शायद नशे के झोंक में चाचा जी मेरे पास आ कर लेट गये थे। उसके बाद नशा उतर जाने पर उन्हें अपनी गलती महसूस हुई तो आधी रात के बाद शायद वह मेरे पलंग से उतर कर अपने पलंग पर चले गये थे। इस लिए मैं चाचा जी को दोषी न ठहरा सकी।

इसी के साथ मैं और एक बात अवश्य स्वीकार करूँगी कि चाचा जी जब मुझसे लिपट कर सोये थे, मुझे बुरा नहीं लगा था। बल्कि निश्चिन्त सहारे का स्वाद मुझे अच्छा ही लगा था। मध्यवित्त बंगाली परिवारों की स्त्रियाँ स्वीकार नहीं करेंगी, लेकिन यह पूरी तरह सच है कि जवानी के दिनों में लड़कियों को पुरुष का स्पर्श अच्छा ही लगता है। विशेष कर यदि वह पुरुष घृणा का पात्र नहीं होता तो बुरा लगने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

पहले की तरह दिन बीतते गये। हेमन्त चाचा के आचरण में क्षण भर के लिए भी कभी मुझे अशालीनता देखने को नहीं मिली। मन ही मन उनके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ गयी। उसके बाद फिर एक दिन आधीरात को देखा की चाचा जी मेरी बगल में लेटे हुए हैं। उस दिन मैंने नशा नहीं किया था। नींद खुलने के थोड़ी देर बाद मैं फिर नहीं सो गयी। देखा कि वह पहले दिन जिस तरह सोये थे उसी तरह मेरी छाती पर हलके से हाथ रख कर बेखबर सो रहे हैं। मैंने धीरे से उनका हाथ हटाया तो उन्होंने मेरे गले में हाथ डाल दिया। मैं देर तक जागती रही और धुंधली रोशनी में उनकी तरफ देखती रही।

विश्वास करो भाई, मैं हेमन्त चाचा को किसी तरह बुरा नहीं समझ सकी, बल्कि उनके प्रति मेरा मन सहानुभूति से भर गया। फिर सबेरे नींद खुली तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। देखा कि मैं ही चाचा जी से लिपटी पड़ी हूँ।

इसी तरह बीच-बीच में लुकाछिपी खेलते-खेलते एक साल बीत गया।

कविता, आज जरा ड्रिंक करोगी ?

मैंने हँसते हुए पूछा, क्यों चाचा जी, आज तो आपका जन्मदिन नहीं है ?

आज शनिवार है।

इससे क्या ?

कल मेरा भी दफ्तर नहीं है और तुम्हारी यूनिवर्सिटी भी नहीं है।

इससे क्या हुआ ?

हर बात में चाचा जी को अलग-थलग क्यों रखती हो ?

फिर जरा रुक कर बोले, आज अपने नालायक चाचा के लिए तुम भी जरा नालायक बन गयी तो बुरा क्या ?

जी नहीं, इसमें अच्छे-बुरे की कोई बात नहीं है।

फिर प्लीज, गिव मी कम्पनी !

एक वर्ष में हेमन्त चाचा के अनुरोध पर मुझे दो-तीन बार ह्विस्की पीनी पड़ी थी, लेकिन कोई खास मजा नहीं आया था। लेकिन उस शनिवार की शाम को पहली बार मुझे ह्विस्की पी कर आनन्द आया।

फिर एक पेग खत्म होने के बाद मैंने ही चाचा जी से कहा, चाचा जी, एक राउंड और हो जाय !

हेमन्त चाचा ने हँस कर पूछा, क्यों ?

बड़ा अच्छा लग रहा है।

पहला पेग खत्म करने में लगभग एक घंटा लगने पर भी दूसरा पेग आधे घंटे में ही खत्म हो गया। उसके बाद हेमन्त चाचा फिर गिलास भर कर लाये। मैंने आपत्ति नहीं की। वही गिलास ले कर मैं डाइनिंग टेबिल पर गयी। थोड़ा-बहुत खाया। उसके बाद गिलास में बची ह्विस्की गले में उड़ेल कर मैंने हेमन्त चाचा को अपनी बाँहों में जकड़ लिया और कहा, चलिए। मुझे सुला दीजिए।

तबीयत खराब लग रही है ?

नहीं-नहीं, बड़ा मजा आ रहा है।

दूसरे दिन सवेरे नींद खुली तो देखा कि हम दोनों एक-दूसरे से लिपटे सो गये थे। धीरे-धीरे मैंने यह भी आविष्कार किया कि मैं रोज हेमन्त चाचा के साथ एक बिस्तर पर लेटती हूँ। लेकिन मेरे रिपोर्टर भाई, विश्वास करो, चाचा जी ने कभी मुझसे इससे अधिक की माँग नहीं की।

उसके बाद मैंने एम० ए० पास किया। रेजल्ट अच्छा ही रहा। फिर रिसर्च शुरू किया। दिन भर इतना काम करना पड़ता था कि घर लौटने के बाद ही

सो जाती थी। शायद ही किसी दिन मुझे पता चलता था कि कब सलाउद्दीन लौट गया और कब हेमन्त चाचा घर लौटे।

सबेरे साढे सात-आठ बजे नींद खुलने के बाद नहा लेती थी। फिर एक-दो घंटे पढती थी। उसके बाद खाना-पीना निपटा कर हेमन्त चाचा से इधर-उधर की बातें करती थी।

एक दिन कमरे में टहलते हुए चाचा जी ने कहा, अब तो तुम्हारा रिसर्च लगभग खत्म हो चला है। इसके बाद क्या करोगी ?

पहले खत्म तो हो। उसके बाद देखा जायेगा।

हेमन्त चाचा ने कहा, क्या करोगी ? अच्छी नौकरी ले कर कहीं चली जाओगी।

कहीं भी चली जाऊँ, आप बीच-बीच में मेरे पास आयेंगे।

लेकिन उस समय तुम्हारे पति शायद मेरा आना-जाना पसन्द न करें।

मैं शादी-ओदी नहीं करूँगी।

शादी तो तुम्हे करनी ही पडेगी।

क्यों ?

क्यों क्या ? तुम जैसी खूबसूरत पढी-लिखी लडकी से बहुत लडके शादी करना चाहेंगे।

लेकिन किसी के चाहने पर ही तो मैं शादी नहीं करूँगी।

क्यों नहीं करोगी ? किसी के चाहने पर तुम्हारा भी मन करेगा।

मन करेगा, ऐसी कोई बात नहीं है।

है कविता !

हेमन्त चाचा ने सामने खडे हो कर मेरे कंधो पर दोनों हाथ रखे और कहा, तुम तो कभी ह्विस्की नहीं पीती थी। लेकिन मेरे आग्रह पर पीने लगीं। आजकल कभी-कभी ड्रिंक कर लेती हो, है न ?

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया।

फिर हेमन्त चाचा ने कहा, फिर मैंने ही तुम्हारे पास लेटने का आग्रह किया। उसके कुछ दिनों बाद…

समझ गयी।

अगर मैं और आगे बढ़ने की इच्छा करता तो शायद…

• नहीं चाचा जी, वैसी इच्छा आप कभी नहीं करेंगे।

यह तो मैं अभी कह रहा हूँ, लेकिन मेरे आग्रह करने पर शायद तुम इनकार भी नहीं करोगी।

मैं कोई उत्तर न दे सकी। सिर नीचा किये चुपचाप बैठी रही।

थोड़ी देर बाद हेमन्त चाचा ने मेरे दोनों हाथ पकड़ कर कहा, बहुत रात हो गयी है। चलो, अब सोने चलें।

मैं चुपचाप चाचा जी के साथ सोने चली गयी।

हेमन्त चाचा थोड़ी ही देर बाद सो गये, लेकिन मैं जागती रही। मैं तरह-तरह की बातें सोचने लगी। अपनी बातें और चाचा जी की बातें। शायद मां-बाप और दादा की बातें भी याद आयीं। यही सोचती रही कि मेरे जीवन ने कैसा विचित्र मोड़ लिया। कई वर्ष पहले मैं हेमन्त चाचा को जानती भी नहीं थी, लेकिन इस समय उन्हीं के पास लेटी हुई हूं।

फिर अचानक न जाने क्या सूझा। करवट बदल कर हेमन्त चाचा को देखने लगी। फिर जरा मुस्करायी। सो जाने पर चाचा जी अबोध शिशु जैसे लगते हैं। दिन भर ऊधम मचाने के बाद थकेमादे से, लेकिन बड़े खुश और बड़े असहाय से! फिर मेरे मन में सवाल पैदा हुआ, क्या सो जाने पर सभी ऐसे असहाय लगते हैं?

धीरे-धीरे मैंने उनके चेहरे पर, माथे पर हाथ रखा। अचानक उनके गले के नीचे छाती के ऊपर हाथ रखा तो देखा कि वह पसीने से तर हो गये हैं। मैंने अपनी साड़ी के आंचल से उनका पसीना पोंछ दिया। कुरते के बटन खोल दिये। फिर चाचा जी के चेहरे के पास चेहरा ले जा कर देखा। उनकी सांस मेरे चेहरे पर पड़ने लगी। बड़ा अच्छा लगा। चाचा जी न जाने क्यों बड़े अच्छे लगे।

फिर मैंने अपने मन में सोचा, हेमन्त चाचा मेरे पिता जी से सात-आठ वर्ष छोटे होंगे। इसका मतलब वह मुझसे दस-बारह वर्ष बड़े हैं। बस! शायद मैं मन ही मन चाचा जी से घनिष्ठ होने लगी। फिर सोते-सोते ही नींद के झोंके में चाचा जी ने मुझे अपनी छाती में भींच लिया। मैंने किसी तरह बाधा नहीं दी और न उन्हें दूर हटा दिया। मुझसे वैसा करते न बना। उनको दूर हटाने की ताकत ही मानो मैंने खो दी।

भाई रिपोर्टर, तुमको यह बताने में कोई संकोच नहीं है कि उस दिन उस अंधेरी रात को मैंने बरबस हेमन्त चाचा से प्यार कर लिया और उस प्यार की आग में अपने को समर्पित कर दिया।

फिर उसके कुछ दिनों बाद की बात थी। मेरा रिसर्च पूरा हो गया था, लेकिन रेजल्ट नहीं निकला था। उन दिनों मैं दिन भर घर ही पर रहती थी। इसके अलावा उस समय सलाउद्दीन अजमेर शरीफ गया हुआ था। इस लिए रसोई का काम भी मुझे संभालना पड़ता था। एक दिन दोपहर को कॉलिंग बेल

बजा तो मैंने आकर दरवाजा खोल दिया। देखा, तीस-बत्तीस वर्ष की एक महिला दरवाजे पर खड़ी है। वह महिला देखने में बड़ी खूबसूरत थी।

मेरे कुछ कहने से पहले ही उस महिला ने पूछा, सलाउद्दीन है ?

जी नहीं। वह अजमेर गया है।

फिर तो उसके लौटने में देर होगी।

क्या आप सलाउद्दीन से मिलने आयी हैं ?

उस महिला ने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया, बल्कि मुस्करा कर पूछा, क्या आप ही कविता हैं ?

जी हाँ।

फिर मुझे जरा आश्चर्य भी हुआ कि वह मेरा नाम कैसे जान गयी ? मैंने कहा, लेकिन मैं तो आपको नहीं पहचान पा रही हूँ।

आप मुझे नहीं पहचानतीं। हेमन्त बाबू से मेरा घनिष्ठ परिचय है।

इतनी देर तक दरवाजे पर ही बातें हुईं। फिर मैंने कहा, अन्दर आइए।

वह महिला मेरे साथ अंदर आयी और कमरे में बैठीं। मैंने उनके सामने सोफे पर बैठते हुए पूछा, क्या मैं आपका नाम जान सकती हूँ ?

मेरा नाम है रमला।

क्या आप चाचा जी के दफ्तर में हैं ?

आप हेमन्त बाबू को चाचा जी कहती हैं ?

उस महिला ने जिस तरह हँस कर मुझसे यह सवाल किया, उससे मेरे बदन में मानो आग लग गयी। मैंने जरा गम्भीर होकर कहा, जी हाँ। वह मेरे चाचा हैं।

मुझे ऊपर से नीचे तक अच्छी तरह देख लेने के बाद उस महिला ने कहा, आपके चाचा जी तो आपकी बड़ी तारीफ करते रहते हैं।

सो तो करेंगे ही, लेकिन आपने अपना परिचय नहीं दिया।

हेमन्त बाबू से आपका जैसा सम्बन्ध है, वैसा मेरा भी है।

इसका मतलब ?

आफिस से निकल कर रोज मेरे यहाँ आते हैं। पहले कभी-कभी रात को मेरे यहाँ रुक जाते थे, लेकिन इधर आपके आ जाने से रात को नहीं रुकते।

क्या यही सब बेकार की बातें कहने के लिए आप मेरे पास आयी हैं ?

जाने के लिए खड़ी हो कर रमला ने कहा, नहीं। इधर कुछ काम था। इसलिए सोचा कि आपको भी देखती जाऊँ।

अब देख लिया न ?

दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए रमला ने और एक बार मुझे अच्छी तरह देख लिया और कहा, हाँ, देख लिया। बड़ी अच्छी चीज है।

रमला के चले जाने के वाद मैं दरवाजा वंद कर थोड़ी देर विमूढ़ सी बैठी रही। हेमन्त चाचा पर वड़ा गुस्सा आया और नफरत से मन भर गया। उसके वाद मन ही मन निश्चय किया कि अव यहाँ नहीं रहना है।

मैंने सुपर्णा को टेलीफोन किया, सुन ! तुझसे वड़ा जरूरी काम है।

क्यों, क्या हुआ ?

तू अपने पतिदेव से मेरा एक उपकार करा सकेगी ?

यह तो वता कि क्या काम है ?

अभी तू घर में है न ?

कहाँ जाऊँगी ?

फिर मैं आ रही हूँ।

तुरंत टैक्सी लेकर सुपर्णा के घर पहुँची। मैंने सीधे सुपर्णा से कहा, चाचा जी का चरित्र ठीक नहीं है। अव मैं एक दिन भी वहाँ रहना नहीं चाहती।

सुपर्णा ने भी तुरंत कहा, इस समय तो यहाँ मेरी सास नहीं है। तू मेरे पास चली आ।

जरूरत पड़ेगी तो आऊँगी, लेकिन तू अपने पतिदेव से कह कर वाई० डब्लू० सी० ए० में मेरे लिए एक कमरे का इन्तजाम करवा दे।

शायद वह कमरे का इंतजाम कर देगा, लेकिन उसमें भी एक-दो महीने का समय तो लगेगा।

लेकिन मैं चाचा जी के पास एक दिन भी नहीं रहना चाहती।

तू आज ही यहाँ चली आ। उसके वाद वहाँ कमरा मिल जाने पर चली जाना।

लेकिन तेरे पतिदेव की राय जाने विना मैं कैसे आ सकती हूँ ?

मेरा पतिदेव तुझे अपनी वहन की तरह देखता है।

यह तो मैं जानती हूँ, लेकिन उसकी इच्छा-अनिच्छा जाने विना यहाँ आ जाना मेरे लिए ठीक नहीं है।

ठीक है। आज रात को मैं उससे वात कर लूंगी।

तू मुझे टेलीफोन कर देना। लेकिन चाचा जी के आफिस जाने से पहले नहीं।

ग्यारह वजे तक।

हाँ। वही ठीक रहेगा।

दूसरे दिन दोपहर में सुपर्णा अपने पति के दफ्तर की कार लेकर मेरे पास आ गयी। मैंने अपना सारा सामान उसकी कार में रखवा दिया। चलते समय मैंने हेमन्त चाचा के नाम एक छोटा सा पत्र छोड़ दिया—आपने मेरे लिए जो कुछ किया है, उसे मैं कभी नहीं भूल सकती। आपके पास ये कई वर्ष रह कर मुझे जो भरपूर अनुभव मिला है, वह मेरे भविष्य के लिए सम्बल बनेगा। अब मैं जा रही हूँ। अब मैं कभी आपसे मुलाकात भी नही करना चाहती। ऐसी इच्छा भी नहीं है। आशा है, आप भी मुझसे मुलाकात करने की कोशिश नहीं करेंगे। अन्त में आपको बता दूँ कि आपकी बान्धवी रमला यहाँ आयी थी।

अचानक मेरे जीवन में नया मोड़ आया।

तुम दोनों मेरा हार्दिक स्नेह लेना।

७

सुपर्णा से मेरी खास दोस्ती का अपना इतिहास है। हम दोनो एक साथ एम० ए० मे भरती हुई थी। भरती होने के चार-छः दिन बाद अचानक न जाने किस कारण से हड़ताल हो गयी। सोचा था कि लाइब्रेरी मे बैठ कर कुछ काम करूँगी, लेकिन अचानक सुपर्णा मेरे पास आयी। उसने मुझसे आग्रह किया, चलिए, फिल्म देख आयें।

फिल्म देखने की इच्छा नही थी, लेकिन उसके आग्रह पर मैं इनकार न कर सकी। चलने के लिए तैयार हो गयी। फिर थोड़ी देर इससे-उससे गपशप करने के बाद हम एसप्लानेड गयी। लेकिन किसी भी सिनेमा हाल में टिकट नही मिला। सुपर्णा उसी वक्त घर लौटना नही चाहती थी, इस लिए मैं अपने फ्लैट मे उसे ले आयी।

फिर दोपहर के बाद तीसरे पहर तक हम दोनो गपशप करती रही। मैंने उससे क्या-क्या कहा और क्या-क्या सुना, अब कुछ भी याद नही है। लेकिन उस एक दिन की गपशप मे हम दोनों बड़ी अच्छी सहेलियाँ बन गयीं। फिर कब हमारा परस्पर का सम्बोधन 'आप' से 'तुम' और 'तुम' से 'तू' तक पहुँच गया, यह हम जान भी न सकीं।

घर लौटते समय सुपर्णा ने हँसते हुए कहा, कुछ भी हो कविता, तेरा यह फ्लैट बड़ा अच्छा है। कभी किसी से प्यार होने पर बड़ा काम आयेगा।

मैंने भी हँसते हुए कहा, बड़े आराम से अपने काम में लाना।

उसके बाद सुपर्णा बीच-बीच में यूनिवर्सिटी से घर लौटते समय मेरे यहाँ चली आती थी। कहती थी, कविता, सच-सच बतायेगी तो एक बात पूछूं।

क्यों नहीं बताऊंगी ?

क्या शादी करने को मन नहीं करता ?

मैं भी हँसते-हँसते पूछती थी, क्यों ? तेरा मन कर रहा है ?

इस पर सुपर्णा साफ-साफ कहती थी, एकदम शादी कर लेने को तो मन नहीं करता, लेकिन इस तरह अकेली रहना भी अच्छा नहीं लगता।

दोनों हाथों से सुपर्णा का चेहरा अपनी तरफ करने के बाद मैं पूछती थी, क्या तू किसी से प्यार करने लगी है ?

नहीं। लेकिन करने लगती तो अच्छा करती।

यूनिवर्सिटी में तो कितने ही भौंरे उड़ा करते हैं।

मुझे अपनी बात पूरी करने का मौका दिये बिना सुपर्णा कहती थी, बस, वही एक श्यामल है। उसके अलावा और किसी के पास बैठने को मन भी नहीं करता।

श्यामल सचमुच बड़ा अच्छा लड़का है। जैसा स्मार्ट, वैसा ही .

फिर मुझे रोक कर सुपर्णा कहती थी, सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसके बात करने का ढंग बड़ा अच्छा है। उससे घंटों बातें करने पर भी बुरा नहीं लगता।

मैं भी हँसते हुए पूछती थी, उसमें और क्या-क्या गुण हैं।

उसका सबसे बड़ा गुण यही है कि वह तुझसे प्यार करता है।

क्यों अपनी बात दूसरे पर डालने की कोशिश कर रही है ? श्यामल तुझसे प्यार करता है और वह भी तुझे अच्छा लगता है, यह कहने में क्यों शरमा रही है ?

भाई रिपोर्टर, तुम तो इस बात को अवश्य स्वीकार करोगे कि हर मनुष्य के जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब वह अकेला नहीं रह सकता। रहना भी नहीं चाहता। उस समय वह अपने मन के मीत को पास में चाहता है। सैकड़ों, हजारों और लाखों वरसों पुरानी इस धरती का नये सिरे से आविष्कार करने के लिए उसका मन बेचैन हो उठता है।

इस बात को भी सब लोगों ने स्वीकार किया है कि लड़कों से ज्यादा लड़कियाँ ही इस अकेलेपन का अनुभव करती हैं। करना ही पड़ता है। लेकिन कोई लड़की चार दिन पहले करती है तो कोई चार दिन बाद।

को देखा था जो शरीर और मन से बहुत आगे पहुँच गयी थीं। दो-तीन लड़कियाँ तो उसी समय घर बसाने के लिए बहुत बेचैन हो गयी थीं। यह एकदम अस्वाभाविक भी नहीं है। एक विशेष समय पर ही प्रकृति के जीवन में बसन्त आता है, लेकिन मनुष्यों को तो किसी एक नियम में बाँधा नहीं जा सकता। किसके जीवन में कब बसन्त आयेगा, कब फूल खिलेंगे, यह कोई नहीं जान पाता। अंग्रेजी मे एक कहावत है, Age does not depend upon years, but upon temperament and health. सचमुच बरसों का हिसाब लगा कर उम्र का पता नहीं लगाया जा सकता। मिजाज और स्वास्थ्य पर ही उम्र निर्भर करती है।

बचपन में सुनती थी कि बंगाली लड़कियाँ बीस में ही बूढ़ी हो जाती हैं, लेकिन इसी न्यूयार्क में एक ऐसी बंगाली महिला है, जिनको देखने से लगता है कि वह कभी बूढ़ी नहीं होंगी। कई वर्ष हो गये, कलकत्ते मे एक प्रसिद्ध गायक यहाँ आये थे। एक समारोह में उनका गाना सुनने गयी थी और वहीं मिसेस चटर्जी से पहली बार मेरा परिचय हुआ था। उसके बाद कभी-कभी मुलाकात होती रही। उसी मिसेस चटर्जी को ले कर लोग तरह-तरह की बातें करते हैं। कोई कहता है, उनके पति की मृत्यु हो चुकी है तो कोई कहता है कि डिवोर्स हो चुका है। ऐसा भी सुनने को मिला कि मिसेस चटर्जी का कई बार विवाह हुआ है। यह सब सुन कर मुझे सिर्फ हँसी आयी है। हम चाहे जितने प्रगतिशील बनें, चाहे जितने दिन विलायत और अमरीका में रहें, कोई महिला अकेली रहती है तो हम उसकी आलोचना किये बिना नहीं रह सकते।

कुछ भी हो, मिसेस चटर्जी की उम्र ले कर अमरीका प्रवासी भारतीय वैज्ञानिकों ने बड़ा शोध कार्य किया, लेकिन उनको कोई सफलता नहीं मिली। कोई कहता है, मिसेस चटर्जी की उम्र चालीस है तो कोई कहता है, पचास। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि वह महिला कम से कम साठ की है। मिसेस चटर्जी की उम्र चाहे जो हो, अब भी उनको देख कर अनेक पुरुषों का चित्त चंचल हो उठता है। धीरे-धीरे उनसे मेरी घनिष्ठता बढ़ने पर एक दिन उन्होंने मुझसे कहा था, देखो कविता, जिन औरतों को अकेली जिन्दगी बितानी पड़ती है, उनके पास जवानी और दौलत हमेशा रहनी चाहिए।

मैं उनकी बात सुन कर हँस पड़ी थी।

नहीं कविता, हँसने की बात नहीं है। जवानी और दौलत न रहने पर हम जैसी औरतों के लिये जिन्दा रहना मुश्किल है।

मिसेस चटर्जी ने शैम्पेन का गिलास होंठों से लगाते हुए फिर कहा था, संसार के हर देश के पुरुष स्त्रियों के यौवन का आदर करते हैं।

और धन ?

मिसेस चटर्जी जरा मुस्करायीं। यानी, धन की जरूरत के बारे में बताने की जरूरत ही क्या है !

मेरा गिलास शैम्पेन से भरा हुआ था। मिसेस चटर्जी का गिलास खाली हो चुका था। मैंने फिर उनका गिलास भर दिया।

मिसेस चटर्जी ने हँसते हुए कहा, पहले दुर्गा की पूजा चैत्र में ही हुआ करती थी। रामचन्द्र ने रावण-वध के लिये आश्विन में ही देवी की पूजा की थी। हम बंगाली उस असमय की गयी पूजा को ही अधिक महत्त्व देते हैं और उसे 'अकाल बोधन' कहते हैं। जीवन और यौवन के मामले में भी हम इसी अकाल पूजन में अधिक विश्वास करती हैं।

मतलब ?

अट्ठारह-बीस-बाईस के बाद हमारे देश की लड़कियाँ अपने यौवन को बरकरार नहीं रख सकतीं। लेकिन तभी किसी पुरुष को यौवन समर्पित करने की ज्यादा जरूरत पड़ती है।

फिर मैंने हँसते हुए कहा, आपने ठीक कहा है।

इधर बहुत दिनों से मिसेस चटर्जी से मुलाकात नहीं हुई। आज तुम्हें सुपर्णा के बारे में लिखने लगी तो उनकी बातें याद आ गयीं। सचमुच सुपर्णा बेचैन हो गयी थी। वह कभी-कभी जिस तरह बात करती थी, उससे लगता था कि वह घड़ी भर भी प्रतीक्षा नहीं कर सकती। एक दिन मैंने हँसते हुए उससे कहा, तू तो एकदम शादी के लिये पागल हो गयी है। तेरी जैसी लड़की मैंने कभी नहीं देखी।

सुपर्णा ने उदासी भरी मुस्कान के साथ कहा, मेरे भैया और भाभी की हालत देखती तो तू मुझसे अधिक पागल होने लगती। यों ही कोई लड़की शादी के लिये पागल नहीं होती।

तू क्या कहना चाहती है ?

जो कुछ कहना चाहती हूँ, वह तेरे सामने नहीं कह सकती।

सुपर्णा ने ऐसा कहा तो मैंने उससे और कुछ नहीं पूछा। इस संसार में पैदा होते ही कोई अच्छा या बुरा नहीं बन जाता। अपनी सहजात प्रवृत्ति के साथ हमारी शिक्षा-दीक्षा और सबसे बढ़ कर हमारा परिवेश हमें अच्छा या बुरा बनाता है। तुम पुरुष लोग शायद जान भी नहीं पाते कि आस-पास के लोगों के कारण स्त्रियों के जीवन में कैसी-कैसी समस्याएँ आती हैं और उनकी कैसी-कैसी प्रतिक्रियाएँ होती हैं।

खैर, एम० ए० का इम्तहान खत्म होते-होते सुपर्णा की शादी हो गयी। अचानक बीमार पड़ जाने से मैं उसकी शादी में नहीं जा सकी थी। शादी के बाद वह अपने पति के साथ कलकत्ते के बाहर चली गयी, जिस कारण उससे मेरी मुलाकात नहीं हो सकी। उसके लगभग एक महीने बाद एक दिन अचानक सुपर्णा और अमिय मेरे यहाँ आये।

सुपर्णा ने हँसते हुए अमिय से कहा, जिस कविता के बारे में अब तक आपने सुना है, वह आपके सामने खड़ी है।

अमिय ने बड़े आश्चर्य से मेरी तरफ देखा तो मैंने पूछा, क्या इतना सोच रहे हैं?

जरा हँस कर अमिय ने कहा, यही सोच रहा हूँ कि एक-दो महीने पहले आपसे मुलाकात होती तो पता नहीं क्या बवाल हो जाता?

सुपर्णा ने कहा, क्या बवाल होता?

मुझे ऊपर से नीचे तक एक बार अच्छी तरह देख लेने के बाद अमिय ने बे-झिझक अपनी पत्नी से कहा, इनसे पहले जान-पहचान होती तो मैं इन्हीं से शादी करता या आत्महत्या।

लज्जा के मारे मैं सिर झुकाकर मुस्कराती रही।

सुपर्णा ने हँसते हुए मुझसे कहा, अब बता, ऐसे आदमी से घर बसाना कितना खतरनाक है?

मैंने कहा, घबड़ा मत सुपर्णा, मैं तेरा घर नहीं बिगाड़ूँगी।

अमिय ने मुझसे कहा, आपको बिगाड़ना नहीं पड़ेगा। शायद मैं ही अपना घर बिगाड़ कर आपके पास चला आऊँगा।

मैंने कहा, अगर आयेंगे भी तो मैं गरदन पकड़ कर निकाल दूँगी।

फिर कई महीने बाद और मजेदार बात हो गयी।

भैयादूज के दिन सवेरे ही सुपर्णा को साथ लिये अमिय आ पहुँचा।

मैंने आश्चर्य से पूछा, क्या बात है? इतने दिनों बाद अचानक एकदम सवेरे-सवेरे?

अमिय बोला, झटपट मुझे टीका लगाइये, नहीं तो आपके पास नहीं आने पा रहा हूँ।

क्यों? सुपर्णा नहीं आने देती?

सुपर्णा बोली, मैं क्यों नहीं आने दूँगी? वही स्वयं तुझसे टीका लगाये बिना तेरे पास आने की हिम्मत नहीं कर रहे हैं।

क्यों?

और धन ?

मिसेस चटर्जी जरा मुस्करायीं। यानी, धन की जरूरत के बारे में बताने की जरूरत ही क्या है !

मेरा गिलास शैम्पेन से भरा हुआ था। मिसेस चटर्जी का गिलास खाली हो चुका था। मैंने फिर उनका गिलास भर दिया।

मिसेस चटर्जी ने हँसते हुए कहा, पहले दुर्गा की पूजा चैत्र में ही हुआ करती थी। रामचन्द्र ने रावण-वध के लिये आश्विन में ही देवी की पूजा की थी। हम बंगाली उस असमय की गयी पूजा को ही अधिक महत्त्व देते हैं और उसे 'अकाल बोधन' कहते हैं। जीवन और यौवन के मामले में भी हम इसी अकाल पूजन में अधिक विश्वास करती हैं।

मतलब ?

अट्ठारह-बीस-बाईस के बाद हमारे देश की लड़कियाँ अपने यौवन को बरकरार नहीं रख सकतीं। लेकिन तभी किसी पुरुष को यौवन समर्पित करने की ज्यादा जरूरत पड़ती है।

फिर मैंने हँसते हुए कहा, आपने ठीक कहा है।

इधर बहुत दिनों से मिसेस चटर्जी से मुलाकात नहीं हुई। आज तुम्हें सुपर्णा के बारे में लिखने लगी तो उनकी बातें याद आ गयीं। सचमुच सुपर्णा बेचैन हो गयी थी। वह कभी-कभी जिस तरह बात करती थी, उससे लगता था कि वह घड़ी भर भी प्रतीक्षा नहीं कर सकती। एक दिन मैंने हँसते हुए उससे कहा, तू तो एकदम शादी के लिये पागल हो गयी है। तेरी जैसी लड़की मैंने कभी नहीं देखी।

सुपर्णा ने उदासी भरी मुस्कान के साथ कहा, मेरे भैया और भाभी की हालत देखती तो तू मुझसे अधिक पागल होने लगती। यों ही कोई लड़की शादी के लिये पागल नहीं होती।

तू क्या कहना चाहती है ?

जो कुछ कहना चाहती हूँ, वह तेरे सामने नहीं कह सकती।

सुपर्णा ने ऐसा कहा तो मैंने उससे और कुछ नहीं पूछा। इस संसार में पैदा होते ही कोई अच्छा या बुरा नहीं बन जाता। अपनी सहजात प्रवृत्ति के साथ हमारी शिक्षा-दीक्षा और सबसे बढ़ कर हमारा परिवेश हमें अच्छा या बुरा बनाता है। तुम पुरुष लोग शायद जान भी नहीं पाते कि आस-पास के लोगों के कारण स्त्रियों के जीवन में कैसी-कैसी समस्याएँ आती हैं और उनकी कैसी-कैसी प्रतिक्रियाएँ होती हैं।

खैर, एम० ए० का इम्तहान खत्म होते-होते सुपर्णा की शादी हो गयी। अचानक बीमार पड़ जाने से मैं उसकी शादी में नहीं जा सकी थी। शादी के बाद वह अपने पति के साथ कलकत्ते के बाहर चली गयी, जिस कारण उससे मेरी मुलाकात नहीं हो सकी। उसके लगभग एक महीने बाद एक दिन अचानक सुपर्णा और अमिय मेरे यहाँ आये।

सुपर्णा ने हँसते हुए अमिय से कहा, जिस कविता के बारे में अब तक आपने सुना है, वह आपके सामने खड़ी है।

अमिय ने बड़े आश्चर्य से मेरी तरफ देखा तो मैंने पूछा, क्या इतना सोच रहे हैं ?

जरा हँस कर अमिय ने कहा, यही सोच रहा हूँ कि एक-दो महीने पहले आपसे मुलाकात होती तो पता नहीं क्या बवाल हो जाता ?

सुपर्णा ने कहा, क्या बवाल होता ?

मुझे ऊपर से नीचे तक एक बार अच्छी तरह देख लेने के बाद अमिय ने बे-झिझक अपनी पत्नी से कहा, इनसे पहले जान-पहचान होती तो मैं इन्हीं से शादी करता या आत्महत्या।

लज्जा के मारे मैं सिर झुकाकर मुस्कराती रही।

सुपर्णा ने हँसते हुए मुझसे कहा, अब बता, ऐसे आदमी से घर बसाना कितना खतरनाक है ?

मैंने कहा, घबड़ा मत सुपर्णा, मैं तेरा घर नहीं बिगाड़ूँगी।

अमिय ने मुझसे कहा, आपको बिगाड़ना नहीं पड़ेगा। शायद मैं ही अपना घर बिगाड़ कर आपके पास चला आऊँगा।

मैंने कहा, अगर आयेंगे भी तो मैं गरदन पकड़ कर निकाल दूँगी।

फिर कई महीने बाद और मजेदार बात हो गयी।

भैयादूज के दिन सवेरे ही सुपर्णा को साथ लिये अमिय आ पहुँचा।

मैंने आश्चर्य से पूछा, क्या बात है ? इतने दिनों बाद अचानक एकदम सवेरे-सवेरे ?

अमिय बोला, झटपट मुझे टीका लगाइये, नहीं तो आपके पास नहीं आने पा रहा हूँ।

क्यों ? सुपर्णा नहीं आने देती ?

सुपर्णा बोली, मैं क्यों नहीं आने दूँगी ? यही स्वयं तुमसे टीका लगाये बिना तेरे पास आने की हिम्मत नहीं कर रहे हैं।

क्यों ?

सुपर्णा ने अमिय की तरफ देखते हुए उससे पूछा, बता दूं, आप क्यों इसके पास आने से घबड़ाते थे ?

अमिय ने हँसते हुए अपनी पत्नी से कहा, शौक से !

सुपर्णा बोली, उनका कहना है कि बाप, भाई और बेटे के अलावा जो भी पुरुष तुझे देखेगा, वही वासना की आग से जलता रहेगा।

लजा कर हँसते हुए मैंने कहा, सुपर्णा, अब मैं तेरे पतिदेव की पिटाई करूँगी।

खैर, उस दिन भैयादूज पर मैंने अमिय को टीका लगाया। भाई रिपोर्टर, तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि उसके पहले मैंने किसी को भैयादूज पर टीका नहीं लगाया था।

भाई-बहन का सम्बन्ध कितना मधुर है, यह तो सिर्फ कहानी-उपन्यास में पढ़ा था, लेकिन अपना कोई अनुभव नहीं था ! अमिय ने मेरी उस कमी को सचमुच पूरा कर दिया था। वासना की आग में जले बिना भी कोई पुरुष सचमुच मुझसे प्यार कर सकता है, इसका पहला अनुभव मुझे अमिय के कारण मिला।

शाम को आफिस से लौटते ही अमिय ने मुझसे कहा, सचमुच तुम पर बड़ा गुस्सा आ रहा है।

मैंने आश्चर्य से पूछा, क्यों ?

क्या मेरी आज्ञा के बिना तुम यहाँ नहीं आ सकती ?

मैंने हँस कर कहा, जरूर आ सकती हूँ।

फिर कल क्यों नहीं चली आयी ?

मैंने कोई उत्तर दिये बिना अमिय के हाथ से ब्रीफकेस लेकर टेबिल पर रख दिया।

अमिय ने टाई की गाँठ ढीली करते हुए सहज मुस्कान के साथ कहा, उसके बाद यह भी सुना कि तुम हॉस्टल में चली जाओगी।

क्या मुझे देखते ही तुम्हारा मन लड़ने को कर रहा है ?

फिर मैंने सुपर्णा की तरफ देख कर कहा, देख रही है, तेरा पतिदेव किस तरह लड़ रहा है ?

सुपर्णा बोली, तुम दोनों भाई-बहन के मामले में मैं दखल नहीं दूंगी।

अमिय ने कोट उतार कर कहा, कविता, अब एक बात सुन लो। जब तक कलकत्ते में रहोगी, यह घर छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती।

ठीक है, नहीं जाऊँगी। अब तो चैन मिला ?

जाना चाहोगी भी तो कौन जाने देगा ?

भाई रिपोर्टर, अमिय ने मेरे लिए क्या किया था, यह बताने पर भी तुम्हारे लिए विश्वास करना कठिन होगा, फिर भी बताऊँगी।

भविष्य में जो तुम्हारी जीवन-संगिनी बनने वाली है, उससे कहना कि बहुत दिन हो गये, उसका कोई पत्र नहीं मिला। तुम भी पत्र लिखना। दोनों का मेरा भरपूर प्यार।

८

इस संसार में जिस तरह धूप-छाँह का खेल चलता है, मेरे जीवन में उसी तरह भले-बुरे का खेल चल रहा है। हेमन्त चाचा का आश्रय छोड़कर जाते समय मुझे लगा था कि मेरे जीवन से कभी अँधेरा दूर नहीं होगा, लेकिन मजे की बात यह थी कि उसी के बाद मेरा जीवन हँसी-खुशी से झलमलाने लगा था।

पाँच-छः दिन बाद एक दिन ब्रेकफास्ट लेते समय अमिय बोला, जितने दिन तुम इस देश में रहोगी, इस घर को छोड़कर कहीं नहीं जाओगी।

मैंने आश्चर्य के पूछा, इसका मतलब ? इस देश में नहीं तो कहाँ रहूँगी ?

नहीं। तुम इस देश में नहीं रहोगी।

बेकार की बातें मत करो। मैं कहाँ जाऊँगी ?

फिर मुस्करा कर कहा, तुम दोनों पर सारी जिम्मेदारी डाल कर जिस तरह मौज कर रही हूँ, इस तरह मौज करने का कहाँ मौका मिलेगा ?

अमिय ने आश्चर्य से पूछा, क्यों ? तुम तो अपना खर्च दे रही हो !

मैंने हँसते हुए कहा, खर्च न देने पर क्या तुम घर को इस तरह चला पाते ?

खैर, अमिय बोला, पासपोर्ट बनाने वाला फार्म मिलते ही तुम उसके लिए अप्लाई कर दोगी।

क्यों ? पासपोर्ट ले कर मैं क्या करूँगी ?

तुम जैसी लड़की हो, इस देश में रहोगी तो बहुत दुख भोगोगी। तुमको यहाँ नहीं रहना है।

लेकिन मैं विदेश जा कर क्या करूँगी ?

ह्वेन यू विल कम टु द ब्रिज, यू विल क्रॉस द ब्रिज। यानी, जब जाओगी तब खुद समझ लोगी कि क्या करोगी ? अभी से वह सब नहीं सोचना है।

उस दिन इस सम्बन्ध में इससे अधिक बातें नहीं हुईं।

अमिय आफिस चला गया।

फिर दो-चार दिन बाद एक दिन आफिस से लौटकर मुझे पासपोर्ट का फार्म देते हुए अमिय ने कहा अब इसको फिल अप कर देना। उसके बाद सुपर्णा के साथ पैराडाइस स्टूडियो में जा कर अपना फोटो खिंचवा लेना।

लेकिन...

सुपर्णा बोली, अब इसमें कोई लेकिन नहीं। तेरी जैसी लड़की विदेश जाने पर न जाने क्या-क्या मौका ढूंढ़ लेगी।

एकाएक तू भी मुझे भगाने के लिए बेचैन होने लगी है?

अमिय ने गम्भीर हो कर कहा, अगर बहुत जल्दी शादी रचा कर नर्सिंग होम में भरती होने के लिए तैयार हो तो अलग बात है। विदेश जाने की जरूरत नहीं है।

बेकार की बातें करोगे तो थप्पड़ खाओगे!

मैं एकदम बेकार की बातें नहीं कर रहा हूँ। मैं सही कह रहा हूँ। तुम्हारी तरह लड़की के लिए इस देश में अकेली रहना असम्भव है।

क्यों?

चारों तरफ से इतने हिताकांक्षी लोगों का आगमन होगा कि तुम्हें भागने का रास्ता नहीं मिलेगा?

उसके बाद सचमुच एक दिन मुझे पासपोर्ट मिल गया।

अमिय ने पूछा, जहाज से जाओगी या प्लेन से?

कहाँ?

फिलहाल लन्दन।

उसके बाद?

उसके बाद जहाँ तुम्हारा भाग्य खींच ले जायेगा, तुम वहीं जाओगी।

लन्दन जा कर क्या करूँगी?

जब बाप-दादे का पैसा है, तब साल-दो साल और पढ़-लिख लो। उसके बाद तो जीवन-संग्राम शुरू हो जायेगा।

मैंने सिर झुकाये जरा गम्भीरता से पूछा, क्या सचमुच तुम मुझसे जाने के लिए कह रहे हो?

हाँ कविता! सती सावित्री के इस देश में तुम जैसी युवती अकेली शांति से नहीं रह पाओगी। इसी लिए तुम बाहर चली जाओ।

विदेश में क्या सभी सज्जन हैं?

नहीं। ऐसी बात नहीं है। लेकिन वहाँ रात के अंधेरे में छछूंदर की तरह

कोई तुम्हें परेशान नहीं करेगा। तुमको जो चाहेगा, वह साफ-साफ तुमसे वह कहने में आगा-पीछा नहीं करेगा।

मैं सिर झुकाये चुपचाप बैठी रही। मुझसे कोई उत्तर देते न बना। सोचने लगी। तरह-तरह की बातें सोचने लगी। न जाने क्या-क्या सोचती रही। अतीत और भविष्य के बारे में सोचती रही।

अमिय फिर बोला, विदेश का कोई प्रधान मन्त्री छाती ठोंक कर कह सकता है कि मैं दागला हूँ, बस्टर्ड हूँ! लेकिन इस देश में? छत्तीस करोड़ देवताओं के इस देश में हम नम्बरी बदमाश होते हुए भी शराफत का नकली चेहरा लगाये आराम से दिन गुजार देते हैं।

मैं और सुपर्णा दोनों हँसने लगी।

अमिय हमें हँसते देख कर चिढ़ गया और बोला, नहीं! यह हँसने की बात नहीं है। पता नहीं, हम कितनी विधवाओं और कितनी नौकरानियों का सर्वनाश करते हैं, फिर भी सज्जनता का रोल अदा करते हुए दुनिया को बेवकूफ बनाते हैं।

सुपर्णा ने पूछा, क्या विलायत में कोई किसी स्त्री का सर्वनाश नहीं करता?

हाई कोर्ट के मंजे हुए बैरिस्टर की तरह अमिय ने तुरन्त उत्तर दिया, लेकिन वहाँ के लोग नवजात शिशु को डस्टबीन में नहीं फेंक आते।

रात को खाना खाते समय अमिय बोला, मेरे एक अध्यापक डॉक्टर सरकार इस समय लन्दन में हैं। मैं उनको पत्र लिख दूँगा। वही तुम्हारा इन्तजाम कर देंगे। उसके बाद तुम खुद अपना इन्तजाम करने लायक बन जाओगी।

अगर न बनी तो?

लौट आना। इस घर का दरवाजा तुम्हारे लिए हमेशा खुला रहेगा।

सुपर्णा बोली, एक बार जाने पर तू कभी नहीं लौटेगी।

फिर जरा मुस्करा कर उसने कहा, तू वहाँ रहेगी तो हम भी कभी घूमने के लिए जा सकेंगे।

अमिय बोला, कभी का क्या मतलब? हम जरूर जायेंगे।

भाई रिपोर्टर, मैं जिन दिनों की बात कर रही हूँ, उन दिनों पासपोर्ट मिलना कठिन था, लेकिन विदेश जाना आसान। जहाज या प्लेन का किराया भी बहुत कम था। फिर भी कलकत्ता छोड़ कर विदेश जाने की बात सोचते ही मन उदास हो गया। इतने बड़े संसार में कोई मेरा अपना नहीं था, फिर भी अपना देश और अपना समाज छोड़ कर विदेश जाने के लिए मैं मन ही मन उत्साहित नहीं हो सकी। फिर सोचा, नहीं। चली जाऊँ। इस देश में रह

क्या होगा ? यहाँ मेरा कौन है ? यहाँ अकेली रहूँगी तो परिचित-अपरिचित हजार लोग हजार तरह की बातें करेंगे । लोग मुझे अच्छा नहीं कहेंगे । मेरी बुराई ही करेंगे । बचपन में माँ-बाप, किशोरावस्था में भाई-बहन, यौवन में पति और वृद्धावस्था में संतान के बिना इस देश में किसी स्त्री के लिए अकेली रहना संभव नहीं है । स्वाभाविक भी नहीं है । मैंने सोचा, यह जो अमिय है । एकदम भाई जैसा है । लेकिन क्या भाई-बहन की तरह हम एक साथ खुल कर हँस-बोल या घूम-फिर सकते हैं ? नहीं । हर देखने वाला हमें देख-देख कर एक-एक शृंगार-शतक की रचना करेगा । सोचा, जिस देश में भाई-बहन एक साथ तीर्थ करने नहीं जा सकते, उस देश में न रहना ही अच्छा है ।

फिर मन में सोचा कि जिसे जो कुछ कहना हो कहे, फिर भी यह मेरा देश है । यहाँ मैं अपनी इच्छा से हँस भी सकती हूँ और रो भी लेती हूँ । लेकिन विदेश में ऐसा करना क्या सम्भव होगा ? वहाँ मेरी खुशी पर कौन हँसेगा ? वहाँ मेरे दुख पर कौन आँसू बहायेगा ? फिर एक बार विदेश चले जाने पर तुरंत नहीं लौट पाऊँगी ।

अमिय, एक बात कहूँ ?

कहो ।

तुम यहीं मेरे लिए नौकरी का इन्तजाम कर दो । मैं आराम से अकेली रह लूँगी ।

अमिय ने मुस्कराते हुए कहा, भैयादूज पर टीका लगा कर क्या सभी पुरुषों के चित्त की चंचलता दूर कर सकोगी ?

क्या मैं ट्रॉय की हेलेन हूँ ?

अमिय ने एक बार कनखियों से मुझे देख कर सुपर्णा से कहा, तुम अपनी बान्धवी से कह दो कि इस संसार में सभी पुरुष मेरे समान संन्यासी नहीं हैं ।

सुपर्णा ने हँसते हुए अपने पति से कहा, आप संन्यासी हैं ?

ऑफ कोर्स !

आप जैसा कामी पुरुष क्या इस संसार में कोई है ?

कितने पुरुषों के बारे में आपको अनुभव है सुन्दरी ?

एक को देख कर जो अनुभव मिला, वही काफी है । और देखने की जरूरत नहीं है ।

अमिय ने गम्भीर होकर कहा, शास्त्र में कहा गया है कि धर्म की रक्षा के लिए संतानोत्पादन करना पुरुषों का प्रमुख कर्तव्य है ।

अब तक मैं मुँह दबाये मुस्कराये जा रही थी। अब बोली, क्या इसी लिए एक दिन भी पत्नी से अलग नहीं रह सकते ?

मिस चौधरी, यू आर मिसटेकन। मेरे स्नेहालिंगन के बिना मेरी पत्नी को नींद नहीं आती।

सुपर्णा ने फौरन विरोध किया, हे भगवान ! किस तरह झूठ बोलते हो ! मुझको चिढ़ाओगे तो मैं सारा भंडाफोड़ कर दूँगी।

मैंने तुरन्त सुपर्णा का हाथ पकड़कर कहा, प्लीज, अभी करना शुरू कर दो।

धीरे-धीरे दिन बीतते गये। अमिय ने मेरी विदेश-यात्रा की तैयारी भी लगभग पूरी कर ली। एक दिन आफिस से लौटते ही अचानक मुझे एक पत्र देकर कहा, हीयर इज ए लेटर फ्रॉम डॉक्टर सरकार। पढ़ लो। बड़ा एनकरेजिंग पत्र है।

पत्र पढ़ कर देखा, डॉक्टर सरकार ने लिखा है—अमिय, तुम्हारी बहन डॉक्टरेट कर लेगी तो यहाँ जरूर बढ़िया चान्स मिल जायेगा और मैं भी उसकी हर सहायता करूँगा। लगता है, तुम्हारी बहन को कोई दिक्कत नहीं होगी।

डॉक्टर सरकार का यह पत्र पाने के बाद विदेश जाने के लिए मैं भी उत्साहित हो उठी। मैंने अमिय और सुपर्णा से कहा, अगले महीने की सात तारीख को मेरा वाइवा है। उसके कई दिन बाद मुझे अपने रेजल्ट का पता चल ही जायेगा। अगर सचमुच डॉक्टरेट मिल गया तो सोचती हूँ कि चली जाऊँगी।

अमिय बोला, इसमें सोचने का क्या है ? तुमको यहाँ से भगाये बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा।

मैंने सुपर्णा से कहा, देख, तेरे पतिदेव का जरूर कोई इरादा है, नहीं तो वह मुझे भगाने के लिए इतना बेचैन क्यों हो उठा है ?

सुपर्णा बोली, मुझे भी ऐसा लगता है।

अमिय बोला, वह तो लगेगा ही। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे महापुरुष को भी लोगों ने बदनाम किया है तो मेरे जैसे महापुरुष को तुम लोग बदनाम करोगी ही। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

सुपर्णा ने मुँह बना कर कहा, आप महापुरुष हैं !

अमिय बोला, ए ग्रेट मैन इज नोन बाइ द नम्बर ऑफ हिज एनीमीज।

फिर हम तीनों हँस पड़े।

भाई रिपोर्टर, मुझे जल्दी ही पता चल गया कि लोगों का यह कहना कितना सही है कि सर आशुतोष मुखर्जी के निधन के बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय चौपट हो गया है। मुझे ऐसा पता इसलिए चला कि मैं भी उस विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट पा गयी !

मेरा रेजल्ट निकलने के बाद अमिय मानो नहाना-खाना भूल कर मुझे इंग्लैंड भेजने के काम में जुट गया। सचमुच उसने इसके लिए कितनी मेहनत की थी, यह तुम नहीं समझ पाओगे।

मेरे विदेश जाने के बारे में इतना लिखने की जरूरत नहीं थी, फिर भी लिखे बिना नहीं रहा गया। इस संसार में कुछ लोग कुछ विशेष काम करने के लिए आते हैं और अपना काम पूरा करने के बाद वे हमारी निगाह से ओझल हो जाते हैं। शायद अमिय भी वैसे लोगों में था। मेरे जीवन में नया अध्याय शुरू करने के लिए वह आया था। नहीं तो मेरे विदेश आने के साल भर के अन्दर कैन्सर से उसकी मृत्यु क्यों हो गयी ? मुझे पूरा विश्वास है कि यदि वह जीवित रहता तो मेरा जीवन इस तरह निराशा से भर न जाता।

अमिय को खोने के बाद मैं नये सिरे से समझ गयी कि संसार में मैं सिर्फ दुख भोगने के लिए आयी हूँ। भगवान मेरे चेहरे पर मुस्कान कभी बरदाश्त नहीं कर सकते।

९

अचानक एक पुराने दिन की बात याद आयी। उस समय बस स्कूल से निकल कर कालेज में गयी थी। थोड़ी-बहुत आजादी भी मिली थी और कुछ नये मित्र मिले थे। उनमें लड़कियां और लड़के दोनों थे। हँसी-खुशी के बीच दिन कटते जा रहे थे। कारण हो या न हो हँसती थी। अकारण घूमती-फिरती थी। अपरिचित भी परिचित लगते थे।

एक दिन मेरे तीन-चार मित्र मुझे एक तरह से जबर्दस्ती शिखा सरकार के घर ले गये। वहां जाने के बाद पता चला कि वे शिखा के चाचा से हाथ दिखाने के लिए पहुँचे थे।

हाथ की रेखाओं के सहारे भाग्य जानने के मामले में कभी मेरा कोई उत्साह नहीं था। फिर भी सबके बाद मैंने भी अपना हाथ शिखा के चाचा के आगे कर दिया।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मेरी हथेली पर एक नज़र दौड़ा कर उन्होंने मानो अपने आपसे कहा, बड़ा विचित्र हाथ है !

हम लोगों में से कोई कुछ पूछता, लेकिन उसके पहले ही शिखा ने पूछ लिया, कैसा विचित्र हाथ ?

चाचा ने बड़ी गम्भीरता से कहा, बहुत कम लड़कियों में ऐसा विचित्र हाथ देखने को मिलता है ।

शिखा ने जरा बेचैनी से पूछा, चाचा जी, जो कुछ बताना है, साफ-साफ बताइए न ।

चाचा ने झुक कर मेरा हाथ देखते हुए शिखा से कहा, सबके सामने नहीं बताऊँगा । लेकिन इतना समझ लो कि यह लड़की तुम सबसे बहुत आगे निकल जायेगी । हर बात में आगे रहेगी ।

उस दिन अपने मन में बड़ी विचित्र जिज्ञासा लिये घर लौटी थी । फिर लम्बे समय तक शिखा के घर नहीं गयी । कई बार छोटा-मोटा काम पड़ा, फिर भी नहीं गयी । फिर लगभग दो साल बाद कोई बहुत जरूरी काम पड़ा और शिखा के घर गयी । वहाँ जा कर देखा कि शिखा के चाचा के अलावा और कोई नहीं है । विवश होकर वहाँ घंटा भर रुकना पड़ा था ।

मुझे अच्छी तरह याद है कि उस दिन शिखा के चाचा ने मुझे देखते ही हँसते हुए पूछा था, कैसी हो ?

ठीक हूँ । आप कैसे है ?

मैं तो मजे मे हूँ । लेकिन तुम इतने दिन नही दिखाई पड़ी ?

मौका निकाल कर आ नहीं सकी ।

फिर शिखा के चाचा ने बिना किसी भूमिका के कहा, जरा अपना हाथ दिखाना ।

इच्छा न रहते हुए भी मैंने हाथ आगे किया । एक नही, मेरे दोनों हाथ अच्छी तरह देखने के बाद चाचा ने कहा, दो-चार बातें कहूँगा । लेकिन बुरा मत मानना ।

चाचा की बातों में आतरिकता थी । इसलिए मैंने कहा, बुरा क्यों मानूँगी । आप बतायें ।

पहली बात तो यह है कि तुम कभी किसी को अपना हाथ मत दिखाना ।

क्यों ?

क्योंकि तुम्हारे जीवन की सभी बातें तुम्हारे हाथों मे लिखी हुई हैं । दूसरों को इन सब बातों का पता न चले तो अच्छा है ।

मैं चुप रही।

चाचा अपनी धुन में मेरा हाथ देखते रहे। एक-एक रेखा देखकर वह न जाने क्या-क्या सोचने लगे। मुझे लगा कि वह अपने मन में हिसाब लगा रहे हैं। उसके बाद उन्होंने बहुत धीरे-धीरे कहा, तुम अपने जीवन में बहुत तरक्की करोगी।

ज्यों ही शिखा के चाचा ने यह बात कही, मैं हँसने लगी।

नहीं कविता, हँसने की बात नहीं है। तुम अपनी अधिकतर सहेलियों से ज्यादा पढ़ोगी। फिर नौकरी-चाकरी में इतना तरक्की करोगी कि...

मैं नौकरी करूँगी?

जरूर करोगी और तुम्हारा कर्मजीवन विदेश में बीतेगा। यानी, तुम विदेश में नौकरी करोगी।

मैंने अविश्वास की हँसी हँसते हुए कहा, विदेश में?

शिखा के चाचा ने काफी आत्मविश्वास के साथ कहा, तुम्हारा जीवन बहुत दूर देश में बीतेगा। आज तुम्हें यह भी बता रहा हूँ कि अचानक तुम्हारी मुलाकात ऐसे व्यक्ति से होगी, जो तुम्हारा हित चाहेगा। उस हिताकांक्षी की इच्छा से और प्रयास से तुम विदेश जाओगी!

मैंने हँस कर कहा, लेकिन अभी तो मैं ऐसी बातों की कल्पना भी नहीं कर सकती।

तुम्हारे जीवन में बार-बार ऐसी घटनाएँ घटेंगी, जिनके बारे में तुम सपने में भी नहीं सोच सकोगी।

जैसे?

बुरा तो नहीं मानोगी?

जी नहीं।

फिर मैं बता रहा हूँ। लेकिन इन बातों को तुम अपने तक रखना.

जरूर रखूँगी।

शिखा या किसी अन्य बांधवी को मत बताना। अपने किसी आत्मीयजन को भी नहीं।

जी नहीं। मैं किसी को नहीं बताऊँगी।

बार-बार तुम्हें अनेक पुरुषों के बहुत निकट सम्पर्क में आना पड़ेगा।

इसका क्या मतलब है?

इससे अधिक साफ-साफ बताने लायक तुम्हारी उम्र नहीं है।

मैं चुपचाप सोचती रही कि चाचा की इस बात का क्या मतलब हो सकता है।

इस तरह काफी देर हम दोनो चुप रहे। उसके बाद चाचा ने कहा, लेकिन तुम हार मानने वाली लड़की नहीं हो। कुछ भी हो जाय, तुम आगे बढ़ती रहोगी।

लड़कियों के लिए क्या बहुत आगे बढ़ना सम्भव है ?

अधिकतर लड़कियों के लिए सम्भव नही है, लेकिन तुमको बहुत आगे बढ़ना पड़ेगा।

चाचा जी, एक बात पूछूं ?

जरूर पूछो।

क्या मुझको शादी करनी पड़ेगी ?

क्यों, तुम शादी करना नही चाहती ?

जी नही।

मुझे भी नही लगता कि तुम शादी करोगी। फिर करोगी भी तो बहुत बाद मे।

शिखा के चाचा की बातें मैं करीब-करीब भूल चली थी। फिर अमिय ने जब मेरी विदेश-यात्रा का सारा प्रबन्ध कर लिया, तब अचानक मुझे इस चाचा की बातें याद आयी। चाचा की बातो को याद कर मैंने सोचा कि उनकी एक-एक बात सही निकलने लगी है।

कालेज छोड़ने के बाद शिखा से कोई सम्बन्ध भी नही था। उसके घर का पता भी भूल गयी थी। तीन-चार दिन कई जगह गयी, फिर बड़ी मुश्किल से शिखा के घर का पता मिला। लेकिन वहाँ जा कर देखा कि चाचा नही हैं। चाचा उन दिनो बारासत मे रहने लगे थे। बारासत का पता ले कर मैं चाचा के पास पहुँची।

पहले तो चाचा मुझे पहचान न सके। परिचय देने पर वह आश्चर्य-चकित हुए। फिर चाचा और चाची ने बड़े प्रेम से मुझे खाना खिलाया। उसके बाद चाचा को अकेला पा कर मैंने कहा, चाचा जी, आपकी बहुत सी बातें सही निकली हैं।

चाचा बोले, उस समय तुम छोटी थी, इस लिए मैं सारी बातें बता भी न सका था।

मैंने कुछ कहे बिना अपना हाथ आगे कर दिया।

दो-तीन मिनट मेरे दोनो हाथो को अच्छी तरह देखने के बाद चाचा ने पूछा, काफी पढ़-लिख लिया है न ?

एम० ए० करने के बाद रिसर्च किया है।

डॉक्टरेट मिल गया है ?

जी हाँ।

अब तुम्हें विदेश जाना चाहिए।

अगले हफ्ते के आखिर में लंदन जा रही हूँ।

चाचा ने अपनी धुन में हँस कर कहा, जाना ही पड़ेगा। लेकिन ..

लेकिन क्या ?

वहाँ अधिक दिन नहीं रहोगी।

भारत लौट आऊंगी ?

नहीं। कहीं और जाओगी।

फिर मैंने अपनी तरफ से कहा, आपने कहा था कि अचानक एक हिताकांक्षी की कोशिश से तुम विदेश जाओगी। वह भी सही निकला।

चाचा ने मेरी बात का जवाब दिये बिना कहा, इस बीच जरूर तुम्हारे जीवन में कोई आश्चर्यजनक और उल्लेखनीय घटना घटी है।

जी हाँ। घटी है।

ऐसी घटनाएँ और भी घटेंगी।

मैंने चौंककर कहा, और भी घटेंगी ?

उस समय तुम छोटी थी, इस लिए ये सब बातें नहीं बतायी थीं। लेकिन अब तुम बड़ी हो गयी हो, बहुत पढ़-लिख गयी हो, इस लिए तुम्हें सावधान कर रहा हूँ।

चाचा की बातें सुन कर मेरा मन उदास हो गया। शायद चाचा यह समझ गये, इसलिए तुरन्त बोले, लेकिन तुम अपने जीवन में घटिया किस्म के लोगों के सम्पर्क में नहीं आओगी। फिर ये सभी लोग तुम्हारा कोई न कोई उपकार करेंगे।

मैंने जरा गम्भीर हो कर कहा, अपने को लुटा देने पर तो अनेक पुरुष मेरा उपकार करेंगे।

नहीं। तुम अपने को कभी लुटा नहीं दोगी। लेकिन घटनाक्रम ऐसा होगा। लाख कोशिश करके भी तुम इन लोगों के हाथों से नहीं बच सकतीं।

अगर शादी कर लूं ?

चाचा ने काफी देर सोचने के बाद कहा, बहुत जल्दी तुम शादी नहीं करोगी।

फिर मैंने पूछा, क्या मेरा विदेश जाना ठीक रहेगा ?

तुमको जाना ही पड़ेगा। सिर्फ विदेश जाना नहीं, तुम्हारा अधिकांश कर्म-जीवन विदेश में बीतेगा।

फिर लम्बी साँस छोड़ कर कहा, चाचा जी, क्या मुझे जिन्दगी भर ऐसा अपयश मिलता रहेगा ?

चाचा ने मुस्करा कर कहा, विद्या, धन और प्रभाव की अधिकारिणी बनोगी। यश भी मिलेगा। फिर देश-विदेश घूम सकोगी। इन सारी अच्छी बातों के साथ दो-चार वैसी घटनाएँ भी घटेंगी। फिर क्यों अफसोस करती हो ?

फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद चाचा ने कहा, देखो, किसी भी मनुष्य की जिन्दगी सीधी लकीर नहीं होती।

स्वयं डॉक्टर सरकार ने लंदन एयरपोर्ट पर मेरा स्वागत किया। कस्टम्स एनक्लोजर के बाहर निकल कर मैंने उनको प्रणाम किया तो उन्होंने कहा, गॉड ब्लेस यू माइ चाइल्ड !

मैंने भी तुरन्त कहा, यस फादर, यू विल हैव टु लुक आफ्टर मी ऐज योर चाइल्ड।

आइ विल।

मैं जब लन्दन पहुँची थी, उस समय वहाँ शरत्कालीन छुट्टी चल रही थी। एयरपोर्ट से बकिंघम पैलेस रोड के एयरवेज टर्मिनल आते समय डॉक्टर सरकार ने कहा, और सात दिन मेरी छुट्टी है। ये कई दिन हम किसी काम की बात नहीं करेंगे। तुम इस बूढ़े के साथ दिन भर घूमती रहोगी।

कहाँ घूमेंगे ?

घूम-घूम कर शहर देखेंगे।

लेकिन यहाँ तो आपने सब कुछ देखा है। फिर आप मेरे लिए क्यों घूमेंगे ?

यह कलकत्ता, दिल्ली या बम्बई नहीं है। यहाँ जिन्दगी भर घूमते रहने पर भी सब कुछ नहीं देखा जा सकता।

मैं मोटर कोच के अन्दर बैठी आँखें फाड़-फाड़ कर खिड़की से लन्दन को देखने लगी थी।

दो-चार मिनट बाद डॉक्टर सरकार ने मुझसे कहा, बेंजामिन डिसरेली ने इस महानगर के बारे में क्या कहा था, जानती हो ?

जी नहीं।

एक बार उन्होंने कहा था, लन्दन इज़ ए नेशन नॉट ए सिटी।

मैं हँसी।

हँसने की बात नहीं है बेटा। वह शायद थोड़ा बढ़ा कर भी कह सकते

कि यह शहर छोटा सा विश्व है। लेकिन उन्होंने बहुत सही कहा था, लन्दन इज रूस्ट फॉर एवरी वर्ड !

मैं डॉक्टर सरकार की बातें सुन कर हंसती रही, लेकिन मेरी आँखें कोच की खिड़की से बाहर विश्व के एक महान नगर को देखने में व्यस्त थीं।

डॉक्टर सरकार ने मुस्करा कर कहा, इस शहर को जितना देखोगी, उतना ही लगेगा कि कुछ भी नहीं देख सकी। आज आराम करो। कल से हम घूमने निकलेंगे।

मैंने डॉक्टर सरकार से कहा, लेकिन आप जैसे वृद्ध को कष्ट देना क्या उचित होगा ?

डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, नो वन इज टु ओल्ड इन लन्दन ! फिर यह तो कलकत्ता नहीं है। शाम को लौट कर थोड़ी सी वाइन लेते ही जवानी लौट आती है।

मैं मुस्करायी।

हँसने की बात नहीं है बेटा ! इस महानगर में शरीर और मन को चंगा रखने के लिए हर तरह का इन्तजाम है।

मैंने हँसते हुए कहा, ऐसा इन्तजाम शायद हर बड़े शहर में है।

नहीं बेटा, यह बात नहीं है। न्यूयार्क बहुत बड़ा शहर है। लेकिन सारा शहर मानो स्टॉक एक्सचेंज है या कलकत्ते की डलहोजी-चौरंगी !

क्या आप अमरीका भी गये हैं ?

डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, सिर्फ किसी सुन्दरी के मन में नहीं जा सका, नहीं तो कहीं जाना बाकी नहीं है।

वयोवृद्ध डॉक्टर सरकार की बात सुन कर मैं खूब हँसी। उसके बाद पूछा, आपने विवाह नहीं किया ?

विवाह करता तो क्या इस तरह सीना तान कर तुम्हें अपने घर ले जाता ?

अचानक गम्भीर होकर डॉक्टर सरकार ने कहा, किसी दिन जबर्दस्ती दो बोतल फ्रेंच वाइन पिला देना। मैं अपने जीवन की सारी बातें बता दूंगा।

अगले पत्र में डॉक्टर सरकार के बारे में लिखूंगी। उनके जीवन के बारे में जान कर आश्चर्य करोगे।

१०

विदेश की धरती पर कदम रखते ही एक ऐसे सहृदय व्यक्ति से मुलाकात होगी, इसकी कल्पना भी नहीं की थी।

हैमस्टेड में डॉक्टर सरकार के घर मे पहुँचते ही उन्होंने मुझसे कहा, ट्रीट दिस हाउस ऐज योर ओन।

मैं सिर्फ मुस्कराती रही।

हँसने की बात नहीं है। आज से यह घर तुम्हारा है और मैं इस घर का एक आदमी हूँ।

चाय पीने के बाद डॉक्टर सरकार ने सब कुछ मुझे दिखा दिया और कहा, जिन्दगी भर अकेला रहते-रहते हाँफने लगा हूँ। अब मन करता है कि कोई मुझ पर हुक्म चलाये तो बड़ा अच्छा लगे।

यह सुन कर मैं जरा अनमनी हो गयी।

डॉक्टर सरकार बोले, यौवन में या प्रौढ़ावस्था मे आदमी अकेला रह लेता है, लेकिन वृद्धावस्था मे अकेला रहना कठिन हो जाता है।

इतनी देर बाद मैंने कहा, किसी रिश्तेदार को ला कर क्यों नही रखते?

रिश्तेदार! यानी आत्मीय जन?

डॉक्टर सरकार मानो चौंक पड़े। फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह बोले, पहले एक-दो रिश्तेदार थे, लेकिन अब कोई नही है।

आगे बढ़ कर मैं डॉक्टर सरकार के पास जा कर खड़ी हो गयी और हँस कर बोली, निराश न हों, मैं भी आपकी तरह हूँ।

अचानक डॉक्टर सरकार मुड़ कर बैठे और मेरी तरफ देख कर हँसते हुए बोले, मुझे भी ऐसी उम्मीद थी।

लन्दन में मेरे प्रवासी जीवन की शुरुआत बड़ी अच्छी रही।

डॉक्टर सरकार के फ्लैट मे छोटे बड़े तीन कमरे थे। उनमे कौन ड्राइंगरूम था और कौन बेडरूम, समझना मुश्किल था। हर कमरे मे सैकड़ों किताबें थीं। हर कमरे मे दिवान था। पढ़ते-पढ़ते या लिखते-लिखते थक जाने पर किसी भी कमरे में सोया जा सकता था। कागज, कलम और चश्मे भी जहाँ-तहाँ पड़े थे। और भी बहुत कुछ थे। लेकिन उन सबमें सबसे पहले फ्रेंच वाइन और मार्टिनी की खाली बोतलों पर निगाह पड़ती थी। समझ गयी कि उन बोतलों को खाली करके डॉक्टर सरकार ने अपने मन को भरने की कोशिश की थी।

शाम को डॉक्टर सरकार मुझे ले कर पैदल हैमस्टेड होथ गये। पहाड़ पर वैसा सुन्दर बाग देख कर बड़ा अच्छा लगा। मैंने सोचा था कि वहाँ और कुछ देर रहूँगी, लेकिन उन्होंने कहा, चलो। वेल वाक होते हुए घर चलें।

वेल वाक! नाम सुन कर कुछ भी न समझ सकी। चुपचाप डॉक्टर सरकार के साथ चलती रही। हैमस्टेड हाई स्ट्रीट के पास ही वेल वाक था।

अचानक डॉक्टर सरकार ने मुझसे पूछा, महान कवि कीट्स का नाम सुना है न?

जी हाँ।

वह यहाँ बहुत दिनों तक थे।

मैंने आश्चर्य से चारों तरफ देखा।

डॉक्टर सरकार ने दायें हाथ इशारा करके कहा, उधर कुछ दूर जाने पर वेस्ट वर्थ प्लेस है। वहीं बाग में बैठ कर कीट्स ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'ओड टु ए नाइटिंगेल' लिखी थी।

अच्छा!

डॉक्टर सरकार अपनी धुन में उस कविता की पंक्तियाँ पढ़ने लगे,

My heart aches, and a drowsy numbness pains
My sense, as though of hemlock I had drunk,
Or emptied some dull opiate to the drains
One minute past, and le the-wards had sunk...

याद है न यह कविता?

याद है, लेकिन आप की तरह कंठस्थ नहीं कर सकी।

और एक कविता की पंक्तियाँ याद पड़ रही हैं,

A thing of beauty is a joy for ever:
Its lovliness increases; it will never
Pass into no thingness; but still will keep
A lower quiet for us and a sleep
Full of sweet dreams, and health, and...

डॉक्टर सरकार को पूरी कविता पढ़ने का मौका न दे कर मैंने कहा, आज कल के लड़के-लड़कियाँ इस तरह किसी चीज को कंठस्थ नहीं कर सकते।

लेकिन तुम लोग जो कुछ कर सकते हो, हम नहीं कर सकते।

आपको देख कर लगता है कि आप सब कुछ कर सकते हैं।

मेरी बात के जवाब में डॉक्टर सरकार ने एक कविता की कुछ पंक्तियां पढ़ी,

बाहर से इस तरह मत देखो
मुझको तुम देखो मत दूर से।
मुझको मेरे सुख मे न पाओगे,
मुझको मेरे दुख में न पाओगे,
मेरे चेहरे मे मुझको क्या देखोगे ?

क्या रवीन्द्रनाथ भी कंठस्थ है ?

उस समुद्र को पार करना सम्भव है ? हाँ, कभी-कभी उस समुद्र मे नहा लेता हूँ।

घर लौट कर डॉक्टर सरकार एक बोतल फ्रेंच वाइन ले कर बैठे। मुझसे पूछा, तुमको क्या आफर कर सकता हूँ ?

मैंने मुस्करा कर कहा, इसकी जरूरत नही है।

फिर डॉक्टर सरकार ने मुस्करा कर कहा, ऐसे मौके पर साहचर्य मिलने से बड़ी खुशी होती है।

मैं तो आपके सामने बैठी हूँ।

नो-नो, नॉट दैट।

आप ड्रिंक कीजिए। मैं बात करूँगी।

यह ह्विस्की नही, फ्रेंच वाइन है। डरने का कोई कारण नहीं है।

मेरी जैसी बंगाली लड़की के लिए दोनो बराबर हैं।

प्लीज डोंट से दैट। फ्रेंच वाइन शरत का बादल है—एकदम साफ-सुथरा और कोई उमड़-घुमड़ नही। कालिदास के मेघदूत की तरह निर्मल धार वाली। लेकिन ह्विस्की है…

सावन का धारासार !

बस ! बस ! गरजना और बरसना दोनों भयानक।

फिर डॉक्टर सरकार ने बोतल से अमृत-धार दो गिलासों मे उड़ेलते हुए कहा, जब विदेश में आयी हो, तब इसकी थोड़ी-बहुत आदत रहनी चाहिए।

चीयर्स !

चीयर्स !

गिलास से एक घूँट पी कर डॉक्टर सरकार ने कहा, तुम्हारा नुकसान करने के लिए मैंने तुम्हें वाइन पीने नहीं दी।

जी नही। आप ऐसा न कहें।

तुम सुन्दरी, सुशिक्षिता और सबसे बढ़ कर युवती हो। ज्यादा सीधी सरल बनोगी तो शायद तुम्हारा नुकसान होगा। इस लिए....

लेकिन सुना है कि हमारे देश की तुलना में इस देश में मेरी जैसी लड़कियां अधिक आराम से अकेली रह सकती हैं।

हां। कई बातों में यह देश अच्छा है। लेकिन यह बताना मुश्किल है कि कब तुम असावधान हो जाओ और कब कौन तुम्हारा नुकसान कर दे।

मैं चुपचाप सुनती रही। डॉक्टर सरकार ने फीकी मुस्कान के साथ कहा, यहां सभी लोग सम्पदा और सम्भोग के नशे में बदहवास हैं। यहां तक कि हमारे देश के जो लोग यहां आते हैं, वे सब भी बस उपभोग करना चाहते हैं।

मुझे कोई जवाब देते न बना। मैं चुप रही।

डॉक्टर सरकार ने एक ही बार में गिलास खाली करके कहा, देखो बेटा, विदेश में रहने का आज तुम्हारा पहला दिन है। इसलिए तुम्हें सावधान कर देना चाहता हूं कि बिना अच्छी तरह जांचे-परखे कभी किसी पर विश्वास या श्रद्धा मत करना।

मैंने कहा, आप तो हैं। मुझे क्यों इतना डरना है?

नहीं बेटा नहीं, मुझ पर भी विश्वास मत करना। आज न सही, कभी तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करूंगा, यह कौन कह सकता है?

असम्भव है!

फिर गिलास भर कर डॉक्टर सरकार ने जरा रुखाई से कहा, क्यों असम्भव है?

मैंने जोर दे कर कहा, हजार बार असम्भव है।

हाथ का गिलास नीचे रख कर जरा उदास स्वर में डॉक्टर सरकार ने कहा, नहीं-नहीं, असम्भव नहीं है। इनसान कब जानवर बन जाता है, कोई नहीं बता सकता।

फिर डॉक्टर सरकार ने मेरी तरफ देख कर पूछा, मुझे देख कर क्या लगता है? क्या मैं बड़ा सज्जन हूं?

मैंने हंसते हुए कहा, सज्जन-असज्जन की बात नहीं है। लेकिन आपको देखते ही लगता है कि आप बड़े विद्वान और आदर्शवान पुरुष हैं।

राइट यू आर। सब यही सोचते हैं, लेकिन मैं तो जानता हूं कि मैं कितना आदर्शवान हूं।

आप क्या कह रहे हैं?

मैं सही कह रहा हूं। कभी मैंने कितनी ही छायाओं को भोगा है।

' जब तुमको बेटा कहा है, जब तुम मेरी बेटी की तरह हो, तब तुमसे झूठ नहीं कहूँगा। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि कभी किसी को इस तरह बाहर से मत देखना, दूर से मत देखना—मुझको तुम देखो मत दूर से।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद मैंने कहा, मैं भी तो कालेज और यूनीवर्सिटी में पढ़ चुकी हूँ, लेकिन···

मैं उन छात्राओं की बात नहीं कर रहा हूँ। जो छात्राएँ अध्यापिकाएँ भी थीं और जो मेरे अंडर मे रिसर्च करती थी, उनमे से अनेक इस बैचेलर अध्यापक को लेकर ऐसा पागलपन करती थी कि मैं अपने को वश मे नही रख सकता था।

बड़े आश्चर्य की बात है!

इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है? इस संसार में कुछ भी आश्चर्य नहीं है। हम जिनको अधिक अच्छा समझते हैं, उनमें अधिकांश कितने बुरे हैं कि सोचा नहीं जा सकता। फिर जिनको हम बुरा कहते हैं, उनमें भी कितने महान हैं, हम इसकी कल्पना नही कर सकते।

मेरा गिलास उस समय तक खाली नहीं हुआ था। मेरे गिलास की तरफ नजर पड़ते ही डॉक्टर सरकार ने कहा, यह क्या! अभी तक खत्म नहीं किया? चटपट खत्म कर लो।

क्यों जल्दी मचा रहे है?

और एक राउंड नही लोगी?

जी नहीं, अब मै नहीं लूँगी।

यह कैसे हो सकता है बेटा? बूढ़े बेटे की बात माँ को माननी पड़ती है।

मेरे लन्दन प्रवास के दौरान उस पहली शाम को उस बूढ़े बेटे के अनुरोध पर मुझे फ्रेंच वाइन के एकाधिक गिलास पीने पड़े थे। डॉक्टर सरकार ने भी पिया था। पीते हुए उन्होने अपनी कहानी सुनायी थी।

डॉक्टर सरकार बंगलादेश के एक प्रसिद्ध जमींदार घराने के लड़के थे। आज की बात नहीं है, आज से लगभग सौ वर्ष पहले उनकी जमींदारी से साढ़े तीन लाख रुपये की आमदनी होती थी। उतने बड़े जमीदार के बेटे होते हुए भी डॉक्टर सरकार के पिता में जमीन-जायदाद और धन-दौलत के प्रति विशेष आकर्षण नहीं था। पढ़ने-लिखने में उनकी अधिक रुचि थी। पैसे की चिंता नहीं थी। इस लिए कलकत्ते के मकान में रह कर उन्होने पढ़ाई की और एक-एक कर अंग्रेजी, संस्कृत और दर्शनशास्त्र मे एम० ए० किया!

यह सुन कर मैं चौंक पड़ी और मेरे मुँह से निकला, अच्छा?

डॉक्टर सरकार ने आत्मसंतोष की हँसी हँस कर कहा, पिता जी ने

पढ़ना-लिखना पसन्द करते थे। मैंने कभी उनको ताश या शतरंज खेलते, या वैठकवाजी करते नहीं देखा।

मैंने भी सुना है कि कुछ जमींदार संगीत और विद्या के बड़े प्रेमी थे। उसी में उन्होंने अपना जीवन विता दिया।

मेरी वात को मानो लोक कर डॉक्टर सरकार ने कहा, लेकिन कुछ जमींदार ऐसे भी थे, जो जिन्दगी भर सुरा और सुन्दरी में डूबे रहे।

मैंने भी ऐसा सुना है।

मेरे दादा इस दूसरी तरह के जमींदार थे।

सुन कर मैं हँसने लगी।

हँस रही हो? मेरे दादा की कितनी रखैलें थीं, सुनोगी तो तुम्हें आश्चर्य होगा। कम से कम दस-वारह।

मैं फिर हँसने लगी।

डॉक्टर सरकार ने भी हँसते हुए कहा, दादा जी की दो रखैलें तो हमारे घर में ही रहती थीं। वचपन में मैं उनको गोरी दादी और गुलावी दादी कहता था।

आपकी असली दादी इस पर आपत्ति नहीं करती थीं?

नहीं। सभी जमींदार घरों में यह वड़ी मामूली वात थी।

आपके पिता जी में ये सव दोष नहीं थे?

एकदम नहीं।

डॉक्टर सरकार ने थोड़ी देर न जाने क्या सोच लिया, फिर कहा, मेरी माँ वहुत अच्छी नहीं थीं।

क्यों?

वह भी तो जमींदार घराने की वेटी थीं। इस लिए विद्वान और सीधा-सरल पति पा कर वह सुखी नहीं हो सकी थीं। मेरे एक दूर के रिश्ते के चाचा और पिता जी की जमींदारी के एक मैनेजर के साथ ही उनका···

आप क्या कह रहे हैं?

हाँ वेटा, मैं ठीक कह रहा हूँ। इसके अलावा माँ ड्रिंक किये विना नहीं रह सकती थीं।

यह सब सुन कर मेरा मन वड़ा उदास हो गया। मैंने कहा, सचमुच ऐसी वातें हमें अविश्वसनीय लगती हैं।

विश्वास करो वेटा, इसमें एक भी वाक्य अतिरंजित नहीं है।

नहीं, मैं ऐसा नहीं कह रही हूँ।

मैं देखने में हूवहू पिता जी की तरह हूँ। ढूँढ़ने पर अगर मिल जाय तो तुम्हें

वह अलबम दिखाऊँगा। देखोगी कि मेरी शक्ल मेरे पिता जी की शक्ल से कितनी मिलती-जुलती है।

आश्चर्य है।

डॉक्टर सरकार ने मेरी बात पर ध्यान न दे कर कहा, लेकिन मेरे और दो भाइयों को देखोगी तो वह फर्क समझ में आ जायेगा। वे दोनों मेरे पिता जी के बेटे नही है।

मैंने कोई मन्तव्य नही किया और न कोई प्रश्न। मैं चुप रही।

फिर डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, मेरे चरित्र में दो-तिहाई गुण पिता जी के हैं तो एक-तिहाई माँ के। इस लिए मुझमे विद्या के प्रति प्रेम है तो मौज-मस्ती का शौक भी।

आपने शादी क्यो नही की ?

वैसी माँ का बेटा हो कर शादी करता भी तो क्या सुख होता ?

इसके बाद हम दोनों थोड़ी देर चुप रहे।

फिर डॉक्टर सरकार बोले, एअरपोर्ट मे ही तुम्हे बेटा क्यो कहा, जानती हो ? बेटी को हम प्यार से घर में बेटा भी कहते हैं। फिर हर बेटी को हम माँ की तरह देखते हैं।

जी हाँ। आपने वैसा सम्बोधन क्यो किया ? सम्भवतः मैं आपकी बेटी जैसी हूँ, इस लिए।

नहीं। तुमको देखते ही लगा कि यदि मेरी माँ तुम्हारी तरह शान्त और कोमल होती तो कितना अच्छा होता !

मैंने हँसते हुए कहा, अब मैं भी अगर कहूँ कि बाहर से इस तरह मत देखो, तो ?

मेरी बात सुन कर डॉक्टर सरकार भी हंसे। फिर बोले, कोई हर्ज नही, कह सकती हो। लेकिन तुम्हें देखते ही लगता है कि तुम्हारे अन्दर कोई गन्दगी नहीं है, कोई दुराव-छिपाव भी नही।

देख कर जो कुछ लगता है, क्या वही सही है ?

लेकिन मेरा मन कह रहा है कि तुम बहुत पवित्र हो। इसी लिए तुम्हे बेटा, यानी माँ कह कर पुकारने लगा हूँ।

मैं सिर नीचा किये चुपचाप बैठी रही। मैं किसी तरह यह कह न सकी कि आपका अनुमान गलत है। मैं अच्छी नहीं हूँ। मैंने प्रति दिन शराब पी है और अविवाहिता होते हुए भी रात-रात भर एक पुरुष की कामना-वासना की अग्नि मे स्वेच्छा से अपनी आहुति दी है।

पढ़ना-लिखना पसन्द करते थे। मैंने कभी उनको ताश या शतरंज खेलते, या बैठकबाजी करते नहीं देखा।

मैंने भी सुना है कि कुछ जमींदार संगीत और विद्या के बड़े प्रेमी थे। उसी में उन्होंने अपना जीवन बिता दिया।

मेरी बात को मानो लोक कर डॉक्टर सरकार ने कहा, लेकिन कुछ जमींदार ऐसे भी थे, जो जिन्दगी भर सुरा और सुन्दरी में डूबे रहे।

मैंने भी ऐसा सुना है।

मेरे दादा इस दूसरी तरह के जमींदार थे।

सुन कर मैं हँसने लगी।

हँस रही हो? मेरे दादा की कितनी रखैलें थीं, सुनोगी तो तुम्हें आश्चर्य होगा। कम से कम दस-बारह।

मैं फिर हँसने लगी।

डॉक्टर सरकार ने भी हँसते हुए कहा, दादा जी की दो रखैलें तो हमारे घर में ही रहती थीं। बचपन में मैं उनको गोरी दादी और गुलाबी दादी कहता था।

आपकी असली दादी इस पर आपत्ति नहीं करती थीं?

नहीं। सभी जमींदार घरों में यह बड़ी मामूली बात थी।

आपके पिता जी में ये सब दोष नहीं थे?

एकदम नहीं।

डॉक्टर सरकार ने थोड़ी देर न जाने क्या सोच लिया, फिर कहा, मेरी माँ बहुत अच्छी नहीं थीं।

क्यों?

वह भी तो जमींदार घराने की बेटी थीं। इस लिए विद्वान और सीधा-सरल पति पा कर वह सुखी नहीं हो सकी थीं। मेरे एक दूर के रिश्ते के चाचा और पिता जी की जमींदारी के एक मैनेजर के साथ ही उनका···

आप क्या कह रहे हैं?

हाँ बेटा, मैं ठीक कह रहा हूँ। इसके अलावा माँ ड्रिंक किये बिना नहीं रह सकती थीं।

यह सब सुन कर मेरा मन बड़ा उदास हो गया। मैंने कहा, सचमुच ऐसी बातें हमें अविश्वसनीय लगती हैं।

विश्वास करो बेटा, इसमें एक भी वाक्य अतिरंजित नहीं है।

नहीं, मैं ऐसा नहीं कह रही हूँ।

मैं देखने में हूबहू पिता जी की तरह हूँ। ढूंढ़ने पर अगर मिल जाय तो तुम्हें

वह अलबम दिखाऊँगा। देखोगी कि मेरी शक्ल मेरे पिता जी की शक्ल से कितनी मिलती-जुलती है।

आश्चर्य है।

डॉक्टर सरकार ने मेरी बात पर ध्यान न दे कर कहा, लेकिन मेरे और दो भाइयों को देखोगी तो यह फर्क समझ में आ जायेगा। वे दोनों मेरे पिता जी के बेटे नहीं है।

मैंने कोई मन्तव्य नहीं किया और न कोई प्रश्न। मैं चुप रही।

फिर डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, मेरे चरित्र मे दो-तिहाई गुण पिता जी के हैं तो एक-तिहाई माँ के। इस लिए मुझमे विद्या के प्रति प्रेम है तो मौज-मस्ती का शौक भी।

आपने शादी क्यों नही की ?

वैसी माँ का बेटा हो कर शादी करता भी तो क्या सुख होता ?

इसके बाद हम दोनों थोड़ी देर चुप रहे।

फिर डॉक्टर सरकार बोले, एअरपोर्ट में ही तुम्हे बेटा क्यों कहा, जानती हो ? बेटी को हम प्यार से घर में बेटा भी कहते हैं। फिर हर बेटी को हम माँ की तरह देखते हैं।

जी हाँ। आपने वैसा सम्बोधन क्यों किया ? सम्भवतः मैं आपकी बेटी जैसी हूँ, इस लिए।

नही। तुमको देखते ही लगा कि यदि मेरी माँ तुम्हारी तरह शान्त और कोमल होती तो कितना अच्छा होता !

मैंने हँसते हुए कहा, अब मैं भी अगर कहूँ कि बाहर से इस तरह मत देखो, तो ?

मेरी बात सुन कर डॉक्टर सरकार भी हंसे। फिर बोले, कोई हर्ज नहीं, कह सकती हो। लेकिन तुम्हें देखते ही लगता है कि तुम्हारे अन्दर कोई गन्दगी नहीं है, कोई दुराव-छिपाव भी नही।

देख कर जो कुछ लगता है, क्या वही सही है ?

लेकिन मेरा मन कह रहा है कि तुम बहुत पवित्र हो। इसी लिए तुम्हे बेटो, यानी माँ कह कर पुकारने लगा हूँ।

मैं सिर नीचा किये चुपचाप बैठी रही। मैं किसी तरह यह कह न सकी कि आपका अनुमान गलत है। मैं अच्छी नहीं हूँ। मैंने प्रति दिन शराब पी है और अविवाहिता होते हुए भी रात-रात भर एक पुरुष की कामना-वासना की अग्नि में स्वेच्छा से अपनी आहुति दी है।

भाई रिपोर्टर, सच बोलना जो इतना कठिन है, इसके पहले मुझे इसका ज्ञान नहीं था। इस संसार के सभी मनुष्य हर समय अपने को महान सिद्ध करना चाहते हैं। उसी तरह वे प्रचार भी करते हैं। लेकिन हर मनुष्य के जीवन में एक ऐसा समय आता है, जब वह अपने जीवन की नितान्त गुप्त बातें किसी प्रियतम व्यक्ति को बताना चाहता है। तुम्हीं मेरे वह प्रियतम भाई और मित्र हो। है न ?

दूसरे दिन सवेरे बहुत देर से हम-दोनों की नींद खुली। मैं अपने कमरे से निकली तो डॉक्टर सरकार ने मुझसे पूछा, कहो बेटा, नये देश में नये बेटे के घर में आकर रात को सो सकी थी न ?

सवेरे सो कर उठते ही ऐसा मधुर सम्बोधन सुन कर मेरे मन-प्राण भर गये। मैंने हँस कर कहा, क्या बेटे के घर आकर भी माँ को नींद नहीं आयेगी ?

डॉक्टर सरकार ने दो कदम आगे बढ़ कर मेरे माथे को चूमा और कहा, चटपट तैयार हो जाओ। ब्रेकफास्ट खाने के बाद चल देंगे।

कहाँ जायेंगे ?

तुमको यह शहर दिखाना है न ?

इससे आपके काम-काज में नुकसान नहीं होगा ?

नहीं, कोई नुकसान नहीं होगा।

फिर डॉक्टर सरकार ने हाथ घड़ी देख कर कहा, हम घंटे भर में निकल जायेंगे तो बकिंघम पैलेस में चेंजिंग द गार्डस देख सकेंगे।

हम घंटे भर के अन्दर ही निकल पड़े। जब हम बकिंघम पैलेस के सामने पहुँचे, उस समय सवा ग्यारह बजे थे। चेंजिग द गार्डस साढ़े ग्यारह बजे शुरू होने वाला था, लेकिन वहाँ पहले से भीड़ जुटने लगी थी। भीड़ में अधिकांश ट्यूरिस्ट थे। कुछ अंग्रेज अपने छोटे-छोटे बच्चों को ले कर आये थे।

मैंने बचपन से जिस बकिंघम पैलेस की कहानी सुनी थी, जिसके बारे में किताबों में पढ़ा था, उसके सामने पहुँच कर बहुत अच्छा लगा। लेकिन चारों तरफ लोगों को देख कर और भी अच्छा लगा। अपनी हँसी-खुशी से हर आदमी ने मानो मुझे मुग्ध कर दिया। उन लोगों में कोई भी असाधारण नहीं था। सभी सामान्य मध्यवित्त परिवारों के लोग थे।

हमारे देश में तो हँसी-खुशी और उमंग से भरपूर लोग मुश्किल से दिखाई पड़ते हैं। इसमें शक नहीं कि बहुत से लोग खूब हँसी-मजाक करते हैं और हो-हल्ला मचाते हैं, लेकिन उनका चेहरा देखते ही पता चल जाता है कि वे कितने

थके-मादे और शायद हारे हुए भी हैं। चेंजिंग द गार्डस बहुत अच्छा लगा, लेकिन हँसी-खुशी से भरे उतने लोगों को देख कर और भी अच्छा लगा।

डॉक्टर सरकार बोले, राजप्रासाद के रूप में बकिंघम पैलेस बहुत अधिक पुराना नहीं है।

मैंने कहा, लेकिन इस बकिंघम पैलेस के बारे में इतना सुना है और इतना पढ़ा है कि लगता है, यह बहुत पुराना है।

राजप्रासाद के रूप में महारानी विक्टोरिया ने सबसे पहले इस महल का उपयोग किया, लेकिन यह भी नियमित रूप से नहीं।

अच्छा ?

हाँ। सप्तम एडवर्ड ही सबसे पहले इस महल को हर समय के लिए इस्तेमाल में लाये।

अब तो यहाँ की रानी एलिजाबेथ द सेकण्ड यहीं रहती हैं ?

हाँ। लेकिन रानी बनने के बाद तीन महीने तक वह क्लारेन्स हाउस में ही थी।

कांस्टिट्यूशन हिल और वेलिंगटन आर्च का चक्कर लगा कर हम ग्रीन पार्क के बगल से चले। रिज होटल डेवनशायर हाउस दूर छूट गये। फिर हम लैंकेस्टर हाउस के सामने पहुँचे। उस समय वहाँ कोई अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन चल रहा था। इस लिये हम उसके अन्दर नहीं जा सके।

डॉक्टर सरकार बोले, पैलेस के नाम से मशहूर महलों को छोड़ दिया जाय तो लन्दन में इतना सुन्दर भवन नहीं है।

यहाँ कौन रहते हैं ?

इस समय यह सरकारी अतिथिगृह है। कभी-कभी यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी हुआ करता है।

लैंकेस्टर हाउस के पास ही सेण्ट जेम्स पैलेस है। इतिहास के पृष्ठों पर बार-बार इसका उल्लेख हुआ है।

उसी के पास क्लारेंस हाउस था।

डॉक्टर सरकार बोले, रानी की माँ क्वीन एलिजाबेथ यहीं रहती हैं।

फिर जरा रुक कर डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, अगर इस तरह तुम्हें लन्दन दिखाऊँगा तो कितने दिन लगेंगे, बता सकती हो ?

कितने दिन लगेंगे ?

यही दो-तीन साल।

मैंने हँसते हुए कहा, फिर तो मैं यह शहर नहीं देख पाऊँगी।

इस पर डॉक्टर सरकार ने जरा उत्तेजित होकर पूछा, क्या तुम यहाँ अधिक दिन नहीं रहोगी ?

क्या मेरे भाग्य में इतना सुख और इतना प्यार लिखा है ?

डाक्टर सरकार ने हँसते हुए मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा, यह तो माँ जैसी बात नहीं हुई।

यह सुन कर मेरी गम्भीरता और उदासीनता न जाने कहाँ गायब हो गयी। मैं हँसने लगी और बोली, जी नहीं। अब ऐसी बात नहीं कहूँगी।

फिर डॉक्टर सरकार ने कहा, आज अधिक नहीं घूमेंगे। चलो, कुछ खाने के बाद मार्बल आर्च के पास बैठ कर बात करें।

सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, मुझे पहले यह मालूम नहीं था कि किसी वृद्ध का सान्निध्य, साहचर्य और हँसी-मजाक इतने मधुर और सुखदायी हो सकते हैं।

मुझे यही पता था कि यौवन में पहुँच कर बूढ़े-बूढ़ियों की उपेक्षा और अनादर करना ही नियम है। मैंने अपनी उम्र के किसी लड़के या लड़की को किसी प्रौढ़ से दोस्ती करते नहीं देखा। चैत की पतझड़ के पत्ते की तरह ये प्रौढ़ उपेक्षित रहते हैं। लेकिन इस वृद्ध डॉक्टर सरकार को देख कर मैं समझ गयी कि परिणत उम्र में परिणत मन का सौन्दर्य और उसका माधुर्य सचमुच अतुलनीय है। सवेरे उदयाचल के पीछे से उगते और शाम को अस्ताचल की आड़ में छिपते सूर्य के रूप ने ही हर युग के लाखों करोड़ों क्या, सभी मनुष्यों को मुग्ध किया है। इसी सूर्य के प्रकाश से हम प्रकाशित हैं। यही हमारी प्राण-शक्ति का मूलाधार है। शायद इसी लिए बाल्यावस्था और वृद्धावस्था का रूप इतना सुन्दर और मनोरम है।

आज अचानक मुझे जरूरी काम से टोरेंटो जाना पड़ रहा है। इस लिए बहुत व्यस्त हूँ। फिर भी तुम्हें चिट्ठी लिखे बिना नहीं रह सकी।

तुम दोनों मेरा भरपूर प्यार लेना।

आदरणीया दीदी

आपकी चिट्ठियाँ पढ़ कर सचमुच बड़ा अच्छा लग रहा है। शुरू में जब आपने बताया कि चिट्ठियों में मैं तुम्हें अपने जीवन की *विचित्र कहानी लिखूंगी*, उस समय मैंने विशेष उत्साह का अनुभव नहीं किया था। लेकिन अब आपकी चिट्ठियाँ पढ़ कर मैं सिर्फ आपके विचित्र जीवन की कहानी नहीं जान रहा हूँ, बल्कि मनुष्य के विविध विचित्र रूप भी देख रहा हूँ। इसके अलावा और भी बहुत कुछ जानने का मौका मिल रहा है।

आपकी तारीफ करने के लिए यह पत्र नहीं लिख रहा हूँ। जो साँवली लड़की आपको देवी जैसी मानती है और आपके प्रति वैसी ही श्रद्धा-भक्ति रखती है, फिर आपको विश्वास है कि जिसके कारण मेरा कल्याण हो रहा है, श्री वृद्धि हो रही है, उसी लड़की ने एक दिन अचानक एक एरोग्राम ला कर मुझे दिया और कहा, दीदी को पत्र लिखिए।

मैंने कहा, अभी तो दो-तीन दिन पहले हम दोनों ने दीदी को पत्र लिखा, फिर आज लिखने की क्या जरूरत पड़ गयी?

उसने हँसते हुए कहा, सख्त जरूरत है, तभी तो।

मैंने आश्चर्य से उसकी तरफ देख कर पूछा, कौन ऐसी सख्त जरूरत पड़ गयी?

उसने अचानक हँसते हुए मेरे सामने बैठ कर कहा, अच्छा, आप तो स्वीकार करते हैं कि रूप-गुण और आचार-व्यवहार की दृष्टि से आपकी दीदी की कोई तुलना नहीं होती।

मैंने दोनों बाँहें उसके गले में डाल कर विनोद भरे स्वर में कहा, *सुन्दरी, तुम अगर मेरे जीवन में न आती तो शायद मैं इसी दीदी से*···

उसने मुझे अपनी बात पूरी करने का मौका न दे कर मेरी बाँह झटक दी और बिगड़ कर कहा, आप इस तरह की गंदी बातें करेंगे तो मैं कभी आपके पास नहीं आऊँगी।

दीदी, आप तो जानती हैं कि वह साँवली लड़की बहुत जल्दी रूठ जाती है। फिर जब वह रूठ जाती है, देखने में बहुत अच्छी

इस पर डॉक्टर सरकार ने जरा उत्तेजित होकर पूछा, क्या तुम यहां अधिक दिन नहीं रहोगी ?

क्या मेरे भाग्य में इतना सुख और इतना प्यार लिखा है ?

डाक्टर सरकार ने हँसते हुए मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा, यह तो मां जैसी बात नहीं हुई ।

यह सुन कर मेरी गम्भीरता और उदासीनता न जाने कहां गायब हो गयी । मैं हँसने लगी और बोली, जी नहीं । अब ऐसी बात नहीं कहूँगी ।

फिर डॉक्टर सरकार ने कहा, आज अधिक नहीं घूमेंगे । चलो, कुछ खाने के बाद मार्बल आर्च के पास बैठ कर बात करें ।

सच कहती हूं भाई रिपोर्टर, मुझे पहले यह मालूम नहीं था कि किसी वृद्ध का सान्निध्य, साहचर्य और हँसी-मजाक इतने मधुर और सुखदायी हो सकते हैं ।

मुझे यही पता था कि यौवन में पहुँच कर बूढ़े-बूढ़ियों की उपेक्षा और अनादर करना ही नियम है । मैंने अपनी उम्र के किसी लड़के या लड़की को किसी प्रौढ़ से दोस्ती करते नहीं देखा । चैत की पतझड़ के पत्ते की तरह ये प्रौढ़ उपेक्षित रहते हैं । लेकिन इस वृद्ध डॉक्टर सरकार को देख कर मैं समझ गयी कि परिणत उम्र में परिणत मन का सौन्दर्य और उसका माधुर्य सचमुच अतुलनीय है । सवेरे उदयाचल के पीछे से उगते और शाम को अस्ताचल की आड़ में छिपते सूर्य के रूप ने ही हर युग के लाखों करोड़ों क्या, सभी मनुष्यों को मुग्ध किया है । इसी सूर्य के प्रकाश से हम प्रकाशित हैं । यही हमारी प्राण-शक्ति का मूलाधार है । शायद इसी लिए बाल्यावस्था और वृद्धावस्था का रूप इतना सुन्दर और मनोरम है ।

आज अचानक मुझे जरूरी काम से टोरेंटो जाना पड़ रहा है । इस लिए बहुत व्यस्त हूं । फिर भी तुम्हें चिट्ठी लिखे बिना नहीं रह सकी ।

तुम दोनों मेरा भरपूर प्यार लेना ।

आदरणीया दीदी

आपकी चिट्ठियाँ पढ़ कर सचमुच बड़ा अच्छा लग रहा है। शुरू मे जब आपने बताया कि चिट्ठियों में मैं तुम्हें अपने जीवन की विचित्र कहानी लिखूंगी, उस समय मैंने विशेष उत्साह का अनुभव नही किया था। लेकिन अब आपकी चिट्ठियाँ पढ़ कर मैं सिर्फ़ आपके विचित्र जीवन की कहानी नही जान रहा हूँ, बल्कि मनुष्य के विविध विचित्र रूप भी देख रहा हूँ। इसके अलावा और भी बहुत कुछ जानने का मौका मिल रहा है।

आपकी तारीफ करने के लिए यह पत्र नही लिख रहा हूँ। जो साँवली लड़की आपको देवी जैसी मानती है और आपके प्रति वैसी ही श्रद्धा-भक्ति रखती है, फिर आपको विश्वास है कि जिसके कारण मेरा कल्याण हो रहा है, श्री वृद्धि हो रही है, उसी लडकी ने एक दिन अचानक एक एरोग्राम ला कर मुझे दिया और कहा, दीदी को पत्र लिखिए।

मैंने कहा, अभी तो दो-तीन दिन पहले हम दोनो ने दीदी को पत्र लिखा, फिर आज लिखने की क्या जरूरत पड़ गयी ?

उसने हँसते हुए कहा, सख्त जरूरत है, तभी तो।

मैंने आश्चर्य से उसकी तरफ देख कर पूछा, कौन ऐसी सख्त जरूरत पड़ गयी ?

उसने अचानक हँसते हुए मेरे सामने बैठ कर कहा, अच्छा, आप तो स्वीकार करते हैं कि रूप-गुण और आचार-व्यवहार की दृष्टि से आपकी दीदी की कोई तुलना नही होती।

मैंने दोनों बाँहे उसके गले मे डाल कर विनोद भरे स्वर मे कहा, सुन्दरी, तुम अगर मेरे जीवन मे न आती तो शायद मैं इसी दीदी से...

उसने मुझे अपनी बात पूरी करने का मौका न दे कर मेरी बाँहे झटक दी और बिगड कर कहा, आप इस तरह की गंदी बातें करेंगे तो मैं कभी आपके पास नहीं आऊँगी।

दीदी, आप तो जानती हैं कि वह साँवली लडकी बहुत जल्दी रूठ जाती है। फिर जब वह रूठ जाती है, देखने मे बहुत अच्छी

लगती है। उस समय मैं उसे अपनी छाती में भींच कर प्यार किये बिना नहीं रह सकता। आज भी उसका व्यतिक्रम नहीं हुआ।

फिर उसने मेरे कंधे पर अपना सिर रख कर दबी जबान में कहा, अच्छा, दीदी तो इतनी बातें लिख रही हैं, लेकिन उन्होंने कभी किसी से प्यार किया कि नहीं, यह तो नहीं लिख रही हैं।

मैंने आपका पक्ष लेते हुए कहा, शायद दीदी ने कभी किसी से प्यार नहीं किया।

उसने तुरन्त मेरी बात का विरोध किया, यह तो असम्भव है।

असम्भव क्यों ?

आप पुरुष हैं। आप स्त्रियों के मन की बात नहीं समझ सकते। हर स्त्री चाहती है कि कोई मुझसे प्यार करे, नाता जोड़े। वह किसी न किसी पुरुष के लिए अनन्या बनना चाहती है।

क्या तुम भी चाहती हो ?

उसने फीकी मुस्कान के साथ कहा, नहीं चाहती, इसी लिए न समाज और परिवार की उपेक्षा कर अपने को इस तरह लुटा दिया है।

आपको जब दीदी कहता हूं, श्रद्धा करता हूं और आपसे प्यार भी, तब हमारे प्यार-मुहब्बत का विशद विवरण आपको न देना ही समीचीन है।

कुछ भी हो, यह सुन्दरी जानना चाहती है कि आपने किससे प्यार किया था ? आपने क्यों उससे विवाह नहीं किया ? आप यह सब बतायें, नहीं तो उसका मन नहीं भरेगा और सवाल पर सवाल करके मुझे परेशान कर देगी।

मैंने उससे कहा, इस सम्बन्ध में तुम्हीं दीदी को क्यों नहीं लिखती ?

वह बोली, ये सब बाते मैं दीदी को नहीं लिख सकती। इस लिए आप ही लिखें।

दीदी, आप जानती हैं कि उसके कहने पर मैं कुतुब मीनार पर से छलांग लगा सकता हूं। इस लिए उसके कहने पर यह पत्र लिख रहा हूं। नाराज मत होना।

आपको हम दोनों का भक्तिपूर्ण प्रणाम।

—आपका रिपोर्टर भाई

तुम्हारी एयरोग्राम वाली चिट्ठी पढ़ते हुए सिर्फ हँसी हूँ। तुम्हारी उस साँवली सुन्दरी लड़की को मैंने अभी तक नहीं देखा, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, वह मुझे अधिक अच्छी लग रही है। विद्या, बुद्धि और अनुभव से नहीं, मैं अपने मन की एकान्त अनुभूति से यह समझ सकती हूँ कि वह अपने मन की कितनी गहराई से मुझसे प्यार करती है और मेरा आदर करती है।

मेरे सोने के कमरे में और स्टडी में तुम दोनों के दो बड़े-बड़े फोटो हैं। आज रविवार है। इस विकएण्ड मे कहीं नहीं गयी। तीन कमरों के इस एपार्टमेंट में बन्दिनी हूँ, लेकिन एक क्षण के लिए भी मैंने अकेलेपन का अनुभव नहीं किया। मैंने बार-बार तुम दोनो की पुरानी चिट्ठियाँ पढ़ी हैं और तुम दोनों के फोटो के सामने खड़ी हो कर बात की है। बीच-बीच में तुम दोनों के फोटो छाती से चिपका कर प्यार किया है।

कुछ भी हो, तुम अपनी सुन्दरी से कहना कि उसने सही बात कही है। इस संसार की हर लड़की के मन में सपना रहता है कि कोई न कोई पुरुष अपने प्यार और दुलार से उसके मन-प्राण भर देगा। मेरे मन में भी वैसा स्वप्न था। संभवतः वह सपना अभी तक नहीं मरा है, जिन्दा है। अब भी कभी-कभी इच्छा होती है कि मन के मीत को अपने पास पाती तो उस पर अपने को न्योछावर कर देती, बिला देती; लेकिन उसी के साथ यह भी डर लगता है कि कहीं सपना न टूट जाय, विश्वासघात न मिले। इस लिए पीछे हट आती हूँ और अपने को समेट लेती हूँ।

जिस उम्र में अधिकांश लड़कियाँ सपना देखती हैं, इस संसार को रंगीन समझती हैं, अपने मन के मानुष को ढूंढती फिरती हैं, उस समय मैंने सचमुच कोई सपना नहीं देखा। देखने की फुरसत भी नहीं थी। माँ अस्वस्थ थीं। फिर उनकी और बाप की मृत्यु ने उस समय मुझे इतना परेशान कर दिया था कि यह समाज, यह संसार, सब कुछ बहुत बुरा लगा था। उसके बाद मानो एक बहाव आया और मैं उसके संग बहने लगी।

उस समय भी मुझे सपना देखने का मौका नहीं मिला था। उसके बाद कुछ समय तक अपने आपको इतना धिक्कारा कि मेरे आगे जीवन के सुन्दर और मनोज्ञ पहलू उभड़ कर आ ही नहीं सके। लन्दन में डॉक्टर सरकार के स्नेह और प्यार से मैंने फिर नये सिरे से जीवित रहने का सपना देखा। हरियाली से भरी धरती मेरी आँखों के आगे से खो गयी थी, वह फिर मिल गयी।

लन्दन आने के एक महीने बाद की बात है। उस एक महीने के अन्दर लन्दन की प्रायः सभी देखने लायक चीजें देख चुकी थी। शहर को भी किसी हद तक पहचान लिया था। उस समय मैं टोटेनहम कोर्ट रोड ट्यूब स्टेशन में जा कर नार्दर्न लाइन की ट्रेन देखते ही उसमें बैठ नहीं जाती थी। देख लेती थी कि वह एजवयर जाएगी कि नहीं। हैमस्टेड में रहती थी, इसी लिए हैमस्टेड स्टेशन पर नहीं उतरती थी। गोल्डर्स ग्रीन स्टेशन पर उतरती थी, जहाँ से मेरा घर नजदीक पड़ता था।

उस दिन न जाने किस काम से निकली थी। वह काम खत्म करने के बाद जरा इधर-उधर घूम-फिर कर घर में आते ही समझ गयी कि डाक्टर सरकार लौट कर किसी से बात कर रहे हैं।

मैंने अपने कमरे में स्कार्फ, कोट और जूते उतारने के बाद तौलिये से जरा चेहरा पोंछ लिया। उसके बाद मैं डाक्टर सरकार के कमरे में गयी तो उन्होंने मुझसे कहा, आओ बेटा! अपने एक छात्र से तुम्हारा परिचय करा दूँ।

मैं दो कदम आगे बढ़ी तो वह सज्जन खड़े हो गये। फिर उन्होंने हाथ जोड़ कर नमस्कार करने के बाद कहा, मैं सन्दीपन बनर्जी हूँ।

मैं हूँ कविता चौधरी।

भाई रिपोर्टर, तुम अपनी सुन्दरी से कहना कि उस सन्दीपन बनर्जी को देख कर मुझे बड़ा अच्छा लगा था। लगा था कि वह मेरे बड़े अपने हैं। अचानक थोड़ी देर के लिए मेरे मन में ढेर सपनों ने भीड़ लगा कर मुझे अनमना कर दिया था।

सन्दीपन ने कहा, बैठिए।

साथ ही साथ डाक्टर सरकार ने भी कहा, हाँ-हाँ, बैठो बेटा।

समझ गयी कि सपनों में खोने के कारण मैं बैठना भूल गयी थी। इस लिए उनकी बातों से जरा लज्जित हुई। फिर मैं उन दोनों के आमने-सामने बड़े दिवान के एक किनारे बैठी तो डाक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, जानती हो, सन्दीपन के चारों भाई-बहनें मेरे छात्र हैं।

अच्छा? लेकिन आपने तो सिर्फ इन्हीं की प्रशंसा की है, इनके भाई-बहनों के बारे में कभी कुछ नहीं बताया।

हँसते हुए सन्दीपन ने कहा, प्रशंसा के योग्य छात्र तो मैं नहीं हूँ। इनके अनेक छात्र-छात्राएँ मुझसे अधिक प्रतिभाशाली हैं।

इस पर मैं भी हँसी। फिर बोली, इतनी सारी बातें तो मैं नहीं जानती, लेकिन मेरे इस बूढ़े बेटे डाक्टर सरकार ने आये दिन आपकी तारीफ की है।

डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, तुम दोनो ही प्रशंसा के योग्य हो और मुझे तुम दोनों पर बड़ा गर्व है।

दो-चार मिनट इस तरह बातें होती रहीं, उसके बाद मैं चाय बनाने गयी।

अचानक सन्दीपन ने पेंट्री के पास पहुँच कर मुझसे कहा, सिर्फ चाय मत पिलाइए। मुझे तो बड़ी भूख लगी है।

क्या खायेंगे ? सैंडविच ?

एतराज नही करूँगा।

एक बात और है। मैं सैंडविच खाने और चाय पीने के बाद चला नही *जाऊँगा। एक काम से लन्दन आया हूँ और कई दिन यहाँ रहूँगा।*

मैंने हसते हुए कहा, इसमें कौन आपत्ति कर रहा है ? इस घर पर मुझसे अधिक आपका दावा है।

जी हाँ। कभी था। लेकिन आपने आ कर सारा शेयर खरीद लिया है।

चाय और सैण्डविच ले कर कमरे में जाते ही डॉक्टर सरकार ने मुझसे कहा, सन्दीपन जब भी ब्रिस्टल से आता है, मेरे यहाँ ठहरता है। इस बार भी कई दिन रहेगा।

मैंने गम्भीरता से कहा, जो सज्जन माँ के खिलाफ बेटे से शिकायत करते हैं, उनको यहाँ रहने देना क्या···

नहीं बेटा, उसने शिकायत नहीं की।

सन्दीपन बोला, मैं भी इतना मूर्ख नहीं हूँ कि पानी मे रह कर मगर से बैर करूँगा।

इस बात पर तीनो जने हँस पड़े।

हँसी थमने पर डॉक्टर सरकार ने कहा, सन्दीपन, बहुत दिन हो गये, तुम्हारे हाथ का बना मांस नही खाया।

सर, आज ही खिलाऊँगा।

थोड़ी सी अच्छी वाइन भी तो पिलाओगे ?

जरूर पिलाऊँगा सर।

फिर सन्दीपन ने मेरी तरफ देख कर मुझसे पूछा, ह्वाट विल यू हैव डॉक्टर मिस चौधरी ?

मैंने अपने मन की इच्छा को दिल्लगी के बहाने हँसते हुए व्यक्त किया, आई विल बी हैपी विद योर कम्पनी ओनली !

उस रात हमारे घर में मानो खुशी का सैलाब आ गया। तीन-चार राउण्ड ड्रिंक करने के बाद वृद्ध डॉक्टर सरकार गाने लगे, मेरी जिन्दगी का प्याला···

डॉक्टर सरकार का गाना खत्म होते ही सन्दीपन ने आशुकवि बन कर गाना शुरू किया, यह किस भाषा में गाया, कैसा स्वर सुनाया···

मेरे साथ डॉक्टर सरकार भी दिल खोल कर हंसने लगे।

उस रात हंसना-गाना थमते-थमते डेढ़-दो बज गये। उसके बाद हम खाने बैठे तो उसमें भी घंटा भर समय लगा।

दूसरे दिन सवेरे मैं ही सबसे पहले उठी। सन्दीपन और डॉक्टर सरकार उस समय भी सो रहे थे।

मैं सन्दीपन के कमरे के दरवाजे के पास खड़ी हो कर उसे देर तक देखती रही। मन में आया कि उसे बुलाऊं, सन्दीपन, उठोगे नहीं? किस सपने में खोये हुये हो?

मन ही मन न जाने क्या-क्या कहा था, आज वह सब याद नहीं है। लेकिन इतना तो अच्छी तरह याद है कि सन्दीपन ने अचानक आँखें खोल कर मेरी तरफ देखा था तो लज्जा, भय और संकोच के मारे मुझमें हिलने भर की ताकत नहीं रह गयी थी। पत्थर की मूर्ति बनी मैं चुपचाप उसी जगह खड़ी थी। शायद एक मिनट उस तरह बीता था।

उसके बाद सन्दीपन ने कहा, गुड मॉर्निंग!

गुड मॉर्निंग।

बहुत देर हो गयी है, इस लिए बुलाने आयी हैं?

मैंने सिर हिला कर कहा, नहीं। आपको देख रही थी।

खुशी के मारे आँखें बड़ी-बड़ी करते हुए सन्दीपन ने कहा, क्या मैं टावर ऑव लन्दन हूँ कि आप मुझे देख रही थीं?

देख रही थी कि कल रात के आप और आज के आप में कितना अन्तर है।

अच्छा?

मैंने सिर्फ सिर हिला दिया।

कितना अन्तर देखा?

इस समय आप बड़े शान्त और सौम्य लग रहे हैं।

लेकिन कल रात को?

कल रात को तो आप अंधड़ बने थे।

सन्दीपन ने हँसते हुए कहा, वही अंधड़ तो सारी धूल-गर्द और गन्दगी उड़ा ले जाता है।

मैंने बात आगे नहीं बढ़ायी। कहा, अब उठिए। मैं चाय बना रही हूँ।

डॉक्टर सरकार उस समय भी सो रहे थे। मैं सन्दीपन के साथ चाय पीने

लगी। चाय पीते समय मैंने उससे कहा, अब इस तरह चुपचाप बैठे रहना अच्छा नहीं लगता। मेरे लिए कहीं किसी नौकरी का इन्तजाम कर दीजिए।

आप चाहें तो आज ही नौकरी पा सकती हैं।

चाहती तो हूँ, लेकिन मिल कहाँ रही है?

दो क्षण चुप रहने के बाद सन्दीपन ने पूछा, बाहर जाने में आपत्ति है?

बाहर का मतलब?

लन्दन के बाहर।

एकदम नहीं।

डॉक्टर सरकार की तरफ से आपत्ति नहीं होगी?

वे क्यों आपत्ति करेंगे?

फिर जरा रुक कर कहा, लेकिन उनसे पूछना मेरा कर्तव्य है।

यह तो हजार बार है।

पॉट से और थोड़ी सी चाय अपने कप में उड़ेलते हुए सन्दीपन ने कहा, ठीक है। मैं उनसे बात करूँगा।

फिर उस दिन नहीं, दूसरे दिन रात को खाना खाते समय टेबिल पर ही डॉक्टर सरकार ने मुझसे कहा, बेटा, सन्दीपन ने तुम्हारे लिए एक अच्छी नौकरी का इन्तजाम किया है।

मैंने आश्चर्य चकित होने का दिखावा करते हुए कहा, अच्छा?

सन्दीपन ने मेरी तरफ देख कर मुस्करा दिया। मैंने यह गौर किया। लेकिन डॉक्टर सरकार ने सन्दीपन की तरफ ध्यान दिये बिना मुझसे कहा, हाँ। लेकिन यहाँ नहीं, ब्रिस्टल में, जहाँ वह रहता है।

मैंने डॉक्टर सरकार से पूछा, आपकी क्या राय है?

अच्छी नौकरी है, जरूर करोगी। देखो बेटा, जिन्दगी में मौका दो बार नहीं आता।

अगर आपकी राय हो तो जरूर जाऊँगी।

लेकिन बीच-बीच में वीक-एण्ड पर जरूर आना, नहीं तो इस बूढ़े बेटे को ही भाग कर माँ के पास जाना पड़ेगा।

जरूर आऊँगी।

खाना खा कर हम तीनों जने अलग-अलग कमरे में सोने गये। मैंने अपने कमरे में जा कर साड़ी बदल कर नाइटी पहन ली। उसके बाद बालों में ब्रश करने लगी तो देखा कि मेरे कमरे के बंद दरवाजे के नीचे से एक लिफाफा अन्दर आया।

लिफाफे को उस तरह अन्दर आते देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन दूसरे ही क्षण समझ गयी कि वह सन्दीपन का काम है। फिर जैसा सोचा था, वही हुआ। लिफाफा खोला तो देखा कि एक छोटे से कागज पर लिखा है, कई दिन हो गये, आपसे एक बात कहने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन किसी तरह कहते नहीं बन रहा है।

कागज के उस छोटे से टुकड़े को हाथ में ले कर घुमा फिरा कर देखने लगी। मेरे मन में तरह-तरह की बातें आयीं और मैं मन ही मन हँसती रही। फिर उस कागज की पीठ पर लिखा, क्या वह बात सिर्फ मुझसे कहनी पड़ेगी?

बंद दरवाजे के नीचे से कागज के टुकड़े को उस पार भेजने के एक मिनट बाद जवाब आ गया, हाँ। वह बात सिर्फ आपसे कहनी है!

ठीक है। कल बताइयेगा।

दूसरे दिन सबेरे सन्दीपन ब्रेकफास्ट खाये बिना निकल गया। थोड़ी देर बाद डॉक्टर सरकार ब्रेकफास्ट खा कर निकल गये। उसके घंटे भर बाद ही सन्दीपन लौट आया।

मैंने पूछा, प्रोफेसर ब्रुक्स से मुलाकात हुई?

हाँ। डॉक्टर सरकार कब तक लौटेंगे?

शाम तक लौट आयेंगे।

लेकिन, मेरा काम हो गया है। इस लिए सोच रहा था कि दोपहर में चला जाऊँगा।

डॉक्टर सरकार से मिले बिना कैसे चले जायेंगे?

न जाऊँ?

मैंने हँसते हुए कहा, नहीं।

तो कल जाऊँ?

जब यहाँ का काम हो चुका है, तब समय नष्ट करने से फायदा?

सन्दीपन ने मेरी तरफ देख कर कहा, काम अभी तक पूरा नहीं हुआ है। एक काम बाकी है।

वह काम पूरा कर लीजिए।

आप इजाजत दे रही हैं?

मेरी कैसी इजाजत?

जी हाँ। वह काम आपसे है।

बतायें, क्या काम है?

सन्दीपन ने कुछ कहे बिना मेरी तरफ दोनों बाँहें फैला दी और मैं मंत्रमुग्ध की तरह आगे बढ़ गयी। उसने मुझे दोनों बाँहों में भर कर गले लगा लिया।

रात बहुत हो गयी है। अब सोने जा रही हूँ। अगली चिट्ठी में बाकी बातें लिखूँगी।

तुम्हें और तुम्हारी सुन्दरी को हार्दिक प्यार।

१२

मेरी बाते सुन कर तुम दोनों जरूर हँसोगे, लेकिन मेरे भाई, विश्वास करो, उस दिन सन्दीपन की बाँहों में अपने को खो देने के बाद मैं मानो इस कठोर निर्मम संसार को छोड़ कर आनन्दमय नन्दनकानन में पहुँच गयी थी। पलक झपते ही मुझे लगा था कि मैंने लाल बनारसी साड़ी पहन ली है और सिर पर ओढ़नी है। सन्दीपन मुझे अपने जीवन-वृत्त का केन्द्र मान कर सतफेरा लगा रहा है। फिर उसने मुझे माला पहनायी। पल भर के लिए मैंने मतवाली हो कर उसे देखा। शंख और शहनाई की गूंज एकाकार होकर मंगलध्वनि से घुल-मिल गयी। वातावरण मतवाला हो उठा। हम दोनों भी मानो पागल हो चले। चारों तरफ जितने लोग थे, खुशी से झूम उठे।

सन्दीपन जरा मुस्कराया। सपनों भरी आँखों से मुझे देखते हुए उसने कहा, कविता, मैंने सब कुछ तुम्हें दे डाला।

अविस्मरणीय उन कई क्षणों में ही मैंने सुहागरात के उन्मादन का अनुभव किया। फिर लाज-लज्जा और संकोच-भय का त्याग कर मैंने आनन्द के सागर में स्नान किया। मन ही मन कितनी ही बातें कहीं और कितनी ही सुनी।

जानती हो कविता, तुम्हे पहली बार देखते ही मैं समझ गया था कि पूर्वोत्तर कोने से उठते बादल की तरह तुम मेरे जीवन के आकाश को एक न एक दिन भर दोगी।

मैं भी जानती थी कि इस अथाह अनंत समुद्र में कभी न कभी खो जाऊँगी।

और क्या जानती थी?

यह भी जानती थी कि इस समुद्र की अतल गहराई से अकूत सम्पदा निकाल कर अपने सूने मन को भर लूँगी।

और भी अनेक सपने देखे। यंत्रणा के मारे मैं छटपटाती रही। लेकिन :

के बीच एक स्वर्णिम सम्भावना की कल्पना कर सारी यंत्रणा को भूलने लगी। फिर भी उस यंत्रणा की तीव्रता बढ़ते ही मैं चिल्ला पड़ी, सन्दीपन, मुझे अपनी बाँहों में भर लो। जरा प्यार करो। अब मुझसे सहा नहीं जाता।

लम्बे समय तक उमस भरी गर्मी से बेचैन होने के बाद आकाश के कोने में काले बादल का एक टुकड़ा देखते ही सोचा था कि मेरे जीवन की तपती धरती पर अब हरियाली का मेला लगेगा।

अचानक सन्दीपन ने दोनों हाथों में मेरा चेहरा ले कर कहा, कब ब्रिस्टल आ रही हो ?

चेहरे पर गम्भीरता लाने का प्रयास करने पर भी पुलक की उच्छलता स्पष्ट थी। मैंने पूछा, सचमुच आऊँ ?

सन्दीपन ने मेरे कानों में कहा, कभी नहीं।

फिर तो कल ही आऊँगी।

दोनों दिल खोल कर हँसे।

भाई रिपोर्टर, तुम अपनी सुन्दरी से कहना कि उस दिन आनन्द और दबी उत्तेजना के कारण मैं मानो सोलह साल की चुलबुली लड़की बन गयी थी। सन्दीपन के स्पर्श से और कई क्षणों के निविड़ सान्निध्य से मैं कस्तूरी-मृग की तरह पागल हो चली थी। मेरे जीवन में फिर कभी वैसा सुंदर दिन नहीं आया। वैसा परिपूर्ण दिन भी नहीं आया।

बहुत देर करके हम दोनों खाने बैठे।

मैंने सन्दीपन से पूछा, इतने दिनों तक आपने शादी क्यों नहीं की ?

सन्दीपन ने बेझिझक उत्तर दिया, तुम्हें पाने के लिए।

मैंने भी लम्बी साँस ले कर कहा, ठीक कहा है। मैं भी शायद आपका ही इन्तजार कर रही थी।

शाम को डॉक्टर सरकार लौटे तो उसके कुछ देर बाद सन्दीपन चला गया। जाते समय उसने कहा, ब्रिस्टल आइए। कोई दिक्कत नहीं होगी। लेकिन आते समय टेलीफोन कर लीजियेगा।

सन्दीपन जब जाने लगा था, उस समय मेरा मन इतना दुखी हो उठा था कि मैं कोई खास बात भी न कर सकी थी। वह मेरे मन की हालत समझ गया था। इसलिए डॉक्टर सरकार को प्रणाम करने के बाद उसने हैंडशेक करने के

लिए दायाँ हाथ मेरी तरफ बढ़ाया। मैंने भी अपना हाथ आगे किया। उसने मेरे हाथ को जरा दबा कर छोड़ दिया।

मुझे सन्दीपन का अभाव इतना खला था कि उस रात खाना खाते समय मैंने डॉक्टर सरकार से कह दिया, आज अचानक यह मकान बड़ा सूना-सूना लग रहा है।

तुमने ठीक कहा बेटा! वह जब भी जाता है, मेरा मन दुखी हो उठता है।

जी हाँ। बहुत हँसते-बोलते थे।

वह सचमुच बड़ा प्यारा लड़का है।

फिर जरा रुक कर डॉक्टर सरकार ने हँसते हुए कहा, सन्दीपन सिर्फ मेरा छात्र नहीं, बट ए फ्रेंड ऐज वेल।

मैंने मुस्करा कर कहा, वह तो मैंने भी देखा।

फिर जरा रुक कर मैंने पूछा, क्या उनके सभी भाई-बहनें आपके छात्र हैं?

सन्दीपन को ले कर सात भाई-बहनें हैं। उनमें तीन बहनें और सन्दीपन मेरे छात्र हैं।

उसके बाद डॉक्टर सरकार ने मुस्करा कर मेरी तरफ देखते हुए कहा, सन्दीपन की बड़ी बहन मेरी सबसे प्रिय छात्रा थी।

इस इशारे को समझने के बाद मैंने पूरी गम्भीरता से कहा, अच्छा?

डॉक्टर सरकार ने लम्बी साँस छोड़ कर कहा, शी इज ए डेंजरस गर्ल!

डेंजरस का मतलब?

वह जैसी गजब की सुन्दरी थी, वैसी बुद्धिमती भी। इसके अलावा शी इज ए वेरी फास्ट गर्ल!

डॉक्टर सरकार की बात सुन कर मेरे लिए हँसी रोकना मुश्किल हो गया। मैंने हँस कर कहा, अच्छा?

हाँ बेटा। उसको ले कर कई साल मजे में बिताये थे।

क्या वे सन्दीपन बाबू से बहुत बड़ी हैं?

हाँ। बहुत बड़ी हैं। शी मस्ट बी एबाउट फिफ्टी-फाइव बाइ नाउ।

इस समय वे कहाँ हैं?

कलकत्ते में।

क्या अब भी आपसे कोई सम्पर्क है?

डॉक्टर सरकार ने हँस कर कहा, अब भी हर महीने प्रेमपत्र लिखती रहती है।

क्या आप उसका उत्तर देते हैं?

क्यों नहीं ?

मुलाकात होती है ?

कलकत्ते जाने पर होती है।

फिर जरा रुक कर डॉक्टर सरकार ने बड़े गर्व के साथ हँसते हुए कहा, अब भी उसकी सुन्दरता देखोगी तो आश्चर्य मानोगी।

शादी तो कर ली होगी ?

हाँ। कर ली है। अब वह एक सुखी परिवार की स्वामिनी है।

सन्दीपन बाबू के और भाई-बहनें ?

उसका परिवार बड़ा दुखी है। अभी तीन साल पहले उसके बड़े भाई की मृत्यु केन्सर होने से हो गयी। कार एक्सिडेंट में मझले भाई की मृत्यु हो चुकी थी। तीन बहनें विधवा हो गयी हैं।

अरे !

इन्हीं सब कारणों से सन्दीपन ने शादी नहीं की।

फिर अचानक डॉक्टर सरकार ने कहा, अगर वह शादी करने के लिए तैयार होता है तो तुमसे उसकी शादी कर दूँगा।

मैं मुस्करायी।

नहीं बेटा, हँसने की बात नहीं है ! तुम्हारी तरह सन्दीपन भी बड़ा अकेला है। फिर जितनी अच्छी तुम हो, उतना अच्छा वह भी है। तुम दोनों की जोड़ी अच्छी रहेगी।

मैं कुछ बोली नहीं, चुपचाप बैठी रही।

डॉक्टर सरकार ने फिर कहा, ब्रिस्टल में तुमसे मिलने-जुलने के बाद अगर उसकी राय बदलती है तो उससे शादी कर लेना। मैं कह रहा हूँ, तुम दोनों सुखी हो सकोगे।

इसके बाद देर तक खामोशी छायी रही। फिर डॉक्टर सरकार ने ही खामोशी तोड़ी और कहा, देखो बेटा, इस संसार में समाज ही ऐसा बना है कि यहाँ अकेला रहना मुश्किल है। मुझको ही देखो न। आई हैड प्लेण्टी ऑव सेक्स, लेकिन किसी स्त्री का सान्निध्य, साहचर्य या प्रेम नहीं मिला। मैं तो एक केक्टस बन कर रह गया।

डॉक्टर सरकार की बातें सुन कर मेरे मन में भी सपनों की आग धधक उठी, लेकिन मैं जबान खोल न सकी। चुपचाप सिर झुकाये बैठी रही। फिर भी मन ही मन बहुत सी बातें कहीं। कहा कि हमारे हितचिन्तक के रूप में आपने जो कुछ सोचा है, जो भी सपना देखा है, हमने भी वैसा किया है। मन ही मन

मैंने यह भी कहा कि सन्दीपन ने तो बहुत बाद में मुझे अपनी बाँहों में भर कर गले से लगाया था, मैंने तो उसके पहले ही अपने मन में सोच लिया था कि सन्दीपन ही मेरे जीवन का देवता है।

थोड़ी देर बाद डॉक्टर सरकार ने पूछा, तुम कब ब्रिस्टल जाना चाहती हो ?

सोच रही हूँ कि हफ्ते भर बाद जाऊँगी।

हर शुक्रवार की शाम को आओगी न ?

आऊँगी।

हाँ, जरूर आना। फिर सोमवार को सबेरे चली जाना। अपने साथ सन्दीपन को ला सको तो और भी अच्छा हो।

मैं मुस्करायी।

डॉक्टर सरकार ने भी फीकी मुस्कान के साथ कहा, नहीं बेटा, हँसने की बात नहीं है। मुझे अपने गर्भ में धारण करने वाली माँ का चरित्र ठीक नहीं था। इस लिए जिन्दगी भर मैंने स्त्रियों को उपभोग की सामग्री ही समझा, लेकिन तुम्हारे आगे हार गया। सिर्फ तुम्हारे आगे।

यह कहते हुए डॉक्टर सरकार की आँखें भर आयीं। उनका स्वर भी भारी हो चला। उसी हालत में उन्होंने कहा, माँ तो मिली थी, लेकिन मातृस्नेह नहीं मिला था। नारी तो मिली, लेकिन उसका प्यार नहीं मिला। अब इस बुढ़ापे में मातृस्नेह और प्यार पाने के लिए मन बेचैन हो उठा है।

कुर्सी से उठ कर मैं डॉक्टर सरकार के पास आ कर खड़ी हो गयी। उनके गले में दोनों बाँहें डाल कर ठुड्डी उनके सिर पर रखी और कहा, अब तो माँ मिल गयी है, फिर दुख किस बात का ?

माँ तो जरूर मिली है, लेकिन तुम तो जाना चाह रही हो ?

आप मना करेंगे तो नहीं जाऊँगी।

नहीं बेटा, ऐसा नहीं हो सकता।

अब मैंने डाक्टर सरकार का हाथ पकड़ कर कहा, चलिए। अब आपको सुला दूँ।

लम्बी साँस छोड़ कर डॉक्टर सरकार ने कहा, चलो बेटा।

डॉक्टर सरकार लेटे। पास में बैठ कर मैंने उनके सिर पर हाथ रखा। छोटे असहाय बच्चे की तरह वे मेरी गोद में हाथ रख कर सो गये। फिर भी मैं उठ न सकी। मुग्ध विस्मय से मैं उनके चेहरे की तरफ देखती रही।

कितनी देर उस तरह बैठी रही, कह नहीं सकती। अचानक टेलीफोन घंटी बजी तो मैं उठी।

हैलो !

मैं सन्दीपन हूँ।

मैंने मुस्करा कर कहा, इतनी रात को टेलीफोन की घंटी सुन कर ही समझ गयी थी कि डॉक्टर सरकार के पागल छात्र का फोन होगा।

मैं पागल हूँ ?

अगर पागल न होगे तो मुझे कैसे पागल बना सके ?

खैर, सुन कर खुशी हुई।

खाना खा चुके ?

आधी बोतल ह्विस्की खतम की है।

क्या ह्विस्की पीने से पेट भरेगा ?

अभी तक तो भरता था, लेकिन आज नहीं भरा।

क्यों ?

आज लग रहा है कि ह्विस्की की बोतल में पानी था।

मतलब ?

मतलब यह कि रोज पीने के बाद सो जाता था, लेकिन आज किसी तरह नींद नहीं आ रही है।

इस तरह ड्रिंक करोगे तो मैं नहीं आऊँगी।

तुम आओगी तो इस तरह ड्रिंक नहीं करूँगा।

ठीक कह रहे हो ?

कविता, जिस दिन देखोगी कि मैं झूठ बोल रहा हूँ, तुम उसी दिन चली जाना। मैं मना नहीं करूँगा।

ठीक है, तुम झूठ नहीं बोलोगे और मैं भी नहीं चली आऊँगी।

फिर सन्दीपन ने पूछा, क्या डॉक्टर सरकार सो रहे हैं ?

अभी थोड़ी देर पहले उनको सुलाया।

क्या तुमने नाइटी पहन रखी है ?

मैं हँसी। पूछा, क्यों ?

तुम्हारी वह लाल नाइटी देखने पर''''सन्दीपन ने अपनी बात पूरी नहीं की।

मैंने पूछा, मेरी नाइटी देखने पर क्या होता है ?

सुहागरात को बताऊँगा।

मैंने हँसते हुए कहा, फिर इतने दिन इन्तजार करना पड़ेगा ? उसके पहले'''

अगर इतने दिन इन्तजार न करना चाहो तो पहले भी सुहागरात हो सकती है। उसके बाद मौका देख कर शादी कर ली जायेगी।

अब तुम पीटे जाओगे।

फिर सन्दीपन ने इधर-उधर की कोई बात नहीं की। सिर्फ इतना कहा, बहुत रात तो गयी है। सो जाओ। गुड नाइट।

उसके बाद कई दिन मैं मानो सन्दीपन के सपनों में खोयी रही। हर समय सिर्फ उसी के बारे में सोचती रहती थी। हर समय उसे मानो अपनी आँखों के आगे देख पाती थी। डॉक्टर सरकार जब घर पर नहीं होते थे, मैं मन ही मन उससे बातें भी करती थी।

सन्दीपन, उठोगे नहीं ? अब तो उठ जाओ। देखो, कितना दिन चढ़ गया है। अब मत सोओ।···क्या, नहीं उठोगे ? ठीक है, मैं जा रही हूँ।....ओफ ! हाथ छोड़ो। मैं सचमुच जा रही हूँ। कई काम पड़े हैं।

मैं यही सब सपने देखती थी और मन ही मन हँसती थी। कभी-कभी सोचती थी कि मैं पागल तो नहीं हो गयी ? नहीं-नहीं, पागल क्यों होऊँगी ? जिससे प्यार करती हूँ, उसको ले कर सपना नहीं देखूँगी ? जरूर देखूँगी, हजार बार देखूँगी।

माई रिपोर्टर, 'प्यार' शब्द का खूब इस्तेमाल हुआ है। जिधर देखती हूँ, उधर ही प्यार देखने को मिलता है। सुनती हूँ कि सभी लड़के-लड़कियाँ प्यार करते हैं। लेकिन क्या सभी प्यार कर सकते हैं ? क्या सभी को प्यार मिलता है ? शायद नहीं। शरीर में जब उथल-पुथल मचती है, तभी तो मन सपना देखता है। तभी सारे संसार में इन्द्र धनुषी रंग बिखर जाता है। लेकिन सपना देखना प्यार करना नहीं है। संसार को रंगीन देखने के लिए प्यार नहीं बना है। प्यार मनुष्य को देवता बना देता है। प्यार अमरता लाता है। इसी लिए हम शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के अनुपम सर्जन श्रीकान्त को नहीं भूल सकते। राजलक्ष्मी से हम सभी प्यार करते हैं। जो प्यार नर-नारी को सिर्फ विवाह के बंधन में बाँधता है, उनको उपभोग का अधिकार देता है, उस प्यार में शाश्वत प्रेम का लेश मात्र नहीं रहता। इसी लिए घर-घर में इतनी अशान्ति, इतना द्वन्द्व और संघात है।

विश्वास करो, मैंने सिर्फ कामना-वासना और लालसा की शान्ति के लिए सन्दीपन से प्यार नहीं किया। किसी भी पुरुष से वह शान्ति मिल सकती है, लेकिन क्या हर पुरुष से प्यार किया जा सकता है ? नहीं, वैसा सम्भव नहीं है। मैंने अपनी सारी अनुभूति से अपने अन्दर सन्दीपन का वरण किया था, चाहा था कि अपनी सारी सत्ता को लुटा कर उसमें घुल-मिल जाऊँगी।

इसी तरह दो दिन बीत गये। ब्रिस्टल जाना था। इसलिए खरीद-फरोख्त करने आक्सफोर्ड सर्कस की तरफ गयी हुई थी। तभी पानी बरसने लगा और लौटने में बहुत देर हो गयी। लेकिन जब लौटी, घर में कदम रखते ही डॉक्टर सरकार का चेहरा देखते ही घबड़ा गयी। मैंने जल्दी-जल्दी उनके पास जा कर उनसे पूछा, क्या हुआ है? आप इस तरह उदास क्यों बैठे हैं?

डॉक्टर सरकार ने उसी तरह सिर झुकाये जवाब दिया, आज सचमुच मन बड़ा उदास है।

क्यों, क्या हुआ है?

सन्दीपन ने टेलीफोन करके बहुत बुरा समाचार दिया।

मैं लगभग चीख पड़ी, कैसा बुरा समाचार दिया?

सन्दीपन की सबसे छोटी बहन भी विधवा हो गयी है।

अरे!

फिर मुझे कुछ न पूछना पड़ा। डॉक्टर सरकार ने स्वयं कहा, उस छोटी बहन से सन्दीपन कितना प्यार करता था, यह तो वही जानता है जिसने देखा है। बताने पर विश्वास नहीं किया जा सकता। माता-पिता के निधन के बाद सन्दीपन ही उस लड़की के लिए माता-पिता के समान था। घर में तीन-चार नौकर-नौकरानियाँ थे, फिर भी सन्दीपन अपने हाथ से उसे नहलाता और खिलाता-पिलाता था। छोटी बहन को पास के पलंग पर लिटा कर ही सन्दीपन सो पाता था।

मैं गूंगी बन कर डॉक्टर सरकार की बातें सुनती रही। मुझे अपनी आँखों के आगे वह सारा दृश्य मानो दिखाई पड़ने लगा।

डॉक्टर सरकार नहीं रुके। वे कहते गये, इंगलैंड आने के साल भर पहले ही सन्दीपन ने उसकी शादी कर दी थी, लेकिन विधाता ने उसके सारे सपने को तहस-नहस कर दिया।

लम्बी साँस छोड़ कर मैंने पूछा, आपको कब यह खबर मिली?

तुम्हारे जाने के पाँच मिनट बाद ही सन्दीपन का टेलीफोन आया था।

उन्होंने क्या कहा?

सिर्फ वही मर्मान्तिक समाचार दे कर टेलीफोन रख दिया।

और कुछ नहीं कहा?

नहीं। और कुछ कहने लायक उसकी हालत नहीं थी।

फिर ज़रा रुक कर डॉक्टर सरकार ने कहा, उसके बाद मैंने उसको कई बार टेलीफोन किया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

में पत्थर की मूर्ति बनी खड़ी रही।

थोड़ी देर बाद डॉक्टर सरकार ने कहा, सन्दीपन जरूर शराब पी कर पागल की तरह सड़क पर घूम रहा है।

यह सुन कर मेरा हृदय मानो रो उठा। मैंने अपने अन्तःकरण से चाहा कि मैं भाग कर जाऊँ, उसे अपनी छाती से चिपका लूँ और उसके आँसू पोंछ दूँ। लेकिन भाई रिपोर्टर, वह अवसर नहीं आया। कभी वह आयेगा भी नहीं।

उसी रात को मैंने और डॉक्टर सरकार ने सन्दीपन को कई बार टेलीफोन किया, लेकिन वह नहीं मिला। फिर अधिक रात को सोने से पहले डॉक्टर सरकार ने मुझसे कहा, जरा सजग रहना। सन्दीपन शायद पागल की तरह रोता हुआ यहाँ पहुँच जाय।

सन्दीपन की प्रतीक्षा में मैं रात भर जागती रही, लेकिन नहीं, वह नहीं आया। एकदम सवेरा होने से पहले जरा देर के लिए मैं सो गयी थी और तभी डॉक्टर सरकार का चीखना सुन कर पागल की तरह हड़बड़ा कर उठी। मैं भाग कर उनके पास गयी तो उन्होंने मुझे दोनों हाथों से छाती से चिपका कर रोते हुए पागल की तरह ज़ोर-ज़ोर से कहा, बेटा, मेरा सन्दीपन नहीं है!

डॉक्टर सरकार की आशंका ही सही साबित हुई। सन्दीपन सचमुच नशे में चूर होकर पागल की तरह कार से सारे शहर का चक्कर लगाने लगा था। सवेरा होने से पहले भयानक दुर्घटना घटी और वह बस बसा।

भाई रिपोर्टर, अब तो मेरी प्रेम-कहानी सुन ली न! कैसी लगी? इस संसार में कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपनी मुट्ठी में धूल लेते हैं तो वह सोना बन जाती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनके छूते ही हर चीज़ खाक बन जाती है। मेरे इस सुन्दर शरीर में वैसी ही अभिशप्त आत्मा का निवास है। इसी लिए इस संसार में मेरे द्वारा किसी का कोई भला नहीं होता, हो नहीं सकता। वैसा होना सम्भव ही नहीं है।

तुम अपनी सुन्दरी से कहना कि बाद में अनेक पुरुषों ने मेरे इस सुन्दर शरीर को भोगा है। लेकिन जिनको यह शरीर सौंपा है, उन सबसे मैं घृणा करती हूँ। सिर्फ सन्दीपन से रूठ कर मैंने वैसा किया है। लेकिन बाद में आँसू बहाये हैं। अबोध शिशु की तरह फफक-फफक कर रोयी हूँ। हाथ जोड़ कर हजार बार सन्दीपन से माफी माँगी है।

सन्दीपन मर चुका है, लेकिन मिटा नहीं। वह कहीं खो भी नहीं गया है। मैंने बड़े जतन से उसे अपने हृदय में छिपा रखा है। क्या वहाँ से भी वह भाग

सकता है ? नहीं, वह कहीं नहीं भाग सकता। मैं उसे कहीं भागने नहीं दूंगी। वह सिर्फ मेरा है। हमेशा—हमेशा के लिए मेरा है।

अब मुझसे लिखा नहीं जाता। तुम दोनों मुझे क्षमा करना। सिर्फ इतना अनुरोध है कि अब कभी सन्दीपन के बारे में मत जानना चाहना।

तुम दोनों मेरा सच्चा प्यार लेना।

१३

प्रियवरेषु भाई रिपोर्टर,

सन्दीपन को खोने के बाद अचानक मेरा सारा संसार ही बदल गया। सिर्फ मेरा नहीं, डॉक्टर सरकार का भी यही हाल था। दोनों ही घर में बन्द रहने लगे। कहीं निकलते नहीं थे। दिन भर दोनों एक दूसरे से बोलते भी न थे। खाना खाते समय दोनों टेबिल के सामने सिर झुकाये बैठते थे और खा कर उठ जाते थे। सिर्फ इतना ही नहीं, शोक और दुख के मारे हम एक दूसरे की तरफ निगाह उठा कर देखने का साहस भी नहीं करते थे। दोनों ही चुपचाप घर में बैठे रहते थे। कभी लेटते भी थे, लेकिन किसी तरह नींद नहीं आती थी। पलकें भारी होते ही मैं चौंक पड़ती थी। उन कई सुनहरे दिनों की याद को कीमती धरोहर की तरह अपने हृदय में छिपा कर रखती थी। बार-बार उसी याद में खो कर जीती थी।

कितनी रात तक जागती रहती थी, समझ नहीं पाती थी। लेकिन जब तक जागती रहती थी, तब तक बराबर पता चलता था कि डॉक्टर सरकार भी जाग रहे हैं। अक्सर उनके चहलकदमी करने की आहट सुनाई पड़ती थी। जो डॉक्टर सरकार हर शाम को शराब की बोतल लेकर बैठते थे, उसी ने अचानक शराब को छूना बंद कर दिया था। फिर लगभग दस दिन बाद एक दिन शाम को किसी से कुछ कहे बिना वे बाहर निकले और आधी रात के बाद नशे में धुत होकर लौटे। यह देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। वे अपनी धुन में गाये जा रहे थे, मेरा खोया हुआ धन मिलेगा कहाँ ?

डॉक्टर सरकार की आवाज लड़खड़ा रही थी। लेकिन किसी तरफ उनका ध्यान नहीं था। उनको जितना देखती रही, मेरा मन उदास होता रहा। आँखों से आँसू बहते थे, लेकिन खुल कर रोने की हिम्मत नहीं होती थी। मैं छिप-छिप

कर रोती थी। डॉक्टर सरकार भी रोते थे। वे भी मेरी तरह दूसरों की निगाह बचा कर चोरी-छिपे रोते थे।

फिर हफ्ते-दस दिन बाद एक दिन डिनर खाते समय डॉक्टर सरकार ने मुझसे पूछा, बेटा, एक बात पूछूंगा। क्या सन्दीपन से तुम्हारे विवाह की तिथि निश्चित हो चुकी थी?

उस दिन मैंने कोई बात नहीं छिपायी और कहा, शादी के बारे में कोई बात नहीं हुई थी। लेकिन हम दोनों जानते थे कि हमारी शादी होगी।

फिर देर तक डॉक्टर सरकार ने कोई बात नहीं की। उसके बाद उन्होंने यों ही मुस्करा कर कहा, तुमने जरूर इसके पहले किसी से प्यार नहीं किया था। है न?

जी हाँ।

डॉक्टर सरकार ने जरा जोर से लम्बी साँस छोड़ी और कहा, लोग कहते हैं कि पहला प्यार कभी सक्सेसफुल नहीं होता। शायद यह बात सही है।

उसके बाद डॉक्टर सरकार ने निगाह नीची करके कहा, यही दुख तो मैं भी जिन्दगी भर भोगता रहा। तुम्हें भी इस दुख से कभी छुटकारा नहीं मिलेगा।

भला, मैं इस बात का क्या जवाब देती—चुपचाप बैठी रही।

डॉक्टर सरकार ने फिर फीकी मुस्कान के साथ कहा, देखो बेटा, फर्स्ट लव सक्सेसफुल न होने के कारण ही मैं इस कदर बिगड़ गया। सहज ढंग से जीवन न बीतने पर मनुष्य परवर्टेड हो जाता है।

इसी तरह देखते-देखते एक महीना बीत गया। डाक्टर सरकार ने फिर नये सिरे से काम-काज शुरू किया। मैं भी अपने को घर की चार दीवारों में कैद नहीं रख पाती थी, बीच-बीच में बाहर निकलने लगी।

उस दिन भी मैं बाहर निकली थी। इधर-उधर घूम-फिर कर ब्रिटिश म्यूजियम में पहुँच गयी। वहीं किताबें उलटते-पलटते दिन भर बीत गया। फिर जब वहाँ से चलने लगी, एक सज्जन ने आगे बढ़कर मुझसे पूछा, क्या आप कैलकटा यूनिवर्सिटी में पढ़ती थीं? क्या आपका नाम कविता...

जी हाँ।

मैं तन्मय मुखर्जी हूँ।

मैंने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया तो तन्मय बाबू ने कहा, मैं भी आपके समय में उस विश्वविद्यालय में था, लेकिन इतिहास विभाग में। तीन महीने हुए यहाँ आया हूँ।

रिसर्च कर रहे हैं?

[illegible] है । वह [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]?

[illegible]।

[illegible]?

[illegible]...

[illegible]?

[illegible]?

[illegible]?

[illegible], यहाँ मैं आती हूँ ।

[illegible] आपसे मुलाकात [illegible]?

१५

[illegible] पेंगुइन बुक-शॉप के सामने [illegible] । [illegible] कई किताबें खरीदीं । इसके अलावा [illegible] था । दुकान से निकलते समय वह [illegible] था । मैं [illegible] थी कि उससे किताबें ले लूँ, लेकिन [illegible] कहा, कविता, जरा इन किताबों को [illegible] ।

[illegible] बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन [illegible] कहा, [illegible] ।

किताबें [illegible] अपना चेहरा पोंछा और लम्बी [illegible] हूँ ।

[illegible] फिर कहा, इस देश में पढ़ने-लिखने [illegible] सुविधा है, लेकिन उसके लिए बहुत मेहनत भी [illegible] पड़ती है ।

इस पर मैंने कहा, इस सम्बन्ध में अभी तक मेरा अनुभव शून्य है। लेकिन जैसा देख रही हूँ, उससे यही लगता है।

तन्मय बोला, हमारे कलकत्ते में अध्यापकों ने नोट्स लिखा-लिखा कर हमारी ऐसी आदत बिगाड़ दी है कि विदेश में आ कर पढ़ने-लिखने में बड़ी परेशानी होती है।

मैंने कहा, हो सकता है। लेकिन मैं तो यही समझती हूँ कि यूनिवर्सिटी में पढ़ने में जितना आनन्द है, उतना और किसी में नहीं।

तन्मय ने तपाक से कहा, अगर तुम्हारी तरह फ्रेंड मिले, तभी तो!

मतलब ?

तन्मय हँसने लगा! फिर बोला, तुम तो नहीं जानती, तुमको ले कर हम कितनी चर्चा और कितनी गवेषणा करते थे।

सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर भी मैंने हँस कर पूछा, मुझको लेकर गवेषणा होती थी ?

हाँ। गवेषणा होती थी।

मैं आपकी बात जरा भी नहीं समझ पा रही हूँ।

चलते-चलते अचानक रुककर तन्मय ने कहा, तुम मुझे बार-बार आप क्यों कह रही हो ? कुछ भी हो यह लन्दन है और हम एक ही पीढ़ी के हैं।

आदत पड़ गयी है।

चेन्ज दैट हैबिट।

आइ विल ट्राइ।

ट्राइ फ्रॉम नाउ ऑन!

इस पर मैंने कुछ नहीं कहा, सिर्फ हँस दिया।

बात करते-करते हम बस स्टॉप पर पहुँचे। वहाँ एक-दो मिनट रुके। फिर बस में बैठे। बस में अगल-बगल बैठ कर बात करने लगे।

तन्मय बोला, सच कहता हूँ, शायद ऐसा कोई दिन बीता हो, जिस दिन हमने तुम्हारे बारे में चर्चा नहीं की।

मुझे तन्मय की बातें सुन कर बड़ा मजा आया। पूछा, इतनी कौन सी चर्चा होती थी ?

तुम जैसी सुन्दरी और विदुषी को लेकर कितनी ही चर्चाएँ हो सकती हैं।

मैं सुन्दरी हूँ ? विदुषी हूँ ?

तन्मय ने मेरी तरफ देख कर कहा, तुम सचमुच सुन्दरी हो।

मैंने झटपट निगाह फेर ली।

तन्मय फिर बोला, कल तुम्हें देख कर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ था। सोचा था, पता नहीं कौन राजकुमार तुम्हें उड़नखटोले में बिठा कर समुद्र पार इस देश में लाया है।

मैंने हँस कर कहा, इतिहास को लेकर गवेषणा करने के बजाय अगर आप बंगला में कहानी उपन्यास लिखें तो आपको अधिक प्रसिद्धि मिले।

आप नहीं, तुम कहो।

मैंने हँसते हुए कहा, हाँ-हाँ, तुमको।

धन्यवाद!

कुछ भी कहो भाई रिपोर्टर, विद्यार्थी जीवन के मित्रों से मिलने पर बड़ा अच्छा लगता है। अगर वह मित्र कालेज या यूनिवर्सिटी का हो तो क्या कहना! विद्यार्थी जीवन की स्मृति हरेक को बड़ा सुख और बड़ा आनन्द देती है। तन्मय के साथ मैं एक ही कक्षा में नहीं पढ़ती थी, फिर भी वह मेरे ही साथ यूनिवर्सिटी में पढ़ता था। इसलिए विषादमय नीरस जीवन के उन सूने दिनों में उससे मुलाकात हो गयी तो सचमुच मुझे बड़ा अच्छा लगा। अगर कुछ दिन पहले उससे मुलाकात होती तो शायद उतना अच्छा न लगता। लेकिन उस समय तो मैं अपनी कक्षा से भटके ग्रह के समान महाशून्य में तिल-तिल कर जलने और समाप्त होने के लिए मजबूर थी और तभी तन्मय से मुलाकात हो गयी। इस लिए उस संयोग को मैंने परम आशीर्वाद के रूप में स्वीकार किया।

भाई रिपोर्टर, उन दिनों मेरी मानसिक स्थिति कैसी थी, तुम समझ पाओगे या नहीं, कह नहीं सकती। लेकिन तन्मय के आने से मेरे जीवन में कुछ तो परिवर्तन आया। टूटे-फूटे सीलन लगे मकान की मरम्मत कर रंगाई करने पर वह जितना अच्छा लगता है, मुझे अपना जीवन भी उतना ही अच्छा लगने लगा था।

देखो कविता, मनुष्य को दुख सहना ही पड़ता है। इससे किसी को छुटकारा नहीं मिलता।

यह तो सही है, लेकिन...

इसमें कोई लेकिन नहीं है। हो सकता है कि कुछ दुखों को मनुष्य भूल नहीं सकता, लेकिन उनसे भी जीतना पड़ता है। ऐसा किये बिना हम जिन्दा नहीं रह सकते।

मैंने सिर झुकाये कहा, क्या सभी लोग दुखों को जीत सकते हैं ?

हाँ, सभी जीत सकते हैं। इसमें किसी को दो दिन लगते हैं तो किसी को दो बरस। पति, पुत्र और माता-पिता को खोने के बाद कितने लोग इस संसार को छोड़ कर चल देते हैं ?

मैं इसका उत्तर नहीं दे सकी।

तन्मय मुस्कराया। उसके बाद उसने फिर कहा, तुम इस बात को तो जरूर मानोगी कि जो बूढ़ी विधवाएँ जितना अधिक दुख पा चुकी हैं, वे इस संसार के प्रति उतना अधिक आसक्त हैं। वही बूढ़ियाँ दूसरों को ज्यादा सताती हैं, जबकि उनको संन्यासिनी बनना चाहिए था।

उसके बाद तन्मय उठ कर मेरे पास आ कर बैठ गया। उसने धीरे से मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा, इस संसार की तरफ देखो। देखोगी कि भयानक गर्मी के बाद ही वर्षा आती है। फिर ऊमस भरे भादों के बाद शरत की खुशियाली छाती है।

तन्मय की बातों में बड़ा जादू था। उसके स्पर्श से सारे बदन में न जाने कैसी सिहरन दौड़ने लगती थी। मैं उससे बहस नहीं कर सकती थी। उसकी बातों का विरोध करना भी मुश्किल था। वह ज्यादा नजदीक आ गया। मैं उसे रोक न सकी। उसने ह्विस्की का गिलास मेरे होंठों के सामने किया और मैंने उसमें चुस्की लगायी।

ठीक से याद नहीं पड़ता। शायद मैं पूरा गिलास पी गयी थी। कलकत्ते में चाचा जी के साथ ह्विस्की पीने के बाद उस दिन फिर पी। काफी समय बाद ह्विस्की पी कर बड़ा अच्छा लगा। फिर तो उसका लिपटना, जोश-खरोश के साथ लिपटना और चूमना बड़ा अच्छा लगने लगा। फिर मुझमें जीने की इच्छा पैदा हुई। सन्दीपन को खोने का दुख तो भूल न सकी, लेकिन जिस व्यथा और विषाद से मेरा मन भर गया था, उससे तो छुटकारा मिला।

तन्मय के साथ दस-पन्द्रह दिन बिताने के बाद एक दिन अचानक कलकत्ते से खबर आयी कि डॉक्टर सरकार के छोटे भाई की मृत्यु हो गयी है।

बड़े जोर से लम्बी साँस छोड़ने के बाद डॉक्टर सरकार ने कहा, देखो बेटा, सन्दीपन के जाने के बाद ही मुझे लगा था कि मेरे भाग्य में बहुत दुख है।

डॉक्टर सरकार को सान्त्वना देने लायक भाषा मेरे पास नहीं थी। सिर्फ इतना कहा, अब तो आपको बहुत कुछ करना है। छोटे-छोटे भतीजे-भतीजियों की देखभाल आपको ही करनी पड़ेगी।

हाँ, बहुत जल्दी जाना जरूरी है। लेकिन लगता है कि अब लौट नहीं पाऊँगा।

आप मेरी चिन्ता न करें। शायद अगले हफ्ते मुझे नौकरी मिल जायेगी।

लेकिन कहाँ रहोगी ?

मेरे एक मित्र से मुलाकात हुई है। उससे कहने पर वही कोई इन्तजाम कर देगा।

दूसरे दिन पैकिंग-कम्पनी के लोगों ने आ कर डॉक्टर सरकार की किताबें और अन्य सामान पैक करना शुरू कर दिया। सारा सामान वही कम्पनी जहाज से कलकत्ते भेजने वाली थी, इस लिए तीन दिन बाद एक दिन सवेरे डॉक्टर सरकार बी० ओ० ए० सी० से कलकत्ता रवाना होने के लिए घर से चले।

डॉक्टर सरकार ने विक्टोरिया एयर टर्मिनल से ही मुझसे लौट जाने के लिए कहा, लेकिन मैं नहीं लौटी। एयरपोर्ट तक गयी।

एयरपोर्ट में डॉक्टर सरकार ने कहा, बेटा, तुम्हें छोड़ कर अचानक इस तरह जाना पड़ रहा है, इसलिए मन में बड़ी दुश्चिंता रही। लेकिन तुमसे इतना कह रहा हूँ कि जब जैसी जरूरत पड़े, इस बूढ़े बेटे को याद करना। इससे मुझे बड़ी खुशी होगी।

ज्यादा बात करने लायक मेरे मन की हालत नहीं थी। इस लिए सिर्फ इतना कहा, जरूरत की बात आपके अलावा और किससे कहूँगी ? मेरा तो और कोई नहीं है।

डॉक्टर सरकार ने किसी तरह आँसू रोक कर कहा, तुम्हारा यह बूढ़ा बेटा अकेला काफी है। इस लिए और किसी की जरूरत नहीं पड़ेगी।

हीथरो एयरपोर्ट की उस भीड़ में मेरी आँखों से आँसू की एक बूँद भी नहीं गिरी, लेकिन घर लौटने के बाद मुझे जो सूनापन और अकेलापन मिला, उसे मैं बरदाश्त न कर सकी। मैं जोर-जोर से रोने लगी।

रोते-रोते कब सो गयी थी, मुझे पता भी न चला था। दोपहर के बाद शाम हो आयी, लेकिन मुझे पता न चला।

जब नींद खुली, देखा कि कमरे में काफी अँधेरा हो चुका है। थोड़ी देर उस अँधेरे में चुपचाप बैठी रही। बड़ी भूख लगी थी, लेकिन सिर्फ अपने लिए किचन में जाकर खाना पकाने की इच्छा न हुई।

शायद घंटे भर बाद अचानक तन्मय आ गया। मेरे चेहरे की तरफ देख कर उसने कहा, बूढ़े बेटे के लिए इस तरह तबीयत खराब मत करो। तुम्हारा बूढ़ा बेटा फिर एक दिन अचानक आ पहुँचेगा।

तन्मय की वैसी बात का क्या जवाब देती ? सिर झुकाये चुपचाप बैठी रही।

फिर दो मिनट बाद तन्मय ने पूछा, जरूर एयरपोर्ट गयी थीं ?

मैंने स्वीकृति में सिर हिलाया।

लगता है कि दिन भर रोती रही। खाना भी न खाया होगा।

मैंने तन्मय के इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

तन्मय मुझे जबर्दस्ती खींचकर किचन में ले गया। वहीं दोनों ने मिल कर जरूरत भर का खाना बनाया। उसके बाद खाया। फिर इधर-उधर की बातों के बीच तन्मय ने पूछा, तुम यहाँ कितने दिन रहोगी ?

डॉक्टर सरकार का कुछ काम बाकी है। उसके लिए यह महीना पूरा यहीं रहना पड़ेगा।

लेकिन अकेली रह सकोगी ?

रोज शाम को एक बार आ जाना।

आ जाऊँगा, लेकिन...तन्मय अपनी बात पूरी न कर सका।

फीकी मुस्कान के साथ मैंने कहा, मेरी इस जिन्दगी में तमाम ऐसे लेकिन हैं, इस लिए मेरे बारे में मत सोचो।

तुम्हारे कहने से ही क्या मैं सोचना बन्द कर सकूँगा ?

फिर तुम भी यहाँ कितने दिन रहोगे ? एक-दो महीने में तुम भी तो चले जाओगे ?

तन्मय ने हँस कर कहा, तुम्हें इस तरह छोड़ कर चला जाऊँगा, यह तुमने कैसे सोच लिया ?

फिर क्या मैं भी तुम्हारे साथ स्टेट्स जाऊँगी ?

हर्ज क्या ?

फिर मैंने हँस कर कहा, कलकत्ते से लन्दन आ गयी, यही काफी है। अब अमरीका जाने की जरूरत नहीं है।

भाई रिपोर्टर, मैंने तो तुमसे पहले कहा है कि मेरे जीवन में अनेक पुरुष आये हैं। उनमें से अनेक ने एक-एक सीढ़ी ऊपर चढ़ने में मेरी मदद की है; लेकिन उस बूढ़े डाक्टर सरकार और कलकत्ते के उस मुँहबोले भाई के अलावा किसी पुरुष ने स्वार्थहीन हो कर मेरी सहायता नहीं की। बाकी सबने मुझे पार उतारने के लिए कुछ न कुछ लिया, चाहे वह कानी कौड़ी ही हो।

नाराज मत होना। एक बात कहूँगी। मुझे पता है कि इस संसार में पुरुषों का महत्त्व स्त्रियों से कहीं अधिक है। ईसा मसीह और भगवान बुद्ध से ले कर इस संसार में कितने ही महापुरुषों का आविर्भाव हुआ है। सबके बारे में हम

जान भी नहीं पाते। धर्म, त्याग, तितिक्षा और साधना के क्षेत्रों में भी स्त्रियाँ पुरुषों से बहुत पीछे हैं। फिर भी कहूँगी कि उर्वशी, रम्भा और क्लियोपेट्रा जैसी प्रसिद्धि पाने वाली स्त्रियाँ भी लाखों हुई हैं, लेकिन पुरुष इतिहासकारों ने उनको इतिहास के पृष्ठों पर सुरक्षित नहीं रखा। सिर्फ अपने अनुभव के नहीं, कलकत्ता, लन्दन, न्यूयार्क और अन्य अनेक नगरों-महानगरों की अनेक स्त्रियों के अनुभव के बल पर इतना तो कह सकती हूँ कि जंगल के खूँखार जानवरों की तुलना में अनेक पुरुष कहीं अधिक भयानक हैं। जो लोग सज्जनता का मुखौटा लगाये रहते हैं, उनमें या तो साहस नहीं है, नहीं तो उन्हें मौका नहीं मिलता। कलकत्ता और भारत के अनेक नगरों के अनेक निरीह और भोले-भाले सज्जनों का जो रूप मैंने विदेश में देखा है, उससे ऐसे सज्जनों के प्रति मेरी जरा भी श्रद्धा-भक्ति नहीं है।

तन्मय से मुझे जो सहायता मिली और सहयोग मिला, उसको तो मैं हमेशा याद करूँगी, लेकिन उसमें हिंसक और लोलुप लालसा का जो भयानक रूप देखा उसे भी कभी भूल नहीं सकती।

१५

उसके बाद दो-तीन दिन बड़ी व्यस्तता में बीते। कई जगह जाने और कई लोगों से मिलने में काफी समय लगता था। घर लौटते-लौटते रात हो जाती थी। तन्मय जरूर आता था, लेकिन उससे मुलाकात नहीं हो सकी।

वह शनिवार था। कई दिन लगातार घूमने के कारण बहुत थकी थी और सवेरे देर तक सो रही थी। अचानक जोर-जोर से दरवाजे की घंटी बजी तो उठना पड़ा। दरवाजा खोलते ही देखा तन्मय सामने खड़ा है।

तुम अब भी सो रही हो ?

क्यों ? कितने बजे ?

तन्मय ने मुस्करा कर कहा, ज्यादा नहीं, साढ़े दस बजे हैं।

मेरी आँखों में उस समय भी नींद थी। उनींदी आँखों से तन्मय को देखते हुए मुस्करा कर कहा, मन करता है, और थोड़ी देर सो लूँ।

सो जाओ न। कौन मना करता है ?

मैं सचमुच फिर अपने कमरे में जाकर लेट गयी। नींद नहीं आयी, लेकिन नींद से भरी हुई करवट ले कर लेटी रही। उसी तरह लेटे-लेटे तन्मय से पूछा, क्या तुम इस बीच आये थे ?

रोज आया, लेकिन तुम जैसी एकाकिनी सुन्दरी के दर्शन मिलने का सौभाग्य नहीं हुआ।

मैंने मुस्करा कर कहा, चलो, खैर मनाओ। मुझ जैसी डायन से जितनी कम मुलाकात हो, अच्छा है।

तन्मय अपनी कुर्सी को खींच कर मेरे बिस्तर के पास लाया। फिर मेरे मुँह के पास अपना मुँह ला कर बोला, तुम सचमुच डायन हो। तुम्हारे चंगुल में फँस कर कोई मर्द निकल नहीं सकता।

मैं फिर मुस्करायी। बोली, क्या हो गया है? एकदम सवेरे-सवेरे इस तरह रोमांटिक क्यों हो चले?

जब विश्वविद्यालय में पढ़ता था, तब तुम्हें दूर से देख कर मुग्ध होता था और अपने को धन्य मानता था। अब तुम्हारे इतने पास आ कर भी रोमांटिक नहीं बनूँगा?

लेकिन अब तुम भी छात्र नहीं हो, और न मैं ही उन दिनों की सुन्दरी युवती हूँ। फिर क्यों रोमांटिक बनोगे?

तन्मय ने एक बार मुझे अच्छी तरह देख लिया, फिर कहा, मैं आज भी छात्र हूँ, और तुम भी उन दिनों की तरह सर्वनाशिनी हो।

लम्बी दबी सांस छोड़ कर मैंने कहा, सर्वनाश करने वाली तो हूँ, लेकिन अपना सर्वनाश करके ही खुश रहूँगी। दूसरों का सर्वनाश नहीं करूँगी।

तन्मय मेरे चेहरे पर झुका। फिर उसने मेरे माथे पर और सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, तुम बात-बात में इस तरह सीरियस न बना करो। तुम भले ही अपना सर्वनाश करना चाहो, लेकिन मैं वैसा नहीं होने दूँगा।

इस पर मैं जोर से हँसी और खिलखिला कर बोली, तुम मेरे कौन हो कि मुझे रोकोगे?

तन्मय ने दोनों हाथों से मेरा चेहरा पकड़ कर कहा, तुम जो मेरी कविता हो!

मैं फिर हँसी। बोली, विदेश में अकेले रहते हो, इसलिए अच्छा नहीं लगता। फिर भी मोहवश काली नागिन से दोस्ती मत करो।

बेकार की बातें बन्द कर अब उठो।

क्यों? आराम से लेटी हूँ!

तुम लेटी रहोगी और मैं तुम्हारे पास बैठा रहूँगा, ऐसा नहीं हो सकता।

क्यों?

तन्मय ने हँसते हुए कहा, ऐसा मुझसे नहीं हो सकता।

फिर मैं भी नहीं उठूंगी।

नहीं-नहीं कविता, प्लीज। उठ जाओ। चाय पिलाओ।

बल्कि मैं लेटी रहूं और तुम चाय बना कर लाओ।

तन्मय सचमुच चाय बना कर लाया। बिस्तर पर बैठे-बैठे ही मैंने भी चाय पी।

चाय पीना खत्म होते ही तन्मय ने पूछा, डॉक्टर सरकार का कामकाज खत्म होने में और कितने दिन लगेंगे?

क्यों?

क्यों क्या? नौकरी-चाकरी नहीं करोगी?

क्या तुमने कहीं बात की है?

जनाब!

कहाँ?

यह तो नहीं जानता, लेकिन डॉक्टर जैक्सन ने कहा है कि आइ विल फिक्स हर अप समह्वेर।

मैंने मन ही मन कहा, कहीं भी नौकरी लगे, समय कटने से मतलब है।

यह मकान कब छोड़ोगी?

पहले कोई ठिकाना तो लग जाय, उसके बाद···

उसकी चिन्ता तुम्हें नहीं करनी होगी।

मैंने तन्मय की तरफ देख कर मुस्कराते हुए कहा, माँग में सिंदूर भरे बिना तुम्हारे वहाँ जा कर रहना क्या ठीक होगा?

मेरी बात सुन कर तन्मय हँसा। बोला, मन ही मन इच्छा रहते हुए भी ऐसी बात सुनने के बाद क्या हिम्मत जुटा पाऊँगा?

कुछ भी हो, दिन भर मजे में बीता। दोनों ने मिल कर ब्रेकफास्ट बनाया। खाया। गपशप की। चाय पी। मामूली खरीदारी की। खाना बनाया। खाना बनाते हुए भी दो-तीन बार चाय पी। फिर लंच खाते-खाते तीसरा पहर हो चला। उसके बाद दोनों अगल-बगल बैठ कर इधर-उधर की बातें करते रहे। शाम होते-होते तन्मय ने कहा, चलो, पिक्चर देख आयें।

बाहर पानी खूब बरस रहा था। इसके अलावा ठंड भी पड़ने लगी थी। मैंने कहा, नहीं-नहीं, इस ठंड में बाहर नहीं निकलूंगी। इस समय तो घर में बैठे-बैठे गप लड़ाने में ज्यादा मजा है।

फिर वही हुआ। हम गपशप करने लगे। उसके बीच एक-दो बार कॉफी पी। फिर तन्मय बोला, कविता, चीज पकौड़ा बनाओ। मैं ह्विस्की खरीद लाऊं।

उसके बाद ?

खिचड़ी बनाना । खिचड़ी खा कर चला जाऊँगा ।

लेकिन नहीं । उस रात तन्मय नहीं जा सका । मैंने ही उसे नहीं जाने दिया। वह जाने के लिए तैयार हो रहा था, लेकिन बाहर का दरवाजा खोलते ही मैं घबड़ा गयी । बोली, नहीं-नहीं तन्मय, इस वेदर मे तुम नहीं जा सकते । जाने पर मर जाओगे ।

खूब बारिश हो रही थी । उसी के साथ बर्फीली हवा चल रही थी ।

तन्मय बोला, पहले ऐसे मौसम में निकलने की बात सोचते ही डर जाता था, लेकिन अब आदत पड़ गयी है ।

फिर तन्मय ने मुस्करा कर कहा, इस समय तो पेट मे गरम खिचड़ी के साथ दो-चार पेग ह्विस्की भी गयी है ।

नहीं-नहीं, आज मत जाओ । कल तो रविवार है । इसके अलावा दो कमरे खाली पडे हैं । फिर क्यों बिलावजह इस बुरे मौसम में जाओगे ?

दरवाजा बन्द कर तन्मय ने मेरी तरफ देखते हुए पूछा, फिर न जाऊँ ?

मैंने सिर हिला कर कहा, नहीं ।

तन्मय ने अचानक मुझे दोनो हाथो से पकड़ कर झकझोरते हुए कहा, कम आंन, लेट अस ड्रिंक ऐण्ड डान्स ।

मैंने कमरे की तरफ कदम बढ़ाते हुए कहा, डिनर के बाद कोई ड्रिंक नहीं करता ।

वह सब नियम मैं नहीं मानता ।

क्यों ?

बाहर मौसम खराब है तो उससे बचाने के लिए तुमने मुझे जाने नहीं दिया; लेकिन अन्दर जो मौसम खराब है, उससे बचने के लिए मुझे शराब पीनी ही पड़ेगी । मतवाला बनना ही पड़ेगा ।

मैंने रुक कर पूछा, अन्दर कैसा मौसम खराब है ?

तन्मय ने मुस्करा कर कहा, तुम्हारी तरह ज्वालामुखो के कारण ''

सचमुच भाई रिपोर्टर, उस रात हम दोनो प्यार के नशे में होश-हवास खो चुके थे । मैं अपने को बचा न सकी थी । शायद उसकी इच्छा भी नहीं थी । सिर्फ इतना पता है कि मेरे शरीर ने विद्रोह करना चाहा था तो मेरे मन ने इतिहास की नयी मिट्टी की परत के नीचे विगत को छिपाना । लेकिन वह

अस्वाभाविक स्थिति देर तक नहीं थी। फिर जब मैं स्वाभाविक बनी, घर में और बाहर मौसम साफ हो चुका था और लन्दन का आकाश सूरज की रोशनी से भर गया था।

१६

मेरी इच्छा से नहीं, बल्कि तन्मय के प्रयास से मेरे जीवन में फिर नया मोड़ आया।

डॉक्टर जेक्सन ने मुझे देखते ही कहा, माइ डीयर डाटर, तुम कल ही आक्सफोर्ड जा कर डॉक्टर रावर्ट किंग से मुलाकात करना। ही इज लुकिंग फारवर्ड टु सी यू ऐंड टोनमय।

दूसरे ही दिन मैं तन्मय के साथ आक्सफोर्ड गयी। डॉक्टर किंग हमें देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने स्वयं कॉफी बना कर हमें पिलायी। उसके बाद उन्होंने मुझसे कहा, अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो तुम मेरे यूनेस्को प्रोजेक्ट में काम कर सकती हो। बट यू विल हैव टु लीव ब्रिटेन।

मेरे जवाब देने से पहले ही तन्मय बोला, सर, कविता को उसमें कोई आपत्ति नहीं है। घूम-फिर कर काम करने में उसे अधिक प्रसन्नता मिलती है।

दैट्स नाइस!

फिर मोटी सिगरेट का कश लेते हुए डॉक्टर किंग ने कहा, मुझे लगता है, कोविटा विल लाइक हर वर्क।

मैंने कहा, यूनेस्को प्रोजेक्ट में काम कर पाना तो बड़े भाग्य की बात है। मुझे यह अवसर देने के लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ।

ऑक्सफोर्ड से लौटते ही मैंने लैण्डलेडी को टेलीफोन करके बता दिया कि दो दिन में मकान छोड़ दूँगी। उसके बाद माँग में सिंदूर भरे बिना तन्मय के एपार्टमेंट में पहुँच गयी। वहाँ रहने का आग्रह नहीं था तो आपत्ति भी नहीं थी। मैं जानती थी कि तन्मय की सहायता जरूरी है। इस लिए किसी हद तक स्वार्थी की तरह उसका आमन्त्रण स्वीकार कर उसके घर पहुँच गयी।

आर्य फैक्टरी के कई सूटकेस साथ लिये कलकत्ते से लन्दन आयी थी। लंदन में बंगाली अध्यापक डॉक्टर सरकार के घर ठहरी थी। लेकिन यूनेस्को प्रोजेक्ट की नौकरी ले कर मुझे पहले ही पेरिस जाना था। पेरिस में भी अधिक दिन

रुकना नहीं था। वहाँ से आसपास के देशों के लिए निकल पड़ना था। उन स्थानों पर मुझे होटल में या अस्थायी रूप से कहीं और ठहरना था।

यही सब सोच कर मैं चिन्तित हो उठी। मध्यवित्त बंगाली परिवार की लड़की के लिए चिन्ता की ही बात थी। चिन्ता का और भी एक कारण था। लन्दन समुद्र पार विदेश होने पर भी वहाँ हर जगह कलकत्ते की गन्ध मिलती है। वहाँ भारतीयों की कमी नहीं है। सड़क पर, बस मे, ट्यूब में, बाजार की हर दुकान में भारतीय मिल जाता है। इस लिये नये आने वाले किसी भी भारतीय को लन्दन में परेशान नही होना पड़ता। लेकिन पैरिस या ब्रूसेल्स मे ऐसी बात नही है। इस लिए वैसे किसी शहर में भारतीयों के लिए परेशान होने की सम्भावना अधिक है। फिर मैं तो एक मामूली लड़की थी। इस कारण मेरे लिए तन्मय की सहायता आवश्यक थी। यही सब सोच कर मैंने अपने आपको बहुत छोटा महसूस किया।

मैं चुपचाप अपने कमरे मे बैठी थी। शायद काफी देर तक बैठी रह गयी थी। इसलिए तन्मय ने कमरे में घुसते ही पूछा, तुम अब भी उसी तरह चुपचाप बैठी हो?

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

तन्मय ने फिर पूछा, क्या इतना सोच रही हो?

मैंने सिर उठाये बिना कहा, तुम्हारे बारे मे सोच रही हूँ।

मेरे बारे मे?

तन्मय ने आश्चर्य से पूछा।

मैंने सिर हिला कर कहा, हाँ।

तन्मय ने हँसते हुए पूछा, अचानक मेरे बारे मे सोचने की क्या बात हो गयी?

फिर मैंने साफ-साफ कहा, इस समय मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है और मैं तुम्हारे पास आ गयी। मुझे पता नहीं था कि मैं इतनी स्वार्थी हूँ।

तन्मय बड़े जोर से हँस पड़ा। बोला, तुम स्वार्थी हो और मैं महापुरुष हूँ यही न?

फिर आगे बढ़ कर तन्मय ने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये और कहा, कविता, इस संसार में हम सभी स्वार्थी हैं। हाँ, कोई कम स्वार्थी है तो कोई अधिक।

मैं सिर झुकाये बैठी रही।

फिर दो-चार मिनट बाद तन्मय ने पूछा, कॉफी पियोगी?

मैंने कहा, तुम तो खुद ही खाना बना कर खाते हो। अब जो दो-चार दिन मैं यहां हूं, तुम्हें कुछ नहीं करना पड़ेगा।

उसके बाद अगर घर बसाने को मन हुआ तो ?

हो सकता है। उसमें मेरी आपत्ति का क्या कारण हो सकता है ?

लेकिन उसमें तो तुम्हारी सहमति चाहिए।

तुम घर बसाओगे तो उसमें मेरी क्या भूमिका होगी ? मैं तो दूर से शुभ-कामना भेजूंगी।

लेकिन ...

नहीं। मैंने तन्मय की कोई बात नहीं सुनी। मैं कॉफी बना कर लायी तो तन्मय बोला, तुम्हें जरूर कुछ खरीदारी करनी पड़ेगी।

हां।

क्या मुझे भी साथ रहना पड़ेगा ?

यहां नौकरी करने और घूमने-फिरने की क्या जरूरत पड़ती है, यह तो मैं नहीं जानती। इसलिए तुम साथ रहोगे तो ठीक रहेगा।

फिर चलो, थोड़ी देर बाद चलता हूं।

खाना नहीं पकाऊंगी ?

कोई जरूरत नहीं। बाहर खाना खा लेंगे।

नहीं-नहीं, मैं खाना पकाऊंगी।

फिर जरा रुक कर मुस्कराते हुए कहा, बाहर का खाना तो खाते ही रहते हो, दो-चार दिन मेरे हाथ का खाना खा लो।

बेकार क्यों कष्ट करोगी ?

इसमें कष्ट की क्या बात है ? खाना पकाना मुझे अच्छा लगता है।

ठीक है। फिर खाना खा कर चलेंगे ?

तन्मय ने बचपन में ही मां-बाप को खो दिया था, लेकिन उसके लाड़-प्यार में कोई कमी नहीं आयी थी। उसके ताऊ के कोई सन्तान नहीं थी, इसलिए ताई से उसे मातृस्नेह मिला था। शायद कुछ ज्यादा ही मिला था। दो-चार दिन उसके साथ रहकर समझ गयी थी कि उसे बढ़िया-बढ़िया खाना पसन्द है। इस लिए मैं जितने दिन उसके यहां रही, उसके लिए कोई न कोई बढ़िया खाना बनाती थी। वह मुझसे कहता था, तुम काफी हद तक मेरी ताई की तरह खाना बनाती हो। इसी लिए इतना ज्यादा खा लिया।

यह सुन कर मैं हंसी। बोली, चलो, तारीफ तो सुनने को मिली। तुम्हारे अलावा कभी किसी ने मेरी रसोई की तारीफ नहीं की।

नहीं कविता, तुम सचमुच बहुत अच्छा खाना बनाती हो। इसके अलावा तुम्हारे हाथ का खाना खा कर लगा कि जैसे मेरी ताई ने बनाया हो।

फिर जरा रुक कर तन्मय बोला, ताई अब नहीं है। उनके अलावा कभी इतने जतन से किसी ने मुझे खाना नहीं खिलाया।

मेरी पेरिस जाने की तैयारी और मेरी रसोई की तारीफ सुनने-सुनाने में समय मजे में कटने लगा। रात को बारह-साढे बारह बजे से पहले कभी सोने नहीं जाती थी। पहले दिन बहुत जल्दी खाना-पीना हो चुका था। उस दिन मुझे थका हुआ देख कर तन्मय ने एक-दो बार मुझसे सोने के लिए कहा, लेकिन मैंने ही जान-बूझ कर देर की। मैं तो यह सोच रही थी कि तन्मय ऐसा मौका हाथ से न निकलने देगा। फिर मैं भी उसे मना नहीं कर सकूँगी। मना करने पर भी वह नहीं मानेगा। इसलिए मैं गपशप करती रही और उसी में काफी रात हो गयी। उसके बाद तन्मय ने मेरे दोनों हाथ पकड़ कर कहा, उठो। अब जाकर सो जाओ। बहुत रात हो गयी है।

मैंने कहा, तुम जाओ न। मैं थोड़ी देर बाद सोने जाऊँगी।

नहीं-नहीं, तुम पहले सोने जाओ। आफ्टर ऑल तुम मेरी गेस्ट हो।

मैं जैसी गेस्ट के प्रति इतना सौजन्य दिखाने की आवश्यकता नहीं है। तुम निस्संकोच पहले जाकर सो जाओ।

इस पर तन्मय बोला, मैं बत्ती बुझा कर सो जाऊंगा तो तुम्हें अपने कमरे में जाने मे असुविधा होगी।

मैं समझ गयी कि तन्मय अपने कमरे मे सोने के लिए मुझसे नहीं कहेगा। इससे मेरा डर काफी कम हुआ, लेकिन मैं पूरी रात निश्चिन्त नहीं हो सकी। सोचा, शायद आधी रात को मेरे पास आ धमकेगा। शायद तभी मुझे परेशान करेगा। लेकिन मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जितने दिन मैं उसके पास रही, उसने एक क्षण के लिए भी परेशान नहीं किया। उसने इतने जतन से और आदर से मेरी देखभाल की कि मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं मन ही मन उस पर श्रद्धा किये बिना न रह सकी।

तन्मय के प्रति मन ही मन श्रद्धा लिये मैं नयी जिन्दगी शुरू करने के लिए पैरिस रवाना हो गयी, लेकिन यह श्रद्धा अधिक दिनों तक नहीं रह सकी।

मेरे पैरिस आने के महीने भर बाद ही ब्रुसेल्स से तन्मय का पत्र मिला—कविता, मैं ब्रुसेल्स आ गया हूँ। अब नौ महीने यहीं रहना पड़ेगा। लगता है, विधाता मुझे तुमसे बहुत दूर रखना नहीं चाहते। इसी लिए अटलांटिक के पार जाने से पहले यहाँ आया। शुक्रवार की शाम को मैं पैरिस आ रहा हूँ।

यह पत्र पाकर सचमुच खुशी हुई, लेकिन कुछ असमंजस में भी पड़ गयी। मेरे पास सिर्फ एक कमरा था। अलग बिस्तर का प्रबन्ध करने पर भी मुझे तन्मय के साथ एक ही कमरे में रहना था! उसने मेरा इतना उपकार किया था कि उसे होटल में नहीं रहने दिया जा सकता था। मन में दुविधा और संकोच रहने पर भी उसे अपने पास पाने की कल्पना से मुझे बड़ा अच्छा लगा।

मेरे छोटे से एपार्टमेंट में पहुँचते ही तन्मय ने मुझे अपने पास खींच कर कहा, शायद भगवान की यह इच्छा नहीं है कि तुमसे दूर रहूँ।

मैंने हँसते हुए पूछा, भगवान का नाम लेकर अपनी इच्छा के बारे में तो नहीं कह रहे हो?

मेरी तो यह इच्छा है ही तुम्हारे इस एपार्टमेंट में पूरी जिन्दगी बिता दूँ।

अच्छा?

हाँ, इस बारे में मेरे मन में कोई दुविधा नहीं है।

तुम्हारे मन में दुविधा न रहने पर भी मेरे मन में तो रह सकता है।

थोड़ी सी शैम्पेन पी लेने पर यह दुविधा कहाँ चली जायेगी, पता भी न चलेगा।

भाई रिपोर्टर, तुम तो जानते हो कि संसार के अन्य सभी महानगरों में एकाकी जीवन बिताना सम्भव होने पर भी पैरिस में उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। इतना ही नहीं, शाम होने पर यहाँ एक साथ दो लड़कों या दो लड़कियों को नहीं देखा जा सकता। ऐसा देख पाना बहुतों के लिए विस्मय का और कौतूहल का कारण बनता है।

इतना ही नहीं, दो-चार हफ्ते पैरिस में रहकर समझ गयी थी कि यहाँ किसी लड़की के लिए अकेले रहना खतरे से खाली नहीं है! इसलिए मन में चाहे जितनी दुविधा रहे और चाहे जितना भय, उन्मत्त नारी-लोभी अपरिचित पुरुषों से अपने को बचाने के लिए तन्मय को अपने पास पा कर मैं खुशी से भर गयी थी।

तन्मय के आगे कॉफी का प्याला रखते हुए मैंने पूछा, बताओ, क्या खाओगे?

कॉफी के प्याले को पहली बार होंठों से लगाते हुए तन्मय ने मेरी तरफ देखा और पलट कर सवाल किया, आते न आते खाने की बात क्यों पूछ रही हो?

नौ बज रहे हैं। इसलिए सोचा कि रसोई बना लेने के बाद गपशप की जाय।

तन्मय जोर से हँसा और बोला, आज शुक्रवार है। कल और परसों छुट्टी है। आज की शाम को भला कोई घर में रहता है?

मुझे पता है। लेकिन तुम थके हुए हो, इस लिए सोचा कि आज बाहर नहीं निकलेंगे।

तन्मय ने मेरी एक न सुनी। वह मुझे एक प्रकार से घसीट कर बाहर ले गया।

सिर्फ तन्मय को दोष देना उचित न होगा। उसके साथ मैं भी भूल गयी कि हम बंगाली हैं और भारतीय। यह भी भूल गये कि हम अविवाहित हैं। मानो खुशी से पागल हो कर हम नाचते-गाते घूमते रहे। उसी तरह हम हर जगह गये। साइडवाक काफे में खड़े हो कर एक बोतल शराब पी, जिससे हम और ज्यादा मतवाले हो उठे। उसके बाद तन्मय ने सारा संकोच त्याग कर सबके सामने मुझसे लिपट कर मुझे चूमा। यह सब करने के बाद भी वह मुझे ले कर घूमता रहा। हमने फिर शराब पी। नाच देखा। हम एक के बाद दूसरे काफे में जाते रहे और हर जगह थोड़ा-थोड़ा खा कर पूरा डिनर ही खा लिया।

भाई रिपोर्टर, उसके बाद क्या हुआ सुनना चाहते हो?

रात दो-ढाई बजे हम अपने एपार्टमेंट में लौटे। उसके बाद क्या हुआ, मैं नहीं लिख सकती। सिर्फ इतना जान लो कि दूसरे दिन जब नींद खुली, तब आसमान में सूरज काफी ऊँचाई तक पहुँच चुका था। फिर आँखें खोलते ही मैं अपने सामने निर्वस्त्र नर-नारी का विशाल चित्र देख कर आश्चर्य चकित हुई। लेकिन एक मिनट बाद वह आश्चर्य दूर हुआ। मैं समझ गयी कि वह चित्र किसी चित्रकार का बनाया हुआ नहीं था। सामने दीवार में लगे आइने में हमीं चित्रवत प्रतिफलित हो रहे थे।

आज यहीं खत्म कर रही हूँ।

१७

तन्मय उस समय भी बेखबर सो रहा था। मैं भी थोड़ी देर चुपचाप लेटी रही। मेरे मन में तरह-तरह की बातें आयीं। अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में सोचा। तन्मय मुझसे इस तरह लिपटा था कि मैं करवट भी न बदल सकी। फिर भी गरदन टेढ़ी कर उसे देख लिया। उसे देखने की बड़ी इच्छा हो रही थी। सोचा था, उसे देखते ही गुस्सा आयेगा, नफरत होगी; लेकिन न गुस्सा आया और न उससे नफरत हुई। मुझसे वह सब कुछ न हो सका। बल्कि तन्मय के प्रति सहानुभूति से मेरा मन भर गया। उसके बाद अचानक मेरे मन में आया

कि अगर मेरा बेटा होता तो बड़ा अच्छा रहता। सोचा कि फिर तो वह इसी तरह मुझसे लिपटा सोता रहता। अगर मैं करवट बदलने की कोशिश करती तो मेरा बेटा नींद की हालत में मुझसे और ज्यादा लिपट जाता। मैं करवट भी न ले पाती। इस तरह की कितनी ही बातें मन में आयीं। उसके बाद एक क्षण के लिए मेरे मन में आया कि तन्मय अगर सचमुच बच्चा बन जाय या उसके समान मेरा बेटा हो तो कितना अच्छा रहे।

सिरहाने की तरफ की खिड़की से अचानक ढेर सारी धूप मेरे चेहरे पर आ कर पड़ी तो मेरा सपना देखना बन्द हुआ। तन्मय को नींद से न जगा कर मैं बड़ी मुश्किल से उठी। उठ कर देखा कि कमरे के फर्श पर बिछे कार्पेट पर हम दोनों के कपड़े, बेग और पर्स वगैरह बिखरे पड़े हैं। मुझे हँसी आयी। सोचा, कल रात क्या हम दोनों एक साथ पागल हो गये थे ?

तन्मय पर चादर डाल कर मैं बाथरूम में गयी। फिर आधे घंटे या पैंतालिस मिनट बाद लौट कर मैंने देखा कि तन्मय उस समय भी बेखबर सो रहा है। समझ गयी कि कल रात उसने जरा ज्यादा ड्रिंक कर लिया था। फिर उतनी रात को लौट कर उसने कब तक मेरे साथ पागलपन किया था, कहा नहीं जा सकता। इस लिए सोचा कि अभी उसे नहीं जगाऊँगी।

मैंने अपने लिए एक कप चाय बना कर खाना बनाने का इन्तजाम करना शुरू कर दिया। उसके बाद थोड़ी फुरसत मिलते ही मैं उस कमरे को ठीक करने गयी। तन्मय के कपड़े उठाते ही देखा कि उसके पर्स से कुछ कागज बाहर पड़े हैं। उन कागजों को हटाते ही मैं चौंक पड़ी। गुस्से से और नफरत से मेरा मन तन्मय के प्रति विद्रोही हो उठा। एक बार मन में आया कि कोड़ा मिल जाय तो जी भर कर उसे लगाऊँ। या···

फिर मैं तन्मय के सामने खड़ी न रह सकी। एक बार मन में आया कि कमरे का दरवाजा लॉक करके निकल जाऊँ। फिर सोचा नहीं-नहीं, मैं क्यों भागूँगी ? यही सब बातें सोचते हुए मैं थोड़ी देर कमरे में चहलकदमी करती रही। उसके बाद खिड़की के सामने जाकर चुपचाप खड़ी हो गयी।

मैं कितनी देर कमरे के सामने खड़ी थी, कह नहीं सकती। अचानक पीछे से आ कर तन्मय मुझसे लिपट गया तो मैंने बाहर की तरफ देखते हुए उससे पूछा, रात भर मेरा उपभोग करने के बाद भी तुम्हारा मन नहीं भरा ?

तन्मय ने मेरे कंधे पर मुँह रख कर कहा, रात भर क्यों, जिन्दगी भर तुम्हारा उपभोग करने पर भी मेरा मन नहीं भरेगा।

सच कहते हो ?

तन्मय ने मेरी छाती पर हाथ रख कर कहा, सच कहता हूँ ।

छाती के अन्दर जलन होने पर भी मैंने तन्मय से पूछा, क्या तुम मुझसे खूब प्यार करोगे ?

तन्मय ने मुस्करा कर कहा, यह भी तुम पूछ रही हो ?

यह कहने के बाद तन्मय ने मुझे पकड़ कर अपनी तरफ किया और मेरे होंठों को, चेहरे और गले को बार-बार, अनेक बार चूमा ।

फिर तन्मय ने कहा, तुम्हें देख कर तो नहीं लगा था कि तुम मुझे इस तरह चाहती हो ।

मैंने मुस्करा कर कहा, किसी को देख कर कितना समझा जा सकता है ?

घनिष्ठता से मिलने-जुलने पर तो जरूर समझा जा सकता है ।

कह नहीं सकती ।

क्यों ऐसा कह रही हो कि कह नहीं सकती ? मैंने तुमको जितना जाना-पहचाना है, तुमने भी मुझको उसी तरह जाना-पहचाना होगा ।

मैंने मुस्करा कर कहा, तुम लोग कहते हो कि पुरुषस्य भाग्यम् और स्त्रियाश्चरित्रम् मनुष्य क्या देवता भी नहीं समझ सकते । लेकिन यदि सम्भव होता तो मैं इस कहावत को बदल कर पुरुषस्य चरित्रम् कर देती ।

क्यों ?

क्योंकि सिर्फ स्त्रियों का नहीं, पुरुषों का चरित्र भी सचमुच देवता नहीं समझ सकते ।

अचानक ऐसी बात क्यों कह रही हो ?

नहीं, यों ही मन में बात आ गयी, कह दी ।

भले ही सबको न समझा हो, लेकिन मुझको तो समझा है ।

जरूर ! कुछ तो समझा है ।

जितना समझा है, क्या उससे तुम खुश हो ?

मैं फिर मुस्करायी । बोली, जितना समझा है और जितना पाया है, उससे कोई लड़की खुश नहीं हो सकती ।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद तन्मय ने पूछा, चाय पी ली है ?

सॉरी ! अभी तुम्हें चाय देती हूँ ।

चाय ला कर देते ही तन्मय ने हँसते हुए पूछा, आज भी तो तुम्हें कल की तरह पा सकूँगा ?

क्या कभी कल की तरह आज हो सकता है ? कल तो कल ही खत्म हो चुका है । कल जैसा दिन फिर कभी नहीं आ सकता ।

ऐसा क्यों कह रही हो ? कल क्या तुम्हें अच्छा नहीं लगा था ?

कल जब तुम्हारे साथ घुल-मिल कर घूमती-फिरती और हँसती-खेलती रही, तब तो जरूर अच्छा लगा था। लेकिन····

मैंने अपनी बात पूरी नहीं की। अचानक रुक गयी। फिर सिर झुकाये बैठी रही।

तन्मय ने मेरे चेहरे को आहिस्ते से उठा कर पूछा, लेकिन कह कर रुक क्यों गयी ?

यों ही।

मैं फिर सिर झुकाये बैठी रही। लेकिन चाहे-अनचाहे मेरे मन में आनन्द, उत्तेजना और सपने सँजोने की जो अनुभूति बनने लगी थी, वह अचानक खो जाने से मुझे सचमुच रोना आ गया। मैंने अपने जीवन में सिर्फ एक को मन-प्राण से चाहा था। उसे खोने के बाद और किसी को चाहने की इच्छा नहीं थी, फिर भी तन्मय को जरूर अच्छा लगा था। वह अच्छा लगना अगर बना रहता तो शायद अतीत के सारे दुख को भूल कर नये सिरे से अच्छी तरह जिन्दा रहने की बात सोचती। सोचती क्या, शायद मन ही मन सोचने भी लगी थी। मेरी यह बात शायद तुम्हें सुनने में अच्छी नहीं लग रही है, लेकिन भाई रिपोर्टर ! किसी भी दुख को कोई हमेशा याद नहीं रखता। मन के तट पर मिट्टी की नित नयी परत जमती जाती है, जिसके नीचे दुख न जाने कहाँ छिप जाता है।

मन में हजारों तरह की ऊल-जलूल चिन्ताएँ आ रही थीं। तन्मय ने भी विशेष बातचीत नहीं की। वह बाथरूम गया। वहाँ से लौट कर बोला, कविता बहुत तेज भूख लगी है। कुछ खाने को दोगी ?

हाँ, दे रही हूँ।

खाते समय भी कोई विशेष बातचीत नहीं हुई। तन्मय ने सिर्फ एक बार पूछा, खाने के बाद निकलोगी न ?

मैंने कहा, नहीं।

क्यों ?

बहुत टायर्ड हूँ। सोऊँगी।

खाना खा कर मैं लेट गयी। थोड़ी देर चहलकदमी करने के बाद तन्मय भी मेरे पास आ कर लेट गया। मैं करवट लिये लेटी थी। वह मुझसे लिपटने लगा तो मैंने कहा, अब सोने दो।

बात भी नहीं करोगी ?

अभी मन नहीं कर रहा है। फिर इस तरह लिपटे रहोगे तो मुझे नींद भी नहीं आयेगी।

फिर कल रात कैसे सोयी ?

कल रात मैं किसी तरह स्वाभाविक नहीं थी।

तन्मय जरा हँस कर बोला, कुछ भी हो, कल बहुत एनजॉय किया। सच कहता हूँ कविता, जीवन में कभी इतना आनन्द नहीं मिला।

यह सुन कर मेरे चेहरे पर व्यंग्य भरी मुस्कान खिल गयी, लेकिन तन्मय देख न सका। मैंने कहा, सच कहते हो।

हाँ। ऐसा आनन्द कहाँ मिलेगा ?

क्या इस सवाल का जवाब मुझसे पाना चाहते हो ?

अचानक मुझे खींच कर तन्मय ने अपनी तरफ मेरा मुंह कर लिया और कहा, तुम्हें क्या हो गया है ?

कुछ नहीं।

लेकिन सबेरे सो कर उठने के बाद से देख रहा हूँ कि तुम कुछ उखड़ी-उखड़ी सी हो। क्या बात है ?

मैंने हँस कर कहा, सोने दो। सब ठीक हो जायेगा।

तीसरे पहर नींद खुलते ही देखा, तन्मय बीयर पी रहा है। मुझे सो कर उठते देख कर तन्मय ने हँसते हुए पूछा, आर यू रेडी फॉर इवनिंग प्रोग्राम ?

एक क्षण के लिए मन में अनेक चिन्ताएं आयीं और गयीं। उसके बाद मन ही मन सोचा, स्वाभाविक स्थिति में मैं कभी भी सारी बातें नहीं कह सकती। इसलिए ··

मैंने हँसते हुए कहा, टायलेट से लौट कर तैयार हो लेती हूँ।

मेरी बात सुन कर तन्मय खुशी के मारे उछल पड़ा और मुझसे लिपट गया। उसने मुझे चूमा, बहुत चूमा।

मैंने हँसते हुए कहा, बस दस मिनट इन्तजार करो।

उसके बाद मैंने तैयार हो कर एक बोतल ह्विस्की निकाली।

तन्मय ने आश्चर्य से पूछा, ह्विस्की क्यों निकाली ? बीयर नहीं पियोगी ?

बीयर पीने पर क्या नशा होता है ? उससे तो बस खुमारी आती है।

लेकिन···

तन्मय को कुछ कहने का मौका न दे कर मैंने ह्विस्की की बोतल थोड़ी गिलास में उड़ेली। उसके बाद उसमें दो-चार आइस-क्यूब डाल कर गिलास उठाया और कहा, चीयर्स !

न जाने तन्मय क्या सोचने लगा था। अचानक उसने बीयर का जग उठा कर कहा, चीयर्स !

दो-तीन राउण्ड ह्विस्की पीने के बाद मैंने तन्मय से लिपट कर पूछा, क्या मैं तुम्हें अच्छी लगती हूँ ?

तन्मय ने जोर से हँसते हुए कहा, क्या ऐसा भी कोई पुरुष है, जिसे तुम अच्छी नहीं लगती ?

मेरी तरह और तो कोई तुम्हें अच्छी नहीं लगती ?

क्या तुम पागल हो गयी हो ?

मैंने दोनों हाथों से तन्मय का चेहरा पकड़ कर कहा, नहीं-नहीं, मैं पागल नहीं हो गयी। बताओ, मैं जैसी क्या और कोई तुम्हें अच्छी लगी थी ?

इस तरह अच्छी लगने वाली लड़की और कहाँ है ?

फिर मुझसे बरदाश्त नहीं हुआ। तड़ से तन्मय के गाल पर तमाचा जड़ कर मैंने कहा, क्या मेरी जैसी शिखा तुम्हें अच्छी नहीं लगी थी ?

मेरी बात सुन कर तन्मय एक क्षण के लिए गूंगा बन गया। वह पत्थर की मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा रहा। मैंने उसका बदन पकड़ कर कहा, अब मुझसे शादी करनी ही पड़ेगी। हीयर ऐण्ड नाउ। मुझसे शादी नहीं करोगे तो मैं तुम्हें यहाँ से नहीं जाने दूंगी।

भाई रिपोर्टर ! उस समय मेरा दिमाग ठीक नहीं था। तन्मय से और भी बहुत कुछ कहा था, लेकिन वे सब बातें अब याद नहीं पड़तीं। बस, इतना याद है कि मैंने उसे जी भर कर डाँट लिया तो उसने कहा, मुझसे शादी करके कोई फायदा न होगा।

फायदे और नुकसान की बात छोड़ो। मुझसे तुम जरूर शादी करोगे।

तन्मय ने सिर झुकाये कहा, मुझसे शादी करने पर तुम कभी माँ नहीं बन सकोगी।

फिर मैं पागल की तरह चिल्ला कर बोली, क्या इसी लिए तुम कलकत्ते में अपनी पत्नी को छोड़ कर शिखा के साथ मौज मस्ती करने लन्दन आये हो ? लेकिन शिखा को शराब पिला कर उसका नेकेड फोटो क्यों खींचा ? क्या उसको ब्लैक-मेल करोगे ?

तन्मय खामोश बैठा रहा।

क्या मेरा न्यूड फोटो नहीं खींचोगे ? कम ऑन ! हैव माई नेकेड फोटोग्राफ !

तन्मय फिर भी खामोश बैठा रहा।

मैंने भात मार कर ह्विस्की की बोतल परे फेंक दी और कहा, बहुत हो चुका तन्मय, भाउ गेट आउट ! निकल जाओ। अभी निकल जाओ।

सच कहती हूँ माई रिपोर्टर, उस दिन तन्मय को भगा देने के बाद फिर मैंने कभी उसके बारे में नहीं सोचा।

१८

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था यूनेस्को में मैं तीन वर्ष रही। विभिन्न कार्यों के सिलसिले में दुनिया भर के विद्वानों, शिक्षाविदों और मनीषियों का समागम यूनेस्को के मुख्यालय में होता है। कभी किसी काम के सिलसिले में तो कभी काकटेल, डिनर या रिसेप्शन के दौरान उनमें से बहुतों के सम्पर्क में मैं आयी। उनसे परिचय हुआ। कभी-कभी उनके साथ घूमना भी पड़ा। विभिन्न देशों में गयी।

उन तीन वर्षों में मैं ऐसे लोगों के निकट सम्पर्क में आयी, जिनके कारण मेरा जीवन धन्य हो गया। उनसे कितनी ही बातें सुनी हैं और सीखीं। उनकी विद्वत्ता और महत्ता देख कर मैं विस्मित हुई, मुग्ध हुई।

इसमें कोई शक नहीं कि तन्मय ने मुझे बड़ा कष्ट और दुख दिया, लेकिन मैं मन ही मन उसका एहसान मानती हूँ। क्यों ? क्योंकि उसी के आग्रह और प्रयास से मैं डॉक्टर राबर्ट किंग के सम्पर्क में आयी थी और मेरे जीवन में एक अद्वितीय अध्याय की शुरुआत हुई थी। आज जो मैं यूनाइटेड नेशन्स में हूँ, उसके पीछे भी उनका प्रयास है।

एक दिन गुस्सा करके ही मैं चाचा जी के घर से निकल कर सुपर्णा और अमिय के घर चली गयी थी। लेकिन आज जब अपने अतीत के बारे में सोचती हूँ और लाभ-हानि का हिसाब लगाती हूँ, तब यही लगता है कि मेरे जीवन को बनाने में उस चरित्रहीन चाचा का योग दान भी कम नहीं है। माई रिपोर्टर, तुम्हारी इस दीदी के माँ-बाप नहीं थे। उसी चाचा के आश्रय में रह कर तुम्हारी दीदी को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला था।

मैं पढ़ने-लिखने में बहुत बुरी नहीं थी, लेकिन उसके लिए बहुत ज्यादा मेह-नत करना जरा भी अच्छा नहीं लगता था। विशेष कर माँ-बाप को खोने के बाद एक ऐसा समय आया था, जब मैं सचमुच पढ़ाई छोड़ देने की बात सोचने लगी थी। लेकिन नहीं, वैसा नहीं हो सका था। सिर्फ उस चाचा जी के कारण

न जाने तन्मय क्या सोचने लगा था। अचानक उसने बीयर का जग उठा कर कहा, चीयर्स !

दो-तीन राउण्ड ह्विस्की पीने के बाद मैंने तन्मय से लिपट कर पूछा, क्या मैं तुम्हें अच्छी लगती हूँ ?

तन्मय ने जोर से हँसते हुए कहा, क्या ऐसा भी कोई पुरुष है, जिसे तुम अच्छी नहीं लगती ?

मेरी तरह और तो कोई तुम्हें अच्छी नहीं लगती ?

क्या तुम पागल हो गयी हो ?

मैंने दोनों हाथों से तन्मय का चेहरा पकड़ कर कहा, नहीं-नहीं, मैं पागल नहीं हो गयी। बताओ, मैं जैसी क्या और कोई तुम्हें अच्छी लगी थी ?

इस तरह अच्छी लगने वाली लड़की और कहाँ है ?

फिर मुझसे बरदाश्त नहीं हुआ। तड़ से तन्मय के गाल पर तमाचा जड़ कर मैंने कहा, क्या मेरी जैसी शिखा तुम्हें अच्छी नहीं लगी थी ?

मेरी बात सुन कर तन्मय एक क्षण के लिए गूँगा बन गया। वह पत्थर की मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा रहा। मैंने उसका बदन पकड़ कर कहा, अब मुझसे शादी करनी ही पड़ेगी। हीयर ऐण्ड नाउ। मुझसे शादी नहीं करोगे तो मैं तुम्हें यहाँ से नहीं जाने दूँगी।

भाई रिपोर्टर ! उस समय मेरा दिमाग ठीक नहीं था। तन्मय से और भी बहुत कुछ कहा था, लेकिन वे सब बातें अब याद नहीं पड़तीं। बस, इतना याद है कि मैंने उसे जी भर कर डाँट लिया तो उसने कहा, मुझसे शादी करके कोई फायदा न होगा।

फायदे और नुकसान की बात छोड़ो। मुझसे तुम जरूर शादी करोगे।

तन्मय ने सिर झुकाये कहा, मुझसे शादी करने पर तुम कभी माँ नहीं बन सकोगी।

फिर मैं पागल की तरह चिल्ला कर बोली, क्या इसी लिए तुम कलकत्ते में अपनी पत्नी को छोड़ कर शिखा के साथ मौज मस्ती करने लन्दन आये हो ? लेकिन शिखा को शराब पिला कर उसका नेकेड फोटो क्यों खींचा ? क्या उसको ब्लैक-मेल करोगे ?

तन्मय खामोश बैठा रहा।

क्या मेरा न्यूड फोटो नहीं खींचोगे ? कम ऑन ! हैव माई नेकेड फोटोग्राफ !

तन्मय फिर भी खामोश बैठा रहा।

मैंने लात मार कर ह्विस्की की बोतल परे फेंक दी और कहा, बहुत हो चुका तन्मय, नाउ गेट आउट ! निकल जाओ। अभी निकल जाओ।

सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, उस दिन तन्मय को भगा देने के बाद फिर मैंने कभी उसके बारे में नहीं सोचा।

१८

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था यूनेस्को में मैं तीन वर्ष रही। विभिन्न कार्यों के सिलसिले में दुनिया भर के विद्वानों, शिक्षाविदों और मनीषियों का समागम यूनेस्को के मुख्यालय में होता है। कभी किसी काम के सिलसिले में तो कभी काकटेल, डिनर या रिसेप्शन के दौरान उनमें से बहुतों के सम्पर्क में मैं आयी। उनसे परिचय हुआ। कभी-कभी उनके साथ घूमना भी पड़ा। विभिन्न देशों में गयी।

उन तीन वर्षों में मैं ऐसे लोगों के निकट सम्पर्क में आयी, जिनके कारण मेरा जीवन धन्य हो गया। उनसे कितनी ही बातें सुनी हैं और सीखी। उनकी विद्वत्ता और महत्ता देख कर मैं विस्मित हुई, मुग्ध हुई।

इसमें कोई शक नहीं कि तन्मय ने मुझे बड़ा कष्ट और दुख दिया, लेकिन मैं मन ही मन उसका एहसान मानती हूँ। क्यों? क्योंकि उसी के आग्रह और प्रयास से मैं डॉक्टर राबर्ट किंग के सम्पर्क में आयी थी और मेरे जीवन में एक अद्वितीय अध्याय की शुरुआत हुई थी। आज जो मैं यूनाइटेड नेशन्स में हूँ, उसके पीछे भी उनका प्रयास है।

एक दिन गुस्सा करके ही मैं चाचा जी के घर से निकल कर सुपर्णा और अमिय के घर चली गयी थी। लेकिन आज जब अपने अतीत के बारे में सोचती हूँ और लाभ-हानि का हिसाब लगाती हूँ, तब यही लगता है कि मेरे जीवन को बनाने में उस चरित्रहीन चाचा का योग दान भी कम नहीं है। भाई रिपोर्टर, तुम्हारी इस दीदी के माँ-बाप नहीं थे। उसी चाचा के आश्रय में रह कर तुम्हारी दीदी को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला था।

मैं पढ़ने-लिखने में बहुत बुरी नहीं थी, लेकिन उसके लिए बहुत ज्यादा मेहनत करना जरा भी अच्छा नहीं लगता था। विशेष कर माँ-बाप को खोने के बाद एक ऐसा समय आया था, जब मैं सचमुच पढ़ाई छोड़ देने की बात सोचने लगी थी। लेकिन नहीं, वैसा नहीं हो सका था। सिर्फ उस चाचा जी के कारण

वैसा नहीं हो सका था। जब रिसर्च करने लगी थी, तब कभी-कभी मन में यह विचार उठता था कि रिसर्च करके क्या होगा ? डॉक्टरेट बनूंगी ? अध्यापिका बनूंगी ? नहीं-नहीं, पालतू मैने की तरह दिन पर दिन, महीनों और बरसों एक ही रटी-रटायी बात छात्र-छात्राओं के आगे नहीं कह सकूंगी।....

लगातार तीन-चार दिनों तक सिर्फ कहानी-उपन्यास पढ़ने और सहेलियों के संग सिनेमा देखने लगी थी। एक-दो दिन चाचा जी ने कुछ नहीं कहा। लेकिन उसके बाद एक दिन इवनिंग शो देख कर घर लौटते ही चाचा जी ने मुस्करा कर कहा, आइ फील हैपी टु सी यू एनजॉयिंग।

मैंने मुस्करा कर कहा, थैंक्स !

बीच-बीच में इस तरह मनोरंजन करना बहुत अच्छा है।

मैं तो सोचती हूँ कि इसी तरह हँसते-खेलते जिन्दगी बिता दूंगी।

हँसते-खेलते जिन्दगी बिता दोगी ?

जी हाँ।

लेकिन वैसा कर सकोगी ?

क्यों नहीं कर सकूंगी ?

चाचा जी ने सिर हिला कर कहा, नहीं कविता, नही कर सकोगी। कोई भी आदमी सिर्फ हँस-खेल कर जिंदगी नहीं बिता सकता। थोड़ा-बहुत काम किये या जिम्मेदारी निभाये बिना कोई आदमी जिन्दा नहीं रह सकता। तुम भी नहीं रह सकोगी।

बहस किये बिना मैं चुप रही।

फिर रात को सोने के बाद चाचा जी ने कहा, सभी पढ़ाई नहीं करते। वैसा सम्भव भी नहीं है। तुम्हारे माँ-बाप जीवित रहते तो कोई कुछ न कहता। लेकिन अब तुम पढ़ाई बन्द कर दोगी तो सभी मुझको दोष देंगे। सब यही सोचेंगे कि तुम्हारी पढ़ाई के मामले में मेरा कोई उत्साह नहीं था, जिससे तुम पढ़-लिख नहीं सकी।

क्या लोग ऐसा सोचेंगे ?

हाँ कविता, सब यही सोचेंगे। इसके अलावा तुम नहीं पढ़ोगी-लिखोगी तो मैं भी अपने विवेक के आगे अपराधी बना रहूँगा।

मुझसे कोई जवाब देते न बना।

चाचा जी ने फिर कहा, तुम एम० ए० पास कर लोगी, डॉक्टरेट बन जाओगी तो मैं भी सबसे गर्व के साथ कह सकूंगा...

विश्वास करो भाई, रात-रात भर जग कर चाचा जी ने मेरे नोट्स तैयार

किये। रिसर्च करते समय जो किताब मुझे कहीं नहीं मिली, वहीं किताब चाचा जी ने मुझे ला कर दी। इतना ही नहीं। चाचा जी ने अपनी टाइपराइटर पर मेरा थीसिस टाइप कर दिया था। थीसिस टाइप करना बड़ी मेहनत का ऊबाने वाला काम है। मैंने उनको बार-बार मना किया था, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी थी।

दोनों हाथों से ह्विस्की का गिलास घुमाते हुए चाचा जी ने कहा था, मैं जानता हूँ कविता कि कुछ रुपये दे कर तुम इस थीसिस को टाइप करवा सकती हो, लेकिन इसे अपने हाथ से टाइप करने पर मुझे जो आनन्द और सन्तोष मिलेगा उसकी कीमत कहीं अधिक होगी।

लेकिन चाचा जी, यह बड़ी मेहनत का काम है।

हुआ करे!

एक घूंट ह्विस्की पीने के बाद चाचा जी ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर कहा, एक दिन शायद तुम बहुत दूर चली जाओगी, शायद मुझसे कोई सम्पर्क भी नहीं रहेगा, लेकिन किसी और बात के लिए न सही, इस थीसिस टाइप करने के कारण तुम मुझे याद रखोगी।

उस दिन मैंने चाचा जी की बात का विरोध करते हुए कहा था, आप थीसिस टाइप न भी करें, मैं आपको कभी नहीं भूलूंगी।

चाचा जी ने मुस्करा कर कहा था, ऐसा न कहो कविता, अनेक प्रिय जनों को मनुष्य भूल जाता है। इस लिए तुम भी कभी मुझे भूल न जाओगी, यह अभी से जोर दे कर कैसे कहा जा सकता है?

उस दिन मैंने देर तक चाचा जी से बहस की थी, लेकिन इतने दिनों बाद आज मुझे स्वीकार करना पड़ रहा है कि चाचा जी ने सही कहा था।

चाचा जी मेरे पिता जी के मित्र थे। उम्र और मानसिक स्तर के लिहाज से उनसे मेरा कोई मेल नहीं था। फिर भी उनसे मेरा मित्रता का सम्बन्ध बनने मे कोई बाधा नहीं आयी थी। उसके बाद उनके फ्लैट में रहते समय मुझसे उनकी घनिष्ठता बहुत बढ़ गयी थी। उनसे मेरा शारीरिक सम्बन्ध भी बन चुका था, फिर भी मैंने कभी उनको दुश्चरित्र नहीं समझा। लेकिन रमला को देखते ही मैं क्षण भर मे बदल गयी थी। अचानक एक घटनाबहुल अध्याय को समाप्त कर मैं अपनी सहेली सुपर्णा के पास चली गयी थी।

अब चाचा जी की और अपने पुराने दिनों की बातें मैं याद नहीं करती। शायद याद करना भी नहीं चाहती। उसकी जरूरत भी महसूस नहीं करती। माई रिपोर्टर, तुमको पत्र लिखती हूँ तो पुराने दिनों की बहुत सी बातें नये सिरे

से याद करनी पड़ती हैं। आज मुझे स्वीकार करना पड़ रहा है कि इन दिनों कभी-कभी चाचा जी की बातें याद आती हैं। पता नहीं आज वे कहाँ हैं। वे जीवित भी हैं या नहीं, यह भी नहीं जानती। अगर जीवित भी हैं तो स्वस्थ न होंगे। शायद सलाउद्दीन भी उनके पास नहीं है। सलाउद्दीन की खबर भी नहीं रखती। इसी लिए हजार तरह की बुरी चिन्ताएँ मन में आती हैं। पता नहीं, चाचा जी ठीक से खाते-पीते हैं कि नहीं। उन्हें आर्थिक कष्ट तो नहीं है ?

जिस आदमी को एक दिन एकदम बरदाश्त न कर सकी थी, जिससे भरपूर नफरत करने लगी थी, अब कभी-कभी रात-रात भर उसी के बारे में सोचती रहती हूँ। बिना सोचे रह नहीं सकती। कभी-कभी उनको देखने की बड़ी इच्छा होती है। शायद अब मैं उनसे घृणा नहीं करती।

रिपोर्टर भाई ! बता सकते हो कि क्यों ऐसा होता है ? इसी लिए मैं कहती हूँ कि जितने भी लोग मेरे पास आये, सबने मुझसे कुछ लिया तो मुझे कुछ दिया भी है। इस संसार में अमिय जैसे पुरुषों की संख्या बहुत बड़ी नहीं है। व्यापार न करने पर भी इस दुनिया के नब्बे प्रतिशत लोग व्यापारी हैं। लगभग सभी लेन-देन करना चाहते हैं।

अमिय सिर्फ विशेष नहीं, असाधारण और अद्वितीय था। वैसे लोगों की बात अलग है। मैंने अमिय से सिर्फ प्यार नहीं किया, उसे श्रद्धा भी की है। आज भी करती हूँ। यूनेस्को का अजीजुल इस्लाम भी उसी तरह का है।

इंडियन एम्बैसी के कलचरल कोन्सिलर मिस्टर गिडवानी के घर एक पार्टी में अजीजुल से मेरी पहली मुलाकात हुई थी। उसी दिन मैं समझ गयी थी कि ढाके का वह ठेठ बंगाली, जिसे पश्चिम बंगाल वाले बांगाल कहते हैं, सचमुच असाधारण है। भीड़ में भी उसे पहचान लेने में कोई परेशानी नहीं होती।

मिस्टर गिडवानी ने अजीज से मेरा परिचय करा दिया तो अजीज ने तपाक से मुझसे कहा, आपा, आप मुझे अजीज कह कर पुकारा करें।

आपा का मतलब समझ गये न, बड़ी बहन !

अजीज ने हँस कर पूर्वी बंगाल की ठेठ बोली में कहा, आपा, यूरोप और अमरीका अनेक बातों में आगे हैं, लेकिन यहाँ के साले समाज में आपा भी नहीं है और भाभी भी नहीं।

मैंने कहा, तुमने ठीक कहा है।

अजीज फिर जरा गम्भीर होकर बोला, यहाँ के कम्बख्त गर्ल फ्रेण्ड के पीछे मरते हैं, लेकिन दीदी और भाभी से बढ़ कर अच्छी गर्ल फ्रेण्ड नहीं हो सकती।

मैं चुप रही।

अज़ीज ने फिर कहा, इसके अलावा साली और देवर क्या है, इनका सम्बन्ध कितना मधुर है, यह भी ये साले नहीं समझते ।

मेरी तरह अजीज भी यूनेस्को के एक प्रोजेक्ट में काम करता था । दो बरसों तक मैंने अजीज के अलावा और किसी मर्द को अपने एपार्टमेण्ट मे नहीं आने दिया था ।

तन्मय के कारण मैंने सभी पुरुषों से घृणा करना शुरू कर दिया था, लेकिन अज़ीज को पा कर समझ गयी थी कि नहीं, इस संसार के सभी पुरुष कामना और वासना की आग मे जला नहीं करते ।

आज इस पत्र को यहीं खत्म कर रही हूँ । बड़ी नींद आ रही है । दो-चार दिन बाद फिर पत्र लिखूंगी । तुम दोनों के पत्र आज ही मिले ।

१९

अज़ीजुल के पैरिस मे जाने के डेढ़ महीने बाद एक दिन आफिस से एपार्टमेण्ट लौटी तो अचानक डाक्टर सरकार का पत्र मिला ।

माँ, मैं तुम्हारा बड़ा ही अयोग्य बेटा हूँ । इसी लिए आजकल तुम्हें बहुत अधिक पत्र नहीं लिख पाता । तुम्हारा पत्र भी नियमित मिलता है, ऐसी बात नहीं है । लेकिन मौका मिलते ही तुम मुझे पत्र लिखती हो । अभी कुछ दिन पहले अज़ीज़ुल नाम का लड़का दो शर्टें, दो टाइयाँ और कई पैकेट ब्लेड दे गया । यह सब तुमने भेजा था । उस लड़के से बात करने पर पता चला कि वह तुम्हारा बड़ा भक्त है और तुम्हारे गुणों का आदर करता है । सोचा था, वह सब सामान मिलते ही तुम्हें उसकी सूचना दूँगा, लेकिन समय से वह नहीं हो सका । हफ्ते भर के बुखार से मैं इतना कमजोर हो गया था कि काफी समय तक कोई काम न कर सका । अमिय और सुपर्णा कभी-कभी मुझे देखने चले आते हैं । लगता है, तुमने मुझे जो चीजें भेजी थीं, उनकी प्राप्ति-सूचना उन्ही के पत्र मे तुम्हें मिली ।

अब कुछ काम की बातें करूँ । मेरे अध्यापक-जीवन के पहले बैच का छात्र नवेन्दु इस समय शिक्षा-गगन का ध्रुवतारा है । विश्वविद्यालय का अग्रणी विद्वान । उसकी विद्वत्ता की ख्याति देश-विदेश मे फैल चुकी है । वह कितनी ही बार विदेश जा चुका है । लेकिन आते-जाते वह एक-दो दिन से ज्यादा कभी पैरिस मे नहीं रुका । लेकिन इस बार नवेन्दु को पैरिस मे तीन महीने रुकना पड़ेगा । वहाँ के

अधिकारी उसका सारा इन्तजाम करेंगे। लेकिन तुमसे दो अनुरोध करूँगा। मेरी सलाह से नवेन्दु एयर फ्रांस की फ्लाइट से ७ सितम्बर शनिवार को सवेरे दस बजे ओर्ली एयरपोर्ट पहुँचेगा। उस दिन तुम्हारी छुट्टी रहेगी। इस लिए उस दिन तुम अगर उसे एयरपोर्ट से ले जा कर अपने यहाँ ठहरा लो तो बड़ा अच्छा हो। फिर रविवार की शाम को उसे अपने निश्चित डेरे पर पहुँचने में तुम उसकी मदद कर देना। दूसरी बात यह है कि नवेन्दु खाने का बड़ा शौकीन है। हमारे अपने ढंग के भोजन के अलावा किसी दूसरे देश के दूसरे ढंग के भोजन से उसका पेट नहीं भरता। इस लिए शनिवार और रविवार को कोई दूसरा प्रोग्राम न रहे तो कभी-कभी उसे अपने यहाँ खाने के लिए बुला लेना। नवेन्दु बहुत बड़ा विद्वान है। उसके सम्पर्क में आने पर तुम्हें खुशी होगी।···

दुर्गापूजा आ रही है। इस लिए नवेन्दु के हाथ तुम्हारे लिए एक साड़ी भेज रहा हूँ। इसके अलावा चिउड़ा, लाई और वड़ी जैसी कुछ जरूरी चीजों के साथ दो-तीन पत्रिकाओं के शारदीय पूजा अंक भी भेजूंगा।··

७ सितम्बर को सवेरे मैं कार ले कर ओर्ली एयरपोर्ट गयी। ठीक समय से प्लेन आया। वहाँ साड़ी पहनी और कोई लड़की नहीं थी, इस लिए मुझे पहचानने में नवेन्दु बाबू को कोई परेशानी नहीं हुई।

मुझे आशा है कि तुम्हीं कविता हो?

मैंने हँस कर कहा, जी हाँ।

तुम्हें यहाँ आने में बड़ा कष्ट हुआ होगा।

जी नहीं, जरा भी नहीं। बल्कि बीच-बीच में अपने देश के किसी आदमी को अपने पास पाने पर बड़ी खुशी होती है।

यह तो ठीक है, लेकिन···

डॉक्टर सरकार ने आपके बारे में कहा है। इस लिए दुविधा का कोई कारण नहीं हो सकता।

नवेन्दु बाबू का सामान पीछे की सीट पर रखकर उन्हें आगे दायीं सीट पर बैठाया। फिर मैंने कार स्टार्ट किया। फर्स्ट गीयर, सेकेण्ड गीयर, थर्ड गीयर और फिर फोर्थ गीयर पर कार चलने लगी। लगभग सौ किलोमीटर घंटे की रफ्तार पर कार दौड़ती रही।

अचानक नवेन्दु बाबू ने कहा, आप तो बहुत तेज कार चलाती हैं।

मैंने हँस कर कहा, यहाँ चलानी ही पड़ती है।

बात तो ठीक है। लेकिन लेफ्ट-हैंड ड्राइव कार चलाने में दिक्कत नहीं होती?

मैं तो कलकत्ते में कार नहीं चलाती थी। यहीं आ कर चलाने लगी। इस लिए इसी की आदत पड़ गयी है। दिक्कत नहीं होती।

शायद बहुत दिन हो गये आप भारत नहीं गयीं?

जी हाँ। एक बार इधर आने के बाद फिर नहीं गयी।

जाने की इच्छा नहीं होती?

इच्छा तो होती है। लेकिन कोई अपना नहीं है। इस लिए इतना पैसा खर्च कर जाने को मन नहीं करता।

छुट्टी में कहीं नहीं जाती?

पिछली बार एथेन्स गयी थी। इस बार कहाँ जाऊँगी, अभी तक तय नहीं किया।

कब छुट्टी मिलेगी?

फर्स्ट अक्टूबर में छुट्टी मिलेगी।

मेरे एपार्टमेण्ट में पहुँच कर नवेन्दु बाबू ने कहा, वाह! बहुत अच्छा सजाया है।

मैंने मुस्करा कर कहा, गृहस्थी का झमेला नहीं है, इस लिए दफ्तर से लौटने के बाद घर को सजाने में समय बिताती हूँ।

फिर थोड़ी देर बातचीत के बाद मैं कॉफी बनाने गयी। कॉफी ले कर कमरे में आयी तो नवेन्दु बाबू ने मुझे दो पैकेट दिये। मैंने पूछा, डॉक्टर सरकार ने भेजा होगा?

एक तो डॉक्टर सरकार ने भेजा है और दूसरा अमिय ने।

पैकेटों को खोल कर देखा, दोनों ने सिल्क की खूबसूरत साड़ी भेजी है।

साड़ी के अलावा और भी बहुत कुछ था। डॉक्टर सरकार ने दो-तीन पत्रिकाओं के शारदीया दुर्गा पूजा अंक भी भेजे थे। नवेन्दु बाबू ने उन पत्रिकाओं को आगे किया तो मैंने कहा, इनको देखते ही कलकत्ते की बातें याद आने लगती हैं।

सचमुच इन पूजा विशेषांकों को ले कर बंगाल में जैसी हलचल मचती है, वैसी और कहीं देखने को नहीं मिलती।

कॉफी पीते हुए मैंने कहा, विदेश में आ कर बहुत कुछ मिला, लेकिन कलकत्ता छोड़ने पर बहुत कुछ खोना भी पड़ा है।

नवेन्दु बाबू ने पूछा, और कितने दिन विदेश में रहेंगी?

मेरे लिए देश-विदेश दोनों बराबर हैं।

ऐसा मत कहिये। कुछ भी हो, अपने देश, अपने परिवेश, अपनी भाषा और अपने इष्ट-मित्रों का आकर्षण अलग है।

यह तो ठीक है। लेकिन मैं जैसी अकेली स्त्री के लिए वहाँ रहना बहुत मुश्किल है।

यदि कलकत्ते में न रहना चाहें तो दिल्ली या बम्बई में रह सकती हैं।

मैंने मुस्करा कर कहा, देखा जाय, भविष्य में क्या होता है?

नवेन्दु बाबू को देखते ही पता चलता है कि वे समझदार हैं। उनके चेहरे पर बुद्धि की चमक थी। उम्र पचास के आसपास होने पर भी उनमें यौवन की चुस्ती थी। बात करने के ढंग से रुचि का परिचय मिलता था। मैंने मन ही मन कहा, डॉक्टर सरकार ने अपने पत्र में सही लिखा है।

कॉफी पीना खत्म कर नवेन्दु बाबू ने सूटकेस से एक साड़ी निकाल कर मुझे दी और कहा, दिस इज ए टोकन प्रेजेण्टेशन फ्रॉम योर न्यू फ्रेण्ड!

बड़ी ही कीमती कांजीवरम साड़ी देख कर मैंने कहा, इतनी कीमती साड़ी लाने की क्या जरूरत थी?

नवेन्दु बाबू ने मुस्कराते हुए मेरी तरफ देख कर कहा, आप पहनेंगी तो कोई भी साड़ी कीमती नहीं लगेगी। आपके रूप और गुण के आगे हर चीज फीकी पड़ जाती है।

मेरी यह तारीफ मुझे कुछ विचित्र सी लगी, लेकिन नवेन्दु बाबू ने तुरंत कहा, डॉक्टर सरकार जिनको माँ कह सकते हैं, वे कैसे सामान्य स्त्री हो सकती हैं?

मैंने हँस कर कहा, मैं सचमुच असाधारण हूँ।

नो डाउट एबाउट दैट!

मेरे पहले वाले एपार्टमेण्ट से यह जरा बड़ा होने पर भी सोने का कमरा एक ही था। उसी एक कमरे में मेरा सब कुछ था। दूसरे कमरे में एक तरफ छोटा सा डिनर टेबिल था। टेबिल के दोनों तरफ दो कुर्सियाँ तो थीं, लेकिन वह इन्तजाम एक के लिए ही काफी था। दूसरी तरफ बैठने की व्यवस्था थी। छोटी सी पैण्ट्री थी। छोटा सा बाथ-कम-टायलेट था। किसी तरह नहाना आदि काम चलते थे, लेकिन कपड़े बदलना सम्भव नहीं था। इसके अलावा बाथरूम पैण्ट्री के पास था। कपड़े बदलने के लिए मुझे ड्राइंग रूम पार कर सोने के कमरे में जाना पड़ता था। अकेली रहती थी, इस लिए उस व्यवस्था में कोई असुविधा नहीं होती थी। लेकिन उस दिन नवेन्दु बाबू के आ जाने से परेशानी हो गयी।

मैंने कहा, मेरा एपार्टमेण्ट बहुत ही छोटा है। चटपट कोई काम करना मुश्किल है। इसलिए अब उठिए।

नवेन्दु बाबू बोले, एपार्टमेण्ट छोटा होने पर भी तो सब कुछ है।

मैंने हँसते हुए कहा, है तो सब कुछ, लेकिन मैं बाथरूम मे जाऊँगी तो आपको एपार्टमेण्ट के बाहर जाकर खड़ा रहना पड़ेगा।

नवेन्दु बाबू ने भी हँसते हुए पूछा, इसका मतलब ?

बाथरूम बहुत छोटा है। इस लिए इस कमरे को पार कर बेडरूम में जा कर कपड़े बदलने पड़ते हैं।

पूरे बदन को ढका जाय, ऐसा कोई कपड़ा इस्तेमाल नही किया जा सकता ?

ऐसे एपार्टमेण्ट मे तो उसी का एकमात्र सहारा है।

फिर किस बात की चिन्ता ?

जी नही, चिन्ता की कोई बात नहीं है। लेकिन इस तरह आपको असुविधा हो सकती है।

यदि आपको असुविधा न हो तो मुझे भी न होगी।

मैंने पिछली रात को ही सारा खाना बना रखा था। इस लिए नवेन्दु बाबू बाथरूम मे गये तो मैंने चावल चढ़ा दिया। फिर रात की बनायी सब्जियाँ गरम करते न करते नवेन्दु बाबू तैयार हो गये।

खाने के लिए बैठ कर नवेन्दु बाबू ने कहा, इतनी सारी चीजें क्यों बनायी ?

खाना बनाने मे मुझे बड़ा आनन्द आता है। फिर शनिवार और रविवार को ही दो-चार चीजें ज्यादा बनाती हूँ। दूसरे दिन तो कुछ भी बना कर काम चला लेती हूँ।

नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, आपको भोजन बनाना पसन्द है तो मुझे भोजन करना।

मुझे पता है।

क्या डॉक्टर सरकार ने आपको यह भी लिखा है ?

फिर हम दोनो हँसे।

भोजन करके नवेन्दु बाबू को सचमुच सन्तोष मिला। मेरे हाथ का भोजन करके तन्मय को भी ऐसा सन्तोष मिलता था। भोजन करने के बाद नवेन्दु बाबू ने कहा, शाम को भोजन न बनायें।

क्यों ?

पैरिस मे आ कर भी शनिवार की शाम घर मे बिताऊँगा ?

नही। उस दिन शाम को नवेन्दु बाबू मेरे छोटे से एपार्टमेण्ट मे कैद नही रहे। बाहर निकल पड़े। लेकिन अकेले नहीं, मुझे साथ ले कर ही निकले।

जिन भारतीयों को पत्नी का हाथ पकड़ कर भी सड़क पर चलने की आदत नहीं है और जो अधिक चाय पीना भी पसन्द नहीं करते, वही पैरिस आ कर

बोतल पर बोतल शेरी-शैम्पेन या अन्य शराब पीते और विवस्त्रा सुन्दरी युवतियों का नाच देखते हैं।

कलकत्ते के विख्यात अध्यापक नवेन्दु बाबू भी अपवाद नहीं थे। नाच देखते हुए उन्होंने मुझसे कहा, आप कुछ भी कहें कविता देवी, ये लोग जी भर कर खुशियां मनाना जानते हैं। ये लोग दिल खोल कर खुशियां मनाते हैं, तभी तो इतना काम कर सकते हैं।

मैंने कहा, शायद ये लोग इतना काम करते हैं, इसी लिए इतनी खुशियां भी मना सकते हैं।

और एक बोतल शराब पेट में जाने के बाद अचानक नवेन्दु बाबू ने मुझसे लिपट कर कहा, कविता देवी, हम खूब काम करेंगे और मनोरंजन भी।

मैं समझ गयी कि नवेन्दु बाबू स्वाभाविक नहीं हैं। इस लिए मैंने मुस्करा कर कहा, जरूर! आप काम भी करेंगे और आनन्द भी मनायेंगे।

पैरिस में आने के बाद नवेन्दु बाबू की पहली शाम मजे में बीती। नाच-गाना और खाना-पीना खत्म कर जब हम एपार्टमेण्ट में लौटे, तब रात के दो बज चुके थे।

एपार्टमेण्ट में पहुँचते ही नवेन्दु बाबू ने मेरी कमर में हाथ डाल कर मुझे अपनी तरफ खींचा और कहा, कविता देवी, आप बहुत अच्छी हैं।

मैंने हँस कर कहा इस प्रशंसा के लिए धन्यवाद।

उसके बाद मैंने नवेन्दु बाबू का हाथ छुड़ाते हुए कहा, अब मुझे छोड़ दीजिए। सोने का इन्तजाम करूँ।

अभी तो शाम है। सो जायेंगी ?

शाम के दो बजे हैं। यानी, रात बहुत हो चुकी है।

सो ह्वाट ? हैव यू गॉट एनी ड्रिंक ?

नो।

पैरिस में रहती हैं और घर में बोतल नहीं रखतीं ?

जी नहीं।

मैंने जरा जोर लगा कर अपनी कमर से नवेन्दु बाबू का हाथ हटा दिया और कहा, आपने बहुत ज्यादा पी ली है। अब आप कपड़े बदल कर सो जायं।

नो डलिङ्ग। आइ मस्ट नॉट स्लीप टु नाइट।

फिर आप इस कमरे में बैठे रहिये, मैं अपने कमरे में सोने जा रही हूँ।

ठीक है। चलिये, मैं आपको सुला दूंगा।

जी नहीं। मैं यों ही सो जाऊँगी। आपको कष्ट करने की जरूरत नहीं है।

आप जैसी सुन्दरी को घुमाने में कष्ट कैसा ?

ओफ ! आप कैसी बातें कर रहे हैं ?

आइ ऐम सॉरी कविता देवी ।

खैर, मैंने जबर्दस्ती नवेन्दु बाबू को लिटा दिया । फिर बीच का दरवाजा बंद कर मैं भी लेट गयी । उस समय रात के तीन बजने वाले थे ।

दूसरे दिन काफी देर से नींद खुली । नवेन्दु बाबू उस समय भी अलग कमरे में सो रहे थे । बाथरूम से लौट कर मैंने चाय पी । फिर कपड़े बदले और दरवाजा लॉक कर जरूरी खरीदारी के लिए निकल पड़ी । थोड़ी सी सब्जी और चिकेन खरीद कर लौटी तो देखा कि नवेन्दु बाबू ड्राइंग रूम में बैठे हुए हैं ।

मुझे देखते ही नवेन्दु बाबू ने पूछा, आपने घर का कामकाज शुरू कर दिया है ?

मामूली खरीदारी के लिए निकली थी ।

चाय पिलायेंगी ?

अवश्य ।

फिर चाय पीते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, कविता देवी, मुझे क्षमा कर दीजिए ।

मैंने हँस कर पूछा, आपने कौन सी गलती की है कि क्षमा माँग रहे हैं ?

कल रात को मैंने जरूर आपके साथ स्वाभाविक आचरण नहीं किया ।

मैंने हँसते हुए पूछा, यह आपने कैसे जान लिया कि मेरे साथ स्वाभाविक व्यवहार नहीं किया ?

मेरी योग्यता और विद्वत्ता के बारे में दुनिया जानती है, लेकिन मेरे स्वभाव और चरित्र के बारे में मैं ही जानता हूँ ।

यह बात तो हरेक के लिए है ।

बात सही है । लेकिन सबके स्वभाव और चरित्र में विशेष बातें नहीं होतीं ।

मैंने कोई प्रश्न नहीं किया । चुप रही । चाय पीने लगी ।

नवेन्दु बाबू बोले, मैं बहुत ज्यादा ड्रिंक नहीं करता । साल भर बाद कल ड्रिंक किया था ।

अच्छा ?

नवेन्दु बाबू ने थोड़ा हँस कर कहा, पिछले साल डेढ़ महीने के लिए शिमला इन्स्टीट्यूट ऑव हायर स्टडीज में गया था । आस्ट्रेलिया की एक नवयुवती अध्यापिका भी वहाँ आयी थीं । कई दिन की छुट्टी में घूमने जाकर वह मेरे होटल में पहुँच गयीं ।

मैंने कहा, शायद उस महिला के साथ आपने ड्रिंक किया था ।

नवेन्दु बाबू बोले, सिर्फ ड्रिंक ही नहीं किया था, बल्कि उसके साथ तीन रातें बितायी थीं ।

मैंने पॉट से नवेन्दु बाबू के कप में चाय उड़ेल दी । चाय की चुस्की लेते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, हमारे देश के लोग बदमाशी करने से उतना नहीं डरते, जितना उसकी खबर फैल जाने से । मैं भी उससे डरता हूं । इस लिए ये सब बातें मैं कभी किसी से नहीं कहता ।

फिर आप मुझसे क्यों कह रहे हैं ?

क्यों कह रहा हूँ, यह तो नहीं बता सकता । लेकिन आप से कहने को मन कर रहा है ।

क्यों ?

नवेन्दु बाबू ने मुस्करा कर कहा, डॉक्टर सरकार और अमिय से आपकी इतनी प्रशंसा सुनी थी कि मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सोच लिया था ।

क्या सोचा था ?

वह सब सुनना न चाहें । आपको एयरपोर्ट में देखते ही मेरा खून उबलने लगा था । उसके बाद दिन भर मैंने बहुत कुछ सोचा ।

मैंने हँस दिया । पूछा, फिर ?

मन में बुरा ख्याल ले कर ही कल शाम को आपको साथ लिये घूमने निकला था । लेकिन आपका संयम देख कर समझ गया कि आपको वहां ले जाना मेरे वश का काम नहीं है ।

नवेन्दु बाबू की बात सुन कर मैं जरा जोर से हँस पड़ी ।

नहीं कविता देवी, नहीं । हँसने की बात नहीं है । कई पुरुषों के सम्पर्क में आने वाली जो अविवाहित युवती शराब पीने और अश्लील उत्तेजक नाच देखने के बाद भी अपने को संयत रख सकती है, उससे प्यार किया जा सकता है; उसे श्रद्धा दी जा सकती है, लेकिन उसको ले कर बदमाशी नहीं की जा सकती ।

मैंने कहा, मुझे श्रद्धा और प्यार की जरूरत नहीं है ।

इस पर नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, वह मेरे मन का व्यापार है ।

फिर जरा रुक कर लम्बी सांस लेते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, कुछ भी हो, आपसे बहुत कुछ कहूँगा ।

क्या जरूरत है ?

कुछ भी हो, आपको यह जानना जरूरी है कि आपके आस-पास मेरी तरह कितने ही खूंखार भेड़िये मौजूद हैं ।

माई रिपोर्टर, सच कहती हूँ कि नवेन्दु बाबू मेरे लिये आश्चर्यजनक अनुभव रहे।

जिस काली लड़की की बड़ी-बड़ी काली आँखों की रोशनी से तुम्हें आज के इस अंधेरे में सही पथ का पता मिला, उसे मेरा हार्दिक प्यार देना और स्वयं भी लेना।

२०

पैरिस से लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर रहने पर भी नवेन्दु बाबू प्रायः हर शुक्रवार की शाम को आते थे, लेकिन मेरे यहाँ नहीं रहते थे। मेरे एपार्टमेण्ट के पास एक होटल में ठहरते थे। लेकिन हम एक साथ खाते-पीते, गपशप करते और घूमते-फिरते थे। हर हफ्ते के अन्तिम दो दिन बड़े मजे में बीतते थे।

दो महीने इस तरह चलने के बाद हम सचमुच बड़े घनिष्ठ मित्र हो गये। जब मैं पहले पहल विदेश आयी थी, किसी पुरुष से मित्रता करने में बड़ा डर लगता था। कदम-कदम पर दुविधा रहती थी। लेकिन धीरे-धीरे वह संकोच और भय जाता रहा। इसी लिए नवेन्दु बाबू से दोस्ती होने में ज्यादा समय नहीं लगा।

कॉफी पीते हुए मैंने कहा, दिन भर तो आप मेरे यहाँ रहते हैं। फिर रात के कई घंटों के लिए उतना पैसा खर्च कर होटल में रहने की क्या जरूरत है?

नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, सिर्फ आपके कारण होटल में रहता हूँ।

मेरे कारण आप होटल में रहते हैं?

जी हाँ। आपके कारण।

लेकिन मेरे कारण आप होटल में क्यों रहेंगे?

सच कहता हूँ कविता देवी, सिर्फ आपके कारण होटल में रहता हूँ। दिन भर तो किसी तरह अपने को संयत रखता हूँ। लेकिन शाम को कई पेग ह्विस्की या एक-दो बोतल वाइन पेट में जाने के बाद आपको देख कर पता नहीं मुझे क्या हो जाता है।

इतनी भूमिका न बाँध कर असली बात कहिए।

नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, मैं जैसा डाकू अगर रात को आपके एपार्टमेंट मे रहूँ तो पता नहीं क्या-क्या दौलत लूट लूँ!

मैंने भी हँस कर कहा, कोई भी डाकू अपने घनिष्ठ मित्र को नुकसान नहीं पहुँचाता।

अगर ऐसा हो तो बहुत अच्छा है।

और कुछ दिन इस तरह नवेन्दु बाबू से मिलने-जुलने के बाद मैंने महसूस किया कि वे चरित्रहीन होने पर भी आदमी अच्छे हैं। मैंने यह भी महसूस किया कि उतनी विद्वत्ता और सफलता के बावजूद उनके मन में अनेक दुख-दर्द छिपे हुए हैं।

भाई रिपोर्टर, संसार में सभी जानते हैं कि शराब पीने में अनेक दोष हैं। लेकिन उसके साथ यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि शराब पीने पर मनुष्य सत्य-वादी बन जाता है। स्वाभाविक स्थिति में मनुष्य जो बात कभी किसी से नहीं कह सकता, शराब पीने के बाद वही वह बात खुल कर कह सकता है। एक दिन शराब पीने के बाद नवेन्दु बाबू ने भी अपने मन की बहुत सी बातें भी बतायी थीं।

गरीब स्कूल मास्टर के बेटे नवेन्दु बाबू के नौ भाई-बहनें थे। उनके अलावा एक विधवा बुआ और उनकी बेटी भी थी। बड़ी मुसीबत झेलते हुए नवेन्दु बाबू स्कूल की पढ़ाई खत्म कर कालेज में भरती हुए। कालेज में पहली वार्षिक परीक्षा में ही उनकी कापी देख कर प्रिन्सिपल उषानाथ वसु चौंक पड़े थे। बाद में कक्षा में आ कर उषानाथ बाबू ने छात्र नवेन्दु के बारे में पूछताछ की तो उनको पता चला कि कई महीने फीस न देने के कारण क्लास के रजिस्टर में नवेन्दु का नाम नहीं है।

अंधेरी रात के बाद ही जगमगाता सूरज निकलता है। प्रिन्सिपल उषानाथ वसु की कृपा से नवेन्दु आनर्स ले कर ससम्मान बी० ए० पास करने के बाद एम० ए० पढ़ने के लिये विश्वविद्यालय में भरती हुए।

नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, एम० ए० पढ़ते समय डॉक्टर सरकार मिल गये। अगर वे न होते तो मेरे लिये एम० ए० पास करना सम्भव न होता। घर में रहने पर ठीक से मेरी पढ़ाई न होगी, इस लिए परीक्षा से तीन महीने पहले उन्होंने मुझे अपने घर में रखा।

सचमुच डॉक्टर सरकार जैसे आदमी दुर्लभ हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है। उन्हीं के इकट्ठा किये मेटेरियल्स और नोट्स ले कर मैंने अपनी पहली पुस्तक लिखी थी।

नवेन्दु बाबू ने फिर फीकी मुस्कान के साथ कहा, मैंने अपने जीवन में कभी

किसी अध्यापक को अपने छात्र की प्रतिष्ठा के लिये स्वार्थ-त्याग करते हुए नहीं देखा।

उसके बाद ?

परीक्षाफल बहुत अच्छा था। इस लिए प्रिन्सिपल उपानाथ बसु ने उसी समय मुझे सवा सौ रुपये पर गिरिडीह के एक कालेज में लेक्चरर नियुक्त करवा दिया।

नवेन्दु बाबू ने अन्तिम घूंट पी लिया तो मैंने तुरन्त उनका गिलास भर दिया।

अरे ! फिर से ही ?

मैंने सिर हिला कर कहा, जी हाँ। फिर क्या हुआ, बताइए।

नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, फिर प्रिन्सिपल साहब ने मुझसे छिपा कर मेरे गरीब बाप को कुछ धन दिया और उसके बदले मुझे खरीद लिया।

मैंने आश्चर्य से पूछा, आपको कैसे खरीद लिया ?

नवेन्दु बाबू शराब का गिलास होंठों से लगा कर हँसे और बोले, आजकल शादी-ब्याह मे वर खरीदा जाता है न, वही। प्रिन्सिपल साहब की बेटी शिखा-रानी से मेरा विवाह हुआ और छ: महीने बाद ही वह माँ बनी। बेटा हुआ।

छ: महीने मे ?

हाँ कविता देवी, छः महीने मे। गुरुदक्षिणा देने के लिये मैंने प्रिन्सिपल साहब की पुत्री से विवाह किया था। लेकिन उस समय मुझे यह पता नही था कि वह लड़की गर्भवती है।

आश्चर्य की बात है !

इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? इस संसार मे दूसरों को जो जितना ठग सकता है, वही उतना बुद्धिमान माना जाता है।

फिर आपने क्या किया ?

शिखारानी के अस्पताल से लौटने के पहले ही मैं गिरीडीह के भाग खड़ा हुआ।

कहाँ गये ? घर ?

नही। बाप और ससुर पर मुझे इतनी घृणा हो गयी थी कि मैं उनमे से किसी के पास नहीं गया।

लेकिन बाप ने क्या अन्याय किया था ?

बेटे की शादी करने से पहले वे लड़की तक देखने नही गये थे। प्रिन्सिपल साहब की लड़की थी और दहेज में नकद कई हजार रुपये मिल गये थे, जिससे

पिताजी बेहद खुश थे और आंख मूंद कर उन्होंने मेरी शादी कर दी थी।

हे भगवान् !

और भी सुनना चाहती हैं कविता देवी ?

आपत्ति न हो तो बताइए।

विद्यार्थी जीवन में नवेन्दु बाबू का एकमात्र व्यसन था विद्यार्जन करना। रात दिन वे पढ़ाई में डूबे रहते थे। इस लिए प्रिन्सिपल उमानाथ के घर नियमित जाने पर भी उन्होंने कभी शिखारानी की तरफ ध्यान देने की जरूरत नहीं समझी। नवेन्दु बाबू की तरह और भी कई छात्र प्रिन्सिपल साहब के घर जाते थे। उनमें एक-दो शिखारानी के प्रति आकृष्ट थे और इसी लिए किसी न किसी बहाने प्रिन्सिपल साहब के घर नियमित जाते थे। प्रिन्सिपल साहब को भी इस बात की जानकारी नहीं थी। उसी का परिणाम नवेन्दु बाबू को भोगना पड़ा।

विवाहित जीवन के शुरू में ही ऐसे विश्वासघात का शिकार हो कर नवेन्दु बाबू अचानक एक दिन लेक्चरर की नौकरी से इस्तीफा दे कर गिरीडीह से भाग खड़े हुए। शुरू में कुछ दिन वे पागल की तरह न जाने कहाँ-कहाँ घूमते रहे। उसके बाद उन्होंने फिर अध्यापन शुरू किया। पहले आगरा में और फिर लुधियाना में उन्होंने अध्यापक के रूप में काम किया। लुधियाना में कई महीने रहने के बाद वे फिरोजपुर चले गये। वहाँ भी वे अधिक दिन नहीं रह सके। वे लखनऊ चले गये। फिर लखनऊ से वाराणसी।

विद्वान्, बुद्धिमान और सुपुरुष नवेन्दु बाबू पर वयोवृद्ध अध्यापक प्रमोद मिश्र की निगाह पड़ी। एक रविवार को सवेरे प्रमोद बाबू नवेन्दु बाबू के पास पहुँच गये।

नवेन्दु बाबू को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे बोले, अरे, आप !

प्रमोद बाबू बोले, हाँ भाई, मैं हूँ। आप अकेले रहते हैं, इसलिए अक्सर शाम को चला आता हूँ। लेकिन कभी आप नहीं मिले।

आप मेरे यहाँ आये थे ?

प्रमोद बाबू ने हँस कर हाथ की छड़ी बगल में रखी और कहा, आये थे क्या ? कई दिनों से बराबर आ रहा हूँ।

नवेन्दु बाबू बड़े शर्मिन्दा हुए। बोले, मुझे बड़ा अफसोस है। लेकिन मुझे पता ही नहीं था कि आप आयेंगे, इसी लिए····

प्रमोद बाबू फिर हँसे। बोले, आपकी तरह बैचेलर होने पर मैं भी घर में

न रहता। खैर, वह सब छोड़िए। आज दोपहर को मेरे यहाँ आइए। गपशप होगी और खाना-पीना भी होगा।

लेकिन····

अब कोई बहाना न बनायें। आपको आना ही पड़ेगा।

नवेन्दु बाबू ने मेरी तरफ देख कर हँसते हुए कहा, प्रमोद बाबू के घर जा कर देखा कि वहाँ मेरे सास-ससुर और शिवारानी अपने जारज बेटे के साथ मौजूद हैं।

अच्छा ?

हाँ। मुझे यह पता नहीं था कि प्रमोद बाबू उन लोगों के दूर के रिश्तेदार थे।

मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा, फिर क्या हुआ ?

परित्यक्ता पत्नी के चेहरे पर जो व्यथा रहती है, शिवारानी में उसका लेश-मात्र नहीं था।

अच्छा !

हाँ कविता देवी, मैं ठीक कह रहा हूँ। क्रोध, दुख और घृणा के कारण मैं उसी दम प्रमोद बाबू के घर से निकल पड़ा और उसी रात वाराणसी छोड़ कर हरिद्वार चला गया।

मैंने पूछा, आप अपने माँ-बाप के साथ किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रखते थे ?

चिट्ठी-पत्री नहीं लिखता था, लेकिन हर महीने माँ को रुपया भेजता था।

अच्छा। उसके बाद क्या हुआ, बताइए।

नवेन्दु बाबू ने मेरी तरफ देख कर मुस्कराते हुए कहा, हरिद्वार जाने के बाद एक विचित्र घटना घटी।

मैंने नवेन्दु बाबू को मुस्कराते देख कर मुस्कराते हुए पूछा, कैसी विचित्र घटना घट गयी ?

फिर किसी प्रमोद बाबू से मुलाकात न हो, इस लिए मैं गुजरातियों की धर्म-शाला में ठहरा था। ट्रेन में सो न सका था, इस लिए वहाँ पहुँच कर पहले दिन खूब सोया। उसके बाद रोज एक-दो घंटे ब्रह्मकुण्ड में घूमने जाने के अलावा दिन भर धर्मशाला में अपने कमरे में पड़ा रहता था।

दिन भर कमरे में बैठे-बैठे क्या करते थे ?

मेरे साथ रवीन्द्रनाथ ठाकुर की संचयिता थी। दिन भर उसकी कविताएँ पढ़ता था, कभी जोर-जोर से तो कभी मन ही मन।

दो-तीन दिन बाद अचानक एक दिन दोपहर में एक महिला पांच-छ: वर्ष के एक बच्चे का हाथ पकड़ कर नवेन्दु बाबू के कमरे के दरवाजे के सामने आकर खड़ी हुईं।

नवेन्दु बाबू ने हिन्दी में पूछा, कुछ कहना चाहती हैं ?

उस महिला ने साफ बंगला में कहा, जी नहीं, यों ही चली आयी।

नवेन्दु बाबू ने उस महिला के हाथों में शांखा (शंख की मोटी चूड़ियां) और मांग में सिन्दूर न देख कर उसे गुजराती समझ लिया था। फिर वह महिला सफेद साड़ी में थीं। इस लिए नवेन्दु बाबू ने जरा आश्चर्य से पूछा, क्या आप बंगाली हैं ?

जी हाँ।

नवेन्दु बाबू झटपट खड़े हो गये और बोले, आइए ! आइए !

उसके बाद उस महिला के साथ के लड़के की तरफ इशारा करके नवेन्दु बाबू ने कहा, आपका बेटा तो बड़ा प्यारा है।

यह मेरा भतीजा है।

अच्छा !

फिर नवेन्दु बाबू ने दरी बिछा दी और कहा, बैठिए।

फिर दोनों दरी पर बैठे तो नवेन्दु बाबू ने पूछा, क्या आप कई लोग तीर्थ-यात्रा पर निकले हैं ?

नहीं, मैं भैया और भाभी के साथ आयी हूँ।

फिर भैया और भाभी को बुलाइए न ?

आज वे लोग ऋषिकेश गये हैं। कल वहां से केदार-बदरी के दर्शन के लिए रवाना हो जायेंगे।

आप नहीं गयीं ?

उस महिला ने फीकी मुस्कान के साथ कहा, विधवा बहन को भैया हरिद्वार तक लाये हैं, यही बहुत है। और कहां-कहां ले जायेंगे ?

नवेन्दु बाबू चौंके। फिर लम्बी सांस छोड़ते हुए उन्होंने कहा, भतीजे को अपने पास रख लिया ?

जी हां। वह हमेशा मेरे पास रहता है।

हमेशा क्यों ?

वह महिला मुस्करायी। फिर बोली, मेरी भाभी भी नोकरी करती हैं। फिर उनको ज्यादा घूमना-फिरना भी पसन्द है।

नवेन्दु बाबू ने मुस्करा कर कहा, समझ गया। इस लिए यह चौबीस घंटे आपके पास रहता है।

वह महिला फिर मुस्करायी और बोली, शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने 'पल्लीसमाज' मे जिस ग्रामीण समाज का चित्र खींचा है, उसका रूप बदलने पर भी चरित्र नही बदला है। अब मेरी बात छोड़िए और अपनी बात कहिए।

बोलिए, क्या जानना चाहती हैं ?

आप हरिद्वार मे क्यो आये ?

तीर्थ मे क्यो आया, यह भी बताना पड़ेगा ?

लेकिन आप तो तीर्थ भ्रमण मे नही आये हैं। दिन भर अपने कमरे मे बैठे-बैठे कविता पढ़ते रहते हैं।

किसी तरह थोड़ा समय बिताने के लिए यहाँ आया हूं। लेकिन आप क्या कर रही हैं ?

गंगा स्नान, खाना पकाना, दिवानिद्रा और गपशप...

आप रोज गंगा नहाती हैं ?

जी हाँ। आपने अभी तक यहाँ गंगा स्नान नही किया ?

नहीं। हरिद्वार आने पर क्या गंगास्नान करना जरूरी है ?

ऐसी बात नही है। लेकिन यहाँ गंगा नहाने का आनन्द ही कुछ और है।

अच्छा ?

जी हाँ।

फिर उस महिला ने मुस्करा कर कहा, कल सबेरे आपको गंगा नहाने ले जाऊँगी। देखेंगे, कितना आनन्द आता है!

नवेन्दु बाबू हँसे, लेकिन कुछ नहीं बोले।

उस महिला ने फिर कहा, इस धर्मशाला से गंगा इतना पास है कि मेरा मन करता है, जब भी मौका मिले गंगा नहा आऊँ।

क्या आपको गंगा नहाना इतना अच्छा लगता है ?

यह बात नहीं है। लेकिन यहाँ की गंगा मे नहाना सचमुच बड़ा अच्छा लगता है।

मैंने मुस्करा कर नवेन्दु बाबू से पूछा, क्या दूसरे दिन आप गंगा नहाने गए थे ?

नवेन्दु बाबू ने हँस कर कहा, दूसरे दिन सवेरे-सवेरे उमा ने जब बुलाया, तब रहा नहीं गया। जाना ही पड़ा।

फिर वह गंगास्नान कैसा लगा?

नवेन्दु बाबू ने सीधे मेरी तरफ देखते हुए कहा, सचमुच वहाँ गंगा नहा कर शरीर शीतल हो गया था, लेकिन उसी के साथ उमा को देखते ही फिर सारे बदन में जलन होने लगी थी।

क्यों?

वहाँ औरतों और मर्दों के नहाने के लिये अलग-अलग घाट नहीं थे।

अच्छा?

हाँ।

नवेन्दु बाबू क्षण भर के लिये चुप हो गये। मानो उन्होंने हरिद्वार में गंगा-स्नान के उस दृश्य को फिर अच्छी तरह याद किया और उसके बाद कहा, भतीजे को नहलाने के बाद उमा मेरे साथ ही नहाने लगी। फिर दोनों एक साथ नहा कर किनारे पर आये।

मैंने पूछा, फिर क्या हुआ?

गीले कपड़े में उमा को देख कर मैं चौंक पड़ा। उसके बाद उसी हालत में उसके साथ धर्मशाला तक आते-आते…

उन्होंने कपड़े क्यों नहीं बदले?

घाट पर उतने लोगों के सामने वह कपड़ा नहीं बदलती थी। बदन पर गमछा लपेटे धर्मशाला तक आते ही…

शायद उसके बाद गंगास्नान के मामले में आप भी बड़े उत्साही हो उठे?

सिर्फ गंगास्नान के मामले में नहीं, हर मामले में बड़ा उत्साही हो उठा।

नवेन्दु बाबू की बातों से मैंने अनुमान तो लगा लिया, फिर भी पूछा, हर मामले में कैसा?

मुस्कराते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, उमा के भैया-भाभी के केदार-बदरीनाथ की यात्रा से लौटने के पहले ही हमारा नाटक जम गया था।

मैंने आश्चर्य से नवेन्दु बाबू की तरफ देखा तो उन्होंने कहा, इसमें आश्चर्य-चकित होने की क्या बात है? जिस बाघ को मानव-रक्त का स्वाद मिल चुका हो, वह नये शिकार को कैसे हाथ से निकलने दे सकता है?

लेकिन बाघिन?

उसकी भी हालत मेरी जैसी थी।

लेकिन…

नवेन्दु बाबू ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा, आपने बाढ़ तो नहीं देखी। बाढ़ जब आती है, तब अपने साथ सब कुछ बहा ले जाती है। वही हाल हम दोनों का था। कैसे क्या हुआ, पता भी न चला।

इतना कहने के बाद नवेन्दु बाबू चुप हो गये। फिर थोड़ी देर वे चुप रहे। कुछ भी नहीं बोले। लेकिन मुझसे न रहा गया तो पूछा, आप चुप क्यों हो गये। उसके बाद क्या हुआ ?

नवेन्दु बाबू ने जरा जोर से लम्बी साँस छोड़ी और कहा, वह बड़ा लम्बा इतिहास है। बस, इतना सुन लें कि मैंने उमा से सचमुच प्यार किया था। मैंने चाहा था कि वह फिर से जिन्दा हो जाय, लेकिन उसने किसी तरह विवाह नहीं करना चाहा।

क्यों ?

विधवा होने के बाद फिर विवाह करने के लिए जिस मानसिक बल की जरूरत पड़ती है, वह उसमें नहीं थी।

फिर मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। चुपचाप बैठी रही।

नवेन्दु बाबू बोले, उमा विवाह के प्रस्ताव पर राजी न हुई तो मुझे लगा कि यह तो दूसरी शिखारानी है! एक-एक कर दो बार आघात झेलने के बाद मैं भी उनकी तरह व्यभिचारी बन गया।

मैंने फिर भी कोई प्रश्न नहीं किया।

नवेन्दु बाबू ही बोले, विश्वास कीजिए कविता देवी, उन दोनों की गन्दगी ने मुझे इतना गन्दा बना दिया है। अब तो मैं इतना बुरा बन गया हूँ कि अच्छा बनना भी नहीं चाहता। शायद अब मेरे लिए अच्छा बनना भी सम्भव नहीं है।

भाई रिपोर्टर, भारत के लिए रवाना होने के दिन ओर्ली एयरपोर्ट में नवेन्दु बाबू ने मुझसे कहा था, कविता देवी, आपसे ही मैं पहली बार हारा। फिर भी मेरे मन में कोई असन्तोष नहीं है। मैं प्रसन्नचित्त स्वदेश लौट रहा हूँ। अब आप अपनी जरूरत के समय जब भी मुझे याद करेंगी, सचमुच बड़ी खुशी होगी।

२१

सच कहती हूँ, मैं कभी किसी पुरुष से बहुत अधिक घनिष्ठ होना नहीं चाहती। लेकिन मेरा भाग्य ही ऐसा है कि बार-बार कई पुरुषों से मुझे बहुत अधिक घनिष्ठ

नवेन्दु बाबू ने हंस कर कहा, दूसरे दिन सवेरे-सवेरे उमा ने जब बुलाया, तब रहा नहीं गया। जाना ही पड़ा।

फिर वह गंगास्नान कैसा लगा ?

नवेन्दु बाबू ने सीधे मेरी तरफ देखते हुए कहा, सचमुच वहाँ गंगा नहा कर शरीर शीतल हो गया था, लेकिन उसी के साथ उमा को देखते ही फिर सारे बदन में जलन होने लगी थी।

क्यों ?

वहाँ औरतों और मर्दों के नहाने के लिये अलग-अलग घाट नहीं थे।

अच्छा ?

हाँ।

नवेन्दु बाबू क्षण भर के लिये चुप हो गये। मानो उन्होंने हरिद्वार में गंगा-स्नान के उस दृश्य को फिर अच्छी तरह याद किया और उसके बाद कहा, भतीजे को नहलाने के बाद उमा मेरे साथ ही नहाने लगी। फिर दोनों एक साथ नहा कर किनारे पर आये।

मैंने पूछा, फिर क्या हुआ ?

गीले कपड़े में उमा को देख कर मैं चौंक पड़ा। उसके बाद उसी हालत में उसके साथ धर्मशाला तक आते-आते···

उन्होंने कपड़े क्यों नहीं बदले ?

घाट पर उतने लोगों के सामने वह कपड़ा नहीं बदलती थी। बदन पर गमछा लपेटे धर्मशाला तक आते ही···

शायद उसके बाद गंगास्नान के मामले में आप भी बड़े उत्साही हो उठे ?

सिर्फ गंगास्नान के मामले में नहीं, हर मामले में बड़ा उत्साही हो उठा।

नवेन्दु बाबू की बातों से मैंने अनुमान तो लगा लिया, फिर भी पूछा, हर मामले में कैसा ?

मुस्कराते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, उमा के भैया-भाभी के केदार-बदरीनाथ की यात्रा से लौटने के पहले ही हमारा नाटक जम गया था।

मैंने आश्चर्य से नवेन्दु बाबू की तरफ देखा तो उन्होंने कहा, इसमें आश्चर्य-चकित होने की क्या बात है ? जिस बाघ को मानव-रक्त का स्वाद मिल चुका हो, वह नये शिकार को कैसे हाथ से निकलने दे सकता है ?

लेकिन बाघिन ?

उसकी भी हालत मेरी जैसी थी।

लेकिन···

वह महिला मुस्करायी। फिर बोली, मेरी भार्या भी नौकरी करती हैं। फिर उनको ज्यादा घूमना-फिरना भी पसन्द है।

नवेन्दु बाबू ने मुस्करा कर कहा, समझ गया। इस लिए वह चौबीस घंटे आपके पास रहता है।

वह महिला फिर मुस्करायी और बोली, शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने 'पल्लीसमाज' में जिस ग्रामीण समाज का चित्र खींचा है, उसका रूप बदलने पर भी चरित्र नहीं बदला है। अब मेरी बात छोड़िए और अपनी बात कहिए।

बोलिए, क्या जानना चाहती हैं?

आप हरिद्वार में क्यों आये?

तीर्थ में क्यों आया, यह भी बताना पड़ेगा?

लेकिन आप तो तीर्थ भ्रमण में नहीं आये हैं। दिन भर अपने कमरे में बैठे-बैठे कविता पढ़ते रहते हैं।

किसी तरह थोड़ा समय बिताने के लिए यहाँ आया हूँ। लेकिन आप क्या कर रही हैं?

गंगा स्नान, खाना पकाना, दिवानिद्रा और गंगारती…

आप रोज गंगा नहाती हैं?

जी हाँ। आपने अभी तक यहाँ गंगा स्नान नहीं किया?

नहीं। हरिद्वार आने पर क्या गंगास्नान करना जरूरी है?

ऐसी बात नहीं है। लेकिन यहाँ गंगा नहाने का आनन्द ही कुछ और है।

अच्छा?

जी हाँ।

फिर उस महिला ने मुस्करा कर कहा, कल सबेरे आपको गंगा नहाने ले जाऊँगी। देखेंगे, कितना आनन्द आता है!

नवेन्दु बाबू हँसे, लेकिन कुछ नहीं बोले।

उस महिला ने फिर कहा, इस धर्मशाला से गंगा इतना पास है कि मेरा मन करता है, जब भी मौका मिले गंगा नहा आऊँ।

क्या आपको गंगा नहाना इतना अच्छा लगता है?

यह बात नहीं है। लेकिन यहाँ की गंगा में नहाना सचमुच बड़ा अच्छा लगता है।

मैंने मुस्करा कर नवेन्दु बाबू से पूछा, क्या दूसरे दिन आप गंगा नहाये?

नवेन्दु बाबू ने हंस कर कहा, दूसरे दिन सवेरे-सवेरे उमा ने जब बुलाया, तब रहा नहीं गया। जाना ही पड़ा।

फिर वह गंगास्नान कैसा लगा ?

नवेन्दु बाबू ने सीधे मेरी तरफ देखते हुए कहा, सचमुच वहाँ गंगा नहा कर शरीर शीतल हो गया था, लेकिन उसी के साथ उमा को देखते ही फिर सारे बदन में जलन होने लगी थी।

क्यों ?

वहाँ औरतों और मर्दों के नहाने के लिने अलग-अलग घाट नहीं थे।

अच्छा ?

हाँ।

नवेन्दु बाबू क्षण भर के लिये चुप हो गये। मानो उन्होंने हरिद्वार में गंगा-स्नान के उस दृश्य को फिर अच्छी तरह याद किया और उसके बाद कहा, भतीजे को नहलाने के बाद उमा मेरे साथ ही नहाने लगी। फिर दोनों एक साथ नहा कर किनारे पर आये।

मैंने पूछा, फिर क्या हुआ ?

गीले कपड़े में उमा को देख कर मैं चौंक पड़ा। उसके बाद उसी हालत में उसके साथ धर्मशाला तक आते-आते···

उन्होंने कपड़े क्यों नहीं बदले ?

घाट पर उतने लोगों के सामने वह कपड़ा नहीं बदलती थी। बदन पर गमछा लपेटे धर्मशाला तक आते ही···

शायद उसके बाद गंगास्नान के मामले में आप भी बड़े उत्साही हो उठे ?

सिर्फ गंगास्नान के मामले में नहीं, हर मामले में बड़ा उत्साही हो उठा।

नवेन्दु बाबू की बातों से मैंने अनुमान तो लगा लिया, फिर भी पूछा, हर मामले में कैसा ?

मुस्कराते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, उमा के भैया-भाभी के केदार-बदरीनाथ की यात्रा से लौटने के पहले ही हमारा नाटक जम गया था।

मैंने आश्चर्य से नवेन्दु बाबू की तरफ देखा तो उन्होंने कहा, इसमें आश्चर्य-चकित होने की क्या बात है ? जिस बाघ को मानव-रक्त का स्वाद मिल चुका हो, वह नये शिकार को कैसे हाथ से निकलने दे सकता है ?

लेकिन बाघिन ?

उसकी भी हालत मेरी जैसी थी।

लेकिन···

नवेन्दु बाबू ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा, आपने बाढ़ तो नहीं देखी। बाढ़ जब आती है, तब अपने साथ सब कुछ बहा ले जाती है। वही हाल हम दोनों का था। कैसे क्या हुआ, पता भी न चला।

इतना कहने के बाद नवेन्दु बाबू चुप हो गये। फिर थोड़ी देर वे चुप रहे। कुछ भी नहीं बोले। लेकिन मुझसे न रहा गया तो पूछा, आप चुप क्यों हो गये। उसके बाद क्या हुआ?

नवेन्दु बाबू ने जरा जोर से लम्बी साँस छोड़ी और कहा, वह बड़ा लम्बा इतिहास है। बस, इतना सुन लें कि मैंने उमा से सचमुच प्यार किया था। मैंने चाहा था कि वह फिर से जिन्दा हो जाय, लेकिन उसने किसी तरह विवाह नहीं करना चाहा।

क्यों?

विधवा होने के बाद फिर विवाह करने के लिए जिस मानसिक बल की जरूरत पड़ती है, वह उसमें नहीं थी।

फिर मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। चुपचाप बैठी रही।

नवेन्दु बाबू बोले, उमा विवाह के प्रस्ताव पर राजी न हुई तो मुझे लगा कि यह तो दूसरा शिप्रारानी है! एक-एक कर दो बार आघात झेलने के बाद मैं भी उनकी तरह व्यभिचारी बन गया।

मैंने फिर भी कोई प्रश्न नहीं किया।

नवेन्दु बाबू ही बोले, विश्वास कीजिए कविता देवी, उन दोनों की गन्दगी ने मुझे इतना गन्दा बना दिया है। अब तो मैं इतना बुरा बन गया हूँ कि अच्छा बनना भी नहीं चाहता। शायद अब मेरे लिए अच्छा बनना भी सम्भव नहीं है।

भाई रिपोर्टर, भारत के लिए रवाना होने के दिन ओर्ली एयरपोर्ट में नवेन्दु बाबू ने मुझसे कहा था, कविता देवी, आपसे ही मैं पहली बार हारा। फिर भी मेरे मन में कोई असन्तोष नहीं है। मैं प्रसन्नचित्त स्वदेश लौट रहा हूँ। अब आप अपनी जरूरत के समय जब भी मुझे याद करेंगी, सचमुच बड़ी खुशी होगी।

२१

सच कहती हूँ, मैं कभी किसी पुरुष से बहुत अधिक घनिष्ठ होना नहीं चाहती। लेकिन मेरा भाग्य ही ऐसा है कि बार-बार कई पुरुषों से मुझे बहुत अधिक घनिष्ठ

नवेन्दु बाबू ने हंस कर कहा, दूसरे दिन सवेरे-सवेरे उमा ने जब बुलाया, तब रहा नहीं गया। जाना ही पड़ा।

फिर वह गंगास्नान कैसा लगा ?

नवेन्दु बाबू ने सीधे मेरी तरफ देखते हुए कहा, सचमुच वहाँ गंगा नहा कर शरीर शीतल हो गया था, लेकिन उसी के साथ उमा को देखते ही फिर सारे बदन में जलन होने लगी थी।

क्यों ?

वहाँ औरतों और मर्दों के नहाने के लिये अलग-अलग घाट नहीं थे।

अच्छा ?

हाँ।

नवेन्दु बाबू क्षण भर के लिये चुप हो गये। मानो उन्होंने हरिद्वार में गंगा-स्नान के उस दृश्य को फिर अच्छी तरह याद किया और उसके बाद कहा, भतीजे को नहलाने के बाद उमा मेरे साथ ही नहाने लगी। फिर दोनों एक साथ नहा कर किनारे पर आये।

मैंने पूछा, फिर क्या हुआ ?

गीले कपड़े में उमा को देख कर मैं चौंक पड़ा। उसके बाद उसी हालत में उसके साथ धर्मशाला तक आते-आते…

उन्होंने कपड़े क्यों नहीं बदले ?

घाट पर उतने लोगों के सामने वह कपड़ा नहीं बदलती थी। बदन पर गमछा लपेटे धर्मशाला तक आते ही…

शायद उसके बाद गंगास्नान के मामले में आप भी बड़े उत्साही हो उठे ?

सिर्फ गंगास्नान के मामले में नहीं, हर मामले में बड़ा उत्साही हो उठा।

नवेन्दु बाबू की बातों से मैंने अनुमान तो लगा लिया, फिर भी पूछा, हर मामले में कैसा ?

मुस्कराते हुए नवेन्दु बाबू ने कहा, उमा के भैया-भाभी के केदार-बदरीनाथ की यात्रा से लौटने के पहले ही हमारा नाटक जम गया था।

मैंने आश्चर्य से नवेन्दु बाबू की तरफ देखा तो उन्होंने कहा, इसमें आश्चर्य-चकित होने की क्या बात है ? जिस बाघ को मानव-रक्त का स्वाद मिल चुका हो, वह नये शिकार को कैसे हाथ से निकलने दे सकता है ?

लेकिन बाघिन ?

उसकी भी हालत मेरी जैसी थी।

लेकिन…

नवेन्दु बाबू ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा, आपने बाढ़ तो नहीं देखी। बाढ़ जब आती है, तब अपने साथ सब कुछ बहा ले जाती है। वही हाल हम दोनों का था। कैसे क्या हुआ, पता भी न चला।

इतना कहने के बाद नवेन्दु बाबू चुप हो गये। फिर थोड़ी देर वे चुप रहे। कुछ भी नहीं बोले। लेकिन मुझसे न रहा गया तो पूछा, आप चुप क्यों हो गये। उसके बाद क्या हुआ ?

नवेन्दु बाबू ने जरा जोर से लम्बी साँस छोड़ी और कहा, वह बड़ा लम्बा इतिहास है। बस, इतना सुन लें कि मैंने उमा से सचमुच प्यार किया था। मैंने चाहा था कि वह फिर से जिन्दा हो जाय, लेकिन उसने किसी तरह विवाह नहीं करना चाहा।

क्यों ?

विधवा होने के बाद फिर विवाह करने के लिए जिस मानसिक बल की जरूरत पड़ती है, वह उसमें नहीं थी।

फिर मैंने कोई प्रश्न नहीं किया। चुपचाप बैठी रही।

नवेन्दु बाबू बोले, उमा विवाह के प्रस्ताव पर राजी न हुई तो मुझे लगा कि यह तो दूसरी शिप्रारानी है। एक-एक कर दो बार आघात झेलने के बाद मैं भी उनकी तरह व्यभिचारी बन गया।

मैंने फिर भी कोई प्रश्न नहीं किया।

नवेन्दु बाबू ही बोले, विश्वास कीजिए कविता देवी, उन दोनों की गन्दगी ने मुझे इतना गन्दा बना दिया है। अब तो मैं इतना बुरा बन गया हूँ कि अच्छा बनना भी नहीं चाहता। शायद अब मेरे लिए अच्छा बनना भी सम्भव नहीं है।

भाई रिपोर्टर, भारत के लिए रवाना होने के दिन ओर्ली एयरपोर्ट में नवेन्दु बाबू ने मुझसे कहा था, कविता देवी, आपसे ही मैं पहली बार हारा। फिर भी मेरे मन में कोई असन्तोष नहीं है। मैं प्रसन्नचित्त स्वदेश लौट रहा हूँ। अब आप अपनी जरूरत के समय जब भी मुझे याद करेंगी, सचमुच बड़ी खुशी होगी।

२१

सच कहती हूँ, मैं कभी किसी पुरुष से बहुत अधिक घनिष्ठ होना नहीं चाहती। लेकिन मेरा भाग्य ही ऐसा है कि बार-बार कई पुरुषों से मुझे बहुत अधिक घनिष्ठ

होना पड़ा । भाई रिपोर्टर, तुम जैसे दो-चार लोगों की बात अलग है । तुम जैसा अगर एक भी मिलता तो मैं धन्य हो जाती, लेकिन मेरे भाग्य में शायद वैसा नहीं लिखा है ।

कुछ भी हो, नवेन्दु बाबू के चले जाने के बाद सचमुच मेरा मन उदास हो गया । इस संसार में सिर्फ मर्द ही औरतों को नुकसान नहीं पहुँचाते, बल्कि अनेक औरतें भी मर्दों का सर्वनाश करती हैं । नवेन्दु बाबू के प्रति मेरे मन में सहानुभूति जाग उठी । शुक्रवार आया तो सोचा कि और कई दिन उनको रोक रखती तो अच्छा करती ।

फिर नवेन्दु बाबू का पत्र आया । पत्र पाते ही उसका उत्तर दिया । फिर उनका पत्र आया और मेरा उत्तर भी गया । फिर हर हफ्ते उनका पत्र आने लगा और मैं भी बराबर उसका उत्तर देने लगी । इस तरह कई महीने मजे में बीते ।

उस दिन शनिवार था । नींद खुलने पर भी मैं बिस्तर पर लेटी थी । तभी अचानक टेलीफोन की घंटी बजी ।

हैलो !

नमस्कार !

किसी सज्जन को साफ बंगला कहते सुन कर मैं चौंकी और उठ कर बैठ गयी ।

फिर मैं नमस्कार कहती कि उसके पहले ही उस सज्जन ने कहा, मैं बादल बनर्जी हूँ । एक दिन के लिए पेरिस आया हूँ, कल ही न्यूयार्क चला जाऊँगा ।

लेकिन आपको पहचान नहीं पा रही हूँ ।

जी हाँ । आप मुझे कैसे पहचानेंगी ? नवेन्दु बाबू मेरे भैया के दोस्त हैं । उन्होंने आपके लिए एक पैकेट भेजा है ।

लेकिन उन्होंने इसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा ।

लगता है, मैं अचानक आने लगा था और उन्हें आपको पत्र लिखने का मौका ही नहीं मिला ।

उस दिन मेरा कोई एनगेजमेण्ट नहीं था । इस लिये थोड़ी देर गपशप करने की इच्छा हुई तो मैंने उनको लंच पर बुला लिया । पूछा, आप अकेले आ पायेंगे न ? आपत्ति न हो तो मैं जा कर आपको ला सकती हूँ ।

जी नहीं । आपको तकलीफ करने की जरूरत नहीं है । मैं पहुंच जाऊँगा ।

ठीक समय पर मिस्टर बनर्जी आ गये । बड़े सुदर्शन पुरुष थे । उम्र मेरी जितनी ही थी । दिल्ली के सेंट स्टीफेन्स से बी० ए० पास करने के बाद कलकत्ते से एम० ए० किया था । इतिहास के एम० ए० थे । उसके बाद परीक्षा दे कर

इंडियन फॉरेन सर्विस में आये। सिंगापुर से स्थानान्तरित हो कर न्यूयार्क में हमारे यू० यन० मिशन में जा रहे थे।

मिस्टर बनर्जी ने नवेन्दु बाबू का पैकेट देने के बाद कोट की जेब से एक कैसेट निकाल कर मेरे हाथ में दिया और कहा, इसमें मेरे प्रिय गायक देवव्रत विश्वास के गाने हैं। सुनियेगा।

अवश्य सुनूंगी। वे मेरे भी प्रिय गायक हैं।

मिस्टर बनर्जी ने हंस कर कहा, पंकज मल्लिक और देवव्रत विश्वास के गानों के कैसेट के अलावा मैं कभी कोई चीज किसी को प्रेजेण्ट नहीं करता।

अच्छा ?

जी हाँ।

यह तो बड़ा अच्छा है।

लंच से पहले मैंने मिस्टर बनर्जी से पूछा, मे आइ आफर यू ए ड्रिंक ?

धन्यवाद ! उसकी कोई जरूरत नहीं है।

आप ड्रिंक तो करते होंगे ?

डिप्लोमैटिक पार्टी में एक-आध पेग लेना ही पड़ता है। उसके बाद कभी नहीं लेता।

अचानक मेरे मुंह से निकला, क्यों ?

मेरी पत्नी ऋतु पसन्द नहीं करती।

फिर मिस्टर बनर्जी ने हंस कर कहा, उससे बिना पूछे एक दिन भी ड्रिंक कर लेने पर वह एक महीने तक मुझे अपने पास लेटने नहीं देती।

मिस्टर बनर्जी की बात सुन कर मैं हंस पड़ी।

मेरी हंसी रुकने पर मिस्टर बनर्जी ने कहा, विवाह के बाद किसी स्त्री के जीवन में पति के अलावा और है भी क्या ? वही पति अगर उसे दुखी करता रहे तो वह जिन्दा कैसे रह सकती है ?

मिस्टर बनर्जी की बात सुन कर मैं मुग्ध हो गयी। शुरू में मन ही मन, फिर कहना ही पड़ा, आप जैसे पुरुषों की संख्या अधिक होती तो सचमुच यह संसार बहुत सुन्दर और शांतिमय होता।

बातचीत और खाना-पीना करते-करते हम दोनों को ही पता चला कि एक दूसरे के मित्र हो गये हैं।

पूछा, ऋतु कब तक आपके पास आ जायेगी ?

महीने भर में।

मेरे यहाँ दो-चार दिन रुके बिना ऋतु सीधे न्यूयार्क चली जायेगी तो आपसे मेरा कोई सम्पर्क नहीं रहेगा।

ऋतु आपके पास जरूर कई दिन रुकेगी, लेकिन आपको भी एक वचन देना पड़ेगा।

आप तो अच्छे व्यापारी लगते हैं कि एक हाथ से देंगे और दूसरे हाथ से लेंगे।

ऐसी बात नहीं है, लेकिन···

पहले यह तो बताइये कि ऋतु यहाँ आयेगी, फिर आपकी बात सुनूँगी।

ऋतु जरूर आयेगी।

अब बताइये, आपका क्या कहना है?

आपको भी न्यूयार्क आना पड़ेगा।

सच?

फिर क्या आपसे मजाक कर रहा हूँ?

ठीक है। तुम दोनों के न्यूयार्क रहते-रहते मैं जरूर वहाँ जाऊँगी।

भाई रिपोर्टर, मनुष्य के जीवन-पथ पर कब कौन-सा मोड़ आयेगा, यह पहले से कोई नहीं बता सकता। नवेन्दु बाबू का भेजा पैकेट देने आ कर बादल बनर्जी मेरा मित्र और भाई बन गया। न्यूयार्क जाते समय ऋतु यहाँ आयी थी। तय था कि वह तीन दिन यहाँ रुकेगी, लेकिन सात दिन बाद न्यूयार्क रवाना होते समय ओर्ली एयरपोर्ट में उसने मुझसे कहा था, लग रहा है कि और कुछ दिन रुक जाती तो अच्छा रहता।

मैंने फीकी मुस्कान से साथ कहा था, मुझे तो लगता है कि तुम न आती तो अच्छा होता।

मुस्कराना था, इस लिए ऋतु मुस्करायी। उसके बाद विदा लेने से ठीक पहले दो बूँद आँसू गिरा कर उसने कहा, ज्यादा देर मत करना। जल्दी आ जाना।

सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, स्वप्न में भी कभी नहीं सोचा था कि मैं अमरीका जाऊँगी। तुम तो जानते हो कि लन्दन और पेरिस की हर सड़क के मोड़ पर अमरीका घूम आने के लिए विज्ञापन लगा रहता है। मैं भूल कर भी कभी वैसे विज्ञापन की तरफ नहीं देखती थी। उसकी जरूरत भी नहीं थी। गुदड़ी में सो कर महल का सपना देखने में कोई मजा नहीं था।

बादल और ऋतु से परिचय और घनिष्ठता होने के बाद से सड़कों पर और पत्र-पत्रिकाओं में सिर्फ अमरीका-भ्रमण के विज्ञापन ही मुझे दिखाई पड़ने लगे। उसके बाद उन दोनों के कई पत्र आये तो मैं सचमुच आफिस से छुट्टी ले कर

ओर्ली एयरपोर्ट से एयर फ्रान्स के विमान में बैठ कर न्यूयार्क रवाना हो गयी !

भाग्य सचमुच बड़ा विचित्र होता है। डॉक्टर सरकार का पत्र ले कर नवेन्दु बाबू आये थे। फिर नवेन्दु बाबू का भेजा सामान देने के लिए आये बादल बनर्जी। बादल घर का नाम है। असली नाम है मिस्टर एस० के० बनर्जी आई० एफ० एस०। राष्ट्र संघ के मुख्यालय में भारतीय मिशन के सेकेण्ड सेक्रेटरी हैं।

बादल के साथ ऋतु भी आई थी। जॉन एफ० केनेडी एयरपोर्ट में उन दोनो ने मेरी ऐसी आवभगत की कि मुझे लगा, वे मेरे बहुत दिनों के परिचित, बड़े ही घनिष्ठ और एकदम अपने हैं।

उसी पहले दिन रात को डिनर खाते समय बादल ने कहा, कविता जी, शनिवार को ही हम निकल पड़ेंगे।

कहाँ ?

कहाँ क्या ? घूमने।

नही। मैं कहीं नहीं जाऊँगी।

क्यों ?

मैं तो अमरीका देखने नही, तुम लोगो को देखने आयी हूँ। तुम लोगो से गपशप करने में ही कई दिन आराम से कट जायेंगे।

बादल ने मुझसे फिर पूछा, सचमुच कहीं नहीं जाना चाहती ?

मैंने हँस कर कहा, बचपन में सोचती थी कि ढाका का सदर घाट और रमना देख कर ही मजे में यह जिन्दगी कट जायेगी। फिर जब कलकत्ते आयी थी, तब सोचा था कि यहीं जिन्दगी भर रहूँगी।

बादल ने मेरे मुँह की बात लोक कर कहा, उसके बाद कलकत्ते से लन्दन आ गयी और लन्दन से पैरिस। इस लिए अब नये-नये देश देखने का शौक नही है, यही न ?

मैंने कहा, पता नही, भगवान मुझे और कहाँ-कहाँ ले जायेंगे। इस लिए अब अपनी तरफ से प्रयास कर घूमना नही चाहती। कई दिन तुम दोनों को परेशान करके बिता दूँगी।

फिर ऋतु ने दबी मुस्कान के साथ बादल से कहा, ठीक है, कविता दी हमें कई दिन परेशान किया करें। आप किसी तरह की आपत्ति न करें।

बादल ने लम्बी साँस छोड़ कर कहा, ठीक है। नही करूँगा।

फिर भाई रिपोर्टर, मजे में दिन बीतने लगे थे। गपशप, हँसी-मजाक और आधी रात को टाइम्स स्क्वायर या ब्राडवे में घूमने-फिरने में पहला हफ्ता मजे में बीत गया। दूसरे हफ्ते से दावत में जाना शुरू हुआ।

उसके बाद ?

कई महीने सचमुच बड़े आनन्द से बीते। मेरा नया कार्यक्षेत्र यूनाइटेड नेशन्स हेडक्वार्टर्स बना था। वह तो संसार के सभी देशों के लोगों का मिलन-तीर्थ था। आनन्द और उत्तेजना के बीच वहाँ मेरा पूरा दिन बीत जाता था। विश्व भर के आदरणीय नेताओं को कभी पास से तो कभी दूर से देखती थी। अपने सामने ऐसी बहुत सी घटनाएँ घटते देखी, जिनको संसार के इतिहास में स्थान मिला है। इसके अलावा ऋतु और बादल तो थे ही।

सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, न्यूयार्क आने के बाद कुछ समय तो इतने आनन्द से बीता कि लिख कर तुम्हें समझा नहीं सकती। इस बीच मिस्टर मुखोपाध्याय से मेरी अच्छी दोस्ती हो गयी। खैर, यह तो स्वाभाविक था। मिस्टर मुखोपाध्याय के अलावा और कई लोगों से मेरी मित्रता हुई। जान-पहचान वालों की तादाद भी बढ़ती गयी।

उसके बाद अचानक एक दिन बादल फर्स्ट सेक्रेटरी बन कर रावलपिंडी चले गये। जिस जॉन एफ० केनेडी एयरपोर्ट में बादल और ऋतु ने एक दिन मेरा स्वागत किया था, उसी एयरपोर्ट में मैंने आँसू बहाते हुए उन दोनों को विदा किया।

एयरपोर्ट से अपने एपार्टमेंट में लौट कर मैं बिस्तर पर पड़ी-पड़ी आँसू बहाने और यही सोचने लगी कि जब तक मेरे मित्रों को दूर नहीं हटा लेते, भगवान को मानो चैन नहीं मिलता। पता नहीं, मैं और भी क्या-क्या सोचने और रोने लगी थी। मेरे रोने और सोचने का क्रम मानो टूटने का नाम नहीं ले रहा था। तभी अचानक मिस्टर मुखोपाध्याय आ गये।

मैंने आश्चर्य से कहा, आप ? इस समय ?

मिस्टर मुखोपाध्याय ने मुस्करा कर कहा, आज आपके मन की हालत के बारे में सोच कर चला आया।

अच्छा किया है।

क्यों ऐसा कह रही हैं ?

आज अगर अकेले रहना पड़ता तो पागल हो जाती।

फिर मिस्टर मुखोपाध्याय ने बिना किसी भूमिका के कहा, गाड गेट अप ! चलिए, बाहर निकला जाय।

कहाँ ?

मेरे यहाँ।

उसके बाद मैं खुशी-खुशी मिस्टर मुखोपाध्याय के साथ उनके घर

वहाँ उन्होंने मुझे ह्विस्की पीने को दी तो मैंने कहा, मुझे तो पीने की आदत नहीं है।

मिस्टर मुखोपाध्याय ने कहा, आज किसी तरह की आपत्ति न करें। पीने पर देखेंगी कि अच्छा लग रहा है।

मैं मुस्करायी।

गिलास उठाकर मिस्टर मुखोपाध्याय ने कहा, फॉर योर हैपिनेस।

मैंने भी साथ ही साथ गिलास ले कर कहा, फॉर योर हैपिनेस ऐज वेल।

सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, उस दिन वह समय बड़े मजे में बीता। दो-तीन पेग ह्विस्की ली और डिनर भी खाया। फिर मिस्टर मुखोपाध्याय ने ही मुझे मेरे एपार्टमेंट में पहुँचा दिया। उसके बाद वे नीचे से ही जाने लगे, लेकिन मैंने उनको नहीं जाने दिया। मैंने कहा, नहीं मुखर्जी दा, ऐसा नहीं हो सकता। यू मस्ट हैव ए ड्रिंक।

ड्रिंक !

यस। वन फॉर द रोड।

मैं कार से उतरने लगी तो मेरे दोनों पाँव लड़खड़ा गये। मिस्टर मुखोपाध्याय ने झटपट मेरा एक हाथ पकड़ कर मुझे संभाल लिया। एलिवेटर से ऊपर जाने के बाद में जब अपने एपार्टमेण्ट में घुसने लगी, तब भी वे मुझे आहिस्ते से सँभालते रहे।

उसके बाद मैंने मिस्टर मुखोपाध्याय को ड्रिंक आफर किया तो उन्होंने कहा, आपको भी साथ देना पड़ेगा।

जी नहीं। अब मुझसे आग्रह न करें। अब एक पेग पीने पर मैं उठ भी न पाऊँगी।

लेकिन क्यों डर रही हैं ? अब तो आप अपने एपार्टमेण्ट में आ गयी हैं।

वह तो आ गयी हूँ, लेकिन···

अब कोई लेकिन नहीं। मैं तो अकेले ड्रिंक नहीं करूँगा। जस्ट ए पेग ओनली। फिर आप सोने चली जायेंगी और मैं भी चला जाऊँगा।

फिर मैं क्या करती ? ह्विस्की का एक पेग लेना ही पड़ा। मिस्टर मुखोपाध्याय ने किसी तरह अशालीन आचरण नहीं किया। विदा लेते समय उन्होंने सिर्फ मेरी ठुड्डी को चूमा। कृतज्ञता से भर कर मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।

बादल और ऋतु के न रहने से मिस्टर मुखोपाध्याय मेरे एकमात्र मित्र बन गये। दोनों एक साथ यूनाइटेड नेशन्स में काम करते रहे। रोज न सही, लेकिन अक्सर कैफेटेरिया में उनसे मुलाकात होती रही। वहीं हम एक साथ कॉफी पीते

और गपशप करते। उनकी सहायता से मेरी छोटी-मोटी समस्या का समाधान भी होता रहा। वीक-एण्ड पर वे मेरे एपार्टमेण्ट में आने लगे। फिर खाना-पीना होता। कभी-कभी मैं भी उनके घर दिन भर बिता आती।

इस तरह छः-सात महीने मजे में बीते। उसके बाद मिस्टर मुखोपाध्याय के प्रयास और प्रयत्न से मैं यू० एन० स्पेशल कमेटी में आ गयी। वेतन भी बहुत बढ़ गया। उसी के साथ सम्मान और प्रभाव में भी वृद्धि हुई। उसके बाद उम्र [redacted] व्यवधान भूल कर [redacted]म सचमुच बड़े घनिष्ठ मित्र बन गये।

भाई रिपोर्टर, उसके बाद का इतिहास सुनना चाहते हो? कुछ भी हो, तुम मेरे प्यारे भाई हो और मैं तुम्हारी आदरणीया दीदी हूँ। इस लिए सभी बातें तो लिख नहीं पाऊँगी। शायद उसकी आवश्यकता भी नहीं है। सिर्फ इतना जान लो कि मिस्टर मुखोपाध्याय ने तिल-तिल कर मुझे ग्रस लिया। अपनी वासना की आग में मुझे जला-जला कर कहना चाहिए कि सर्वनाश की स्थिति में पहुँचाने के बाद वे अचानक मेरे जीवन से विदा हो गये। क्रोध और दुख के मारे मैं गूँगी बन गयी। आत्महत्या करना चाह कर भी पीछे हट आयी। सोचा कि उस पशु की पशुता के कारण [redacted] संसार से चल देना किसी तरह तर्कसंगत नहीं है। उसके पीछे कोई सार्थकता भी नहीं है।

पुरुषों के प्रति तीव्र विद्वेष और घृणा लिए मैंने फिर नये सिरे से जीना चाहा। लेकिन मेरे रिपोर्टर भाई, अब भी समाज पर पुरुषों का शासन है। इस लिए पुरुषों से दूर रहना भी अधिक दिन सम्भव नहीं है। इच्छा से हो या अनिच्छा से, पुरुषों के पास स्त्रियों को आना ही पड़ता है। बिना गये कोई उपाय नहीं है। मेरी तरह अकेली और नौकरी करने वाली स्त्री के लिए तो पुरुषों से बच कर चलना नितान्त असम्भव है।

भाई रिपोर्टर, तुम्हारे आगे मैं निस्संकोच स्वीकार करूँगी कि मेरे जीवन में और भी अनेक पुरुष आये। एक-दो स्वनाम धन्य भारतीय राजनयिकों ने मेरे रूप-यौवन के आगे इस प्रकार आत्मसमर्पण किया कि सोचने पर भी बड़ा आश्चर्य होता है। सिर्फ तुम्हें लिख रही हूँ और तुम्हारे पास अकपट स्वीकार कर रही हूँ कि कभी-कभी मेरा शरीर और उसके साथ मन भी इतना विद्रोही हो उठा कि मैंने स्वेच्छा से नये परिचित मित्रों के हाथों अपने को सौंप दिया।

एक पुरानी बात याद पड़ रही है। बहुत दिन पहले माँ की एक दूर रिश्ते की मौसी ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखने के बाद मेरे बारे में कहा था, इस हरामजादी के भाग्य में बहुत दुख है।

वहाँ उन्होंने मुझे ह्विस्की पीने को दी तो मैंने कहा, मुझे तो पीने की आदत नहीं है।

मिस्टर मुखोपाध्याय ने कहा, आज किसी तरह की आपत्ति न करें। पीने पर देखेंगी कि अच्छा लग रहा है।

मैं मुस्करायी।

गिलास उठाकर मिस्टर मुखोपाध्याय ने कहा, फॉर योर हैपिनेस।

मैंने भी साथ ही साथ गिलास ले कर कहा, फॉर योर हैपिनेस ऐज वेल।

सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, उस दिन वह समय बड़े मजे में बीता। दो-तीन पेग ह्विस्की ली और डिनर भी खाया। फिर मिस्टर मुखोपाध्याय ने ही मुझे मेरे एपार्टमेंट में पहुँचा दिया। उसके बाद वे नीचे से ही जाने लगे, लेकिन मैंने उनको नहीं जाने दिया। मैंने कहा, नहीं मुखर्जी दा, ऐसा नहीं हो सकता। यू मस्ट हैव ए ड्रिंक।

ड्रिंक !

यस। वन फॉर द रोड।

मैं कार से उतरने लगी तो मेरे दोनों पाँव लड़खड़ा गये। मिस्टर मुखोपाध्याय ने झटपट मेरा एक हाथ पकड़ कर मुझे सँभाल लिया। एलिवेटर से ऊपर जाने के बाद मैं जब अपने एपार्टमेण्ट में घुसने लगी, तब भी वे मुझे आहिस्ते से सँभालते रहे।

उसके बाद मैंने मिस्टर मुखोपाध्याय को ड्रिंक आफर किया तो उन्होंने कहा, आपको भी साथ देना पड़ेगा।

जी नहीं। अब मुझसे आग्रह न करें। अब एक पेग पीने पर मैं उठ भी न पाऊँगी।

लेकिन क्यों डर रही हैं ? अब तो आप अपने एपार्टमेण्ट में आ गयी हैं।

वह तो आ गयी हूँ, लेकिन…

अब कोई लेकिन नहीं। मैं तो अकेले ड्रिंक नहीं करूँगा। जस्ट ए पेग ओनली। फिर आप सोने चली जायेंगी और मैं भी चला जाऊँगा।

फिर मैं क्या करती ? ह्विस्की का एक पेग लेना ही पड़ा। मिस्टर मुखोपाध्याय ने किसी तरह अशालीन आचरण नहीं किया। विदा लेते समय उन्होंने सिर्फ मेरी ठुड्डी को चूमा। कृतज्ञता से भर कर मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।

बादल और ऋतु के न रहने से मिस्टर मुखोपाध्याय मेरे एकमात्र मित्र बन गये। दोनों एक साथ यूनाइटेड नेशन्स में काम करते रहे। रोज न सही, लेकिन अक्सर कैफेटेरिया में उनसे मुलाकात होती रही। वहीं हम एक साथ कॉफी पीते

और गपशप करते। उनकी सहायता से मेरी छोटी-मोटी समस्या का समाधान भी होता रहा। वीक-एण्ड पर वे मेरे एपार्टमेण्ट में आने लगे। फिर खाना-पीना होता। कभी-कभी मैं भी उनके घर दिन भर बिता आती।

इस तरह छः-सात महीने मजे में बीते। उसके बाद मिस्टर मुखोपाध्याय के प्रयास और प्रयत्न से मैं यू० एन० स्पेशल कमेटी में आ गयी। वेतन भी बहुत बढ़ गया। उसी के साथ सम्मान और प्रभाव में भी वृद्धि हुई। उसके बाद उम्र का व्यवधान भूल कर [redacted] सचमुच बड़े घनिष्ठ मित्र बन गये।

भाई रिपोर्टर, उसके बाद का इतिहास सुनना चाहते हो? कुछ भी हो, तुम मेरे प्यारे भाई हो और मैं तुम्हारी आदरणीया दीदी हूँ। इस लिए सभी बातें तो लिख नहीं पाऊँगी। शायद उसकी आवश्यकता भी नहीं है। सिर्फ इतना जान लो कि मिस्टर मुखोपाध्याय ने तिल-तिल कर मुझे ग्रस लिया। अपनी वासना की आग में मुझे जला-जला कर कहना चाहिए कि सर्वनाश की स्थिति में पहुँचाने के बाद वे अचानक मेरे जीवन से विदा हो गये। क्रोध और दुख के मारे मैं गूँगी बन गयी। आत्महत्या करना चाह कर भी पीछे हट आयी। सोचा कि उस पशु की पशुता के कारण इस संसार से चल देना किसी तरह तर्कसंगत नहीं है। उसके पीछे कोई सार्थकता भी नहीं है।

पुरुषों के प्रति तीव्र विद्वेष और घृणा लिए मैंने फिर नये सिरे से जीना चाहा। लेकिन मेरे रिपोर्टर भाई, अब भी समाज पर पुरुषों का शासन है। इस लिए पुरुषों से दूर रहना भी अधिक दिन सम्भव नहीं है। इच्छा से हो या अनिच्छा से, पुरुषों के पास स्त्रियों को आना ही पड़ता है। बिना गये कोई उपाय नहीं है। मेरी तरह अकेली और नौकरी करने वाली स्त्री के लिए तो पुरुषों से बच कर चलना नितान्त असम्भव है।

भाई रिपोर्टर, तुम्हारे आगे मैं निस्संकोच स्वीकार करूँगी कि मेरे जीवन में और भी अनेक पुरुष आये। एक-दो स्वनाम धन्य भारतीय राजनयिकों ने मेरे रूप-यौवन के आगे इस प्रकार आत्मसमर्पण किया कि सोचने पर भी बड़ा आश्चर्य होता है। सिर्फ तुम्हें लिख रही हूँ और तुम्हारे पास अकपट स्वीकार कर रही हूँ कि कभी-कभी मेरा शरीर और उसके साथ मन भी इतना विद्रोही हो उठा कि मैंने स्वेच्छा से नये परिचित मित्रों के हाथों अपने को सौंप दिया।

एक पुरानी बात याद पड़ रही है। बहुत दिन पहले माँ की एक दूर रिश्ते की मौसी ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखने के बाद मेरे बारे में कहा था, इस हरामजादी के भाग्य में बहुत दुख है।

मैंने तुरन्त उस नानी से पूछा था, आप मेरे बारे में क्यों ऐसा कह रही हैं ?

सुन हरामजादी, तुझे जैसा रूप मिला है और जैसा सुन्दर शरीर, उससे लगता है कि मर्द लोग तुझे चैन से नहीं रहने देंगे।

बेकार की बात न करें।

अरी मुँहझौंसी, किसी लड़की को ऐसा लुभावना रूप और ऐसा भरा-पूरा बदन मिलना कितना बड़ा अभिशाप है, यह तू बाद में समझ पायेगी।

उस दिन उस नानी की बात पर तो मैंने हँस दिया था, लेकिन बाद में रोम-रोम से उसकी सच्चाई का अनुभव किया था कि स्त्रियों के लिए सुन्दरता सच-मुच अभिशाप है।

कई वर्ष पहले चाचा जी के साथ जो खेल खेलना शुरू किया था, बाद में अनेक पुरुषों के साथ वह खेल खेला। अनेक ने मुझे अपना शिकार बनाया तो मैंने भी किसी-किसी को अपना शिकार बना कर अपने मन की आग और बदन की जलन बुझायी। लेकिन सच कहती हूँ भाई रिपोर्टर, अब अच्छा नहीं लगता। अब मेरे शरीर और मन में नयी जलन पैदा होने लगी है। मैं नया सपना देखने लगी हूँ। मेरे मन में नयी माँग पैदा होने लगी है। अब मैं अपने शरीर को किसी कामना-जर्जर हिंसक पशु के आगे नहीं कर सकती। मैं अपने को किसी पशु के पंजों के हवाले नहीं कर सकती। लेकिन इतने बड़े संसार में क्या एक भी ऐसा पुरुष नहीं है, जो मेरी सभी गलतियों को माफ कर मेरी माँग में सिन्दूर भर दे ? जो मुझे हर अकल्याण से बचा ले ? रात के अँधेरे में जिसकी बलिष्ठ बाँहों में और जिसके प्रशस्त वक्ष में मुझे निश्चिन्त आश्रय मिले ?

तुम्हीं बताओ भाई रिपोर्टर, इस संसार में क्या एक भी उदार महान पुरुष नहीं है, जो मुझे पत्नी की मर्यादा दे सके ? जो मुझे कम से कम एक सन्तान की माँ बनने का गौरव प्रदान कर सके ?

लगता है कि इस धरती पर ऐसा उदार और महान पुरुष नहीं है। इस संसार में परम व्यभिचारी पुरुष भी सती सावित्री की तरह पत्नी पाने की आशा करता है। इसी लिए मैं जानती हूँ कि कोई भी मेरी माँग में सिन्दूर नहीं भरेगा। बड़ी अच्छी सामग्री के रूप में मेरा उपभोग करने वाले पुरुषों की तो कमी नहीं है, लेकिन मुझे प्यार, पत्नी की मर्यादा और सन्तान की माँ बनने का गौरव देने में सभी दुविधा में पड़ते हैं और पीछे हट जाते हैं।

कभी-कभी क्या सोचती हूँ, जानते हो ? मन करता है कि चिल्ला-चिल्ला कर सबसे सब कुछ कह दूँ। मेरा सब कुछ लूटने के बाद भी जिन लोगों ने सुख-

शान्ति से घर बसाया है, उनके बच्चों से प्यार करती हूँ। किन कितनों विद्वानों और कवियों पुरुषों ने बार-बार मेरे पास आ कर मुझसे रूप और यौवन की भीख माँगी है, उनको बेनकाब कर दूँ। एक बार तो एक सम्मानित भारतीय नेता स्वयं हाँफते हुए मेरे बेडरूम स्लीपर पहन कर एयर इण्डिया के विमान से स्वदेश रवाना हो गये थे। तुमसे क्या बताऊँ भाई रिपोर्टर, मेरे पास अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों और प्रख्यात नेताओं के कितने ही अश्लील प्रेम-पत्र हैं।

अभी तक ये सब बातें किसी बाहरी व्यक्ति को नहीं बतायी और न बताऊँगी। फिर बता कर क्या मिलेगा ? मैं स्वयं सुखी नहीं हो सकी तो अन्य सुखी स्त्रियों के घर में क्यों आग लगाऊँ ? अपने मन की जलन अपने मन में छिपा कर दिन काट रही हूँ।

भाई रिपोर्टर, जब तुम्हारी वह तन्वी श्यामा शिखरदशना माँ बने, तब उसकी सन्तान को मुझे अपनी छाती से लगाने का मौका देना, ताकि मैं मातृत्व का सुखानुभव कर सकूँ। तुम दोनों मुझे उस गौरव से वंचित न करना।

तुम दोनों मेरा हार्दिक प्यार लेना।

—तुम दोनों की दीदी